ADDITIONAL®
PRACTICE

हिंदी 10

कोर्स–‘बी’

mRrjekyk

DNA education
New Delhi-110002

स्पर्श : भाग 2– गद्य खंड

पाठ–1

बड़े भाई साहब

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) लेखक का बड़े भाई साहब के प्रति विशेषता व्यक्त करता हुआ कथन व्यंग्यपूर्ण है। लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली में बड़े भाई साहब की निम्न विशेषताएँ बताईं- यद्यपि बड़े भाई साहब लेखक से पाँच वर्ष बड़े थे, परंतु पढ़ाई में केवल तीन दर्जे ही आगे थे। दोनों की पढ़ाई भी एक साथ ही प्रारंभ हुई थी लेकिन बड़े भाई साहब की शिक्षा के प्रति विचारधारा भिन्न थी। वे पढ़ाई में जल्दबाजी के पक्षधर नहीं थे। उनका उद्देश्य शिक्षा की नींव मजबूत डालना था। इसके लिए उन्हें एक कक्षा में दो साल रहने से कोई उरेज नहीं था। उनके विचार से यदि बुनियाद ही कमज़ोर होगी तो मकान टिकाऊ और मजबूत कैसे बनेगा।

उत्तर (ii) शिक्षा के विषय में बड़े भाई साहब का मत सर्वथा अनुचित और आधारहीन प्रतीत होता है। बड़े भाई साहब बड़े होने का दायित्व और आदर्श के नीचे इतने दब जाते हैं कि उन्हें अपने बड़े होने का कर्तव्य बोध तो याद रहता है परंतु अपनी विद्यार्थी सुलभ उन्मुक्तता भूल जाती है। वे विद्यार्थियों की क्रीडा, स्वतंत्रता को पुस्तकों, पाठ्यक्रमों में ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। पाठ में उसी पाठ्यक्रमों की असंगत कठिनाई की याद दिलाकर लेखक को समझाते हैं, जैसे-जैसे लेखक उन्हीं पाठ्यक्रमों को पढ़कर परीक्षा उत्तीर्ण करता जाता है बड़े भाई साहब का पाठ्यक्रम की कठिनाई संबंधी कथन असत्य प्रतीत होने लगता है।

उत्तर(iii) लेखक एक अल्हड़ और स्वतंत्र स्वभाव का मालिक था। उसका मन पढ़ाई में कम और खेलने में अधिक लगता था। उसे एक घंटे भी किताब लेकर बैठना बहुत कठिन लगता था।

बड़े भाई साहब की धारणा थी कि यदि मैं बड़ा होकर उन्मुक्त आचरण करने लगूँगा तो मेरा छोटा भाई भी मर्यादाविहीन हो जाएगा और पढ़-लिख न सकेगा। इसी सोच को मन में पालकर वह अपनी उम्र के सुनहरे खेलने-कूदने के दिन भूल गया। जिसका परिणाम उसे पाठ्यक्रम बहुत कठिन प्रतीत होने लगा और वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता। बड़े भाई साहब की नज़र में शिक्षा की नींव सुदृढ़ होने पर ही जीवन सफल और समुन्नत होगा।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) लेखक बताता है कि जब बड़े भाई साहब पढ़ाई से थक जाते थे तो अपने मस्तिष्क को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर तो कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाया करते थे। कभी-कभी वे एक ही शब्द या नाम कई-कई बार लिख डालते या एक ही वाक्य दस बार लिखते। कोई शेर सुंदर शब्दों में अनेक बार लिख डालते। कभी-कभी ऐसी शब्द रचना करते जिसका न कोई अर्थ होता न कोई सामंजस्य।

उत्तर (ii) बड़े भाई साहब अपने थके मन को आराम देने के लिए एक इबादत लिखी– 'स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक-इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था।' लेखक ने इसी को पहेली की संज्ञा देते हुए इसे समझने का बहुत प्रयास किया लेकिन इसके अर्थ निकालने में असमर्थ रहा।

उत्तर(iii) बड़े भाई साहब से उस पहेलीनुमा लेखन के विषय में पूछने का साहस नहीं हुआ क्योंकि लेखक बड़े भाई से उम्र और कक्षा दोनों में छोटे थे।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) बड़े भाई साहब अंग्रेज़ी विषय को बहुत ही कठिन विषय मानते थे। वे अंग्रेज़ी भाषा को हँसी-खेल का विषय नहीं मानते थे। जिसे आम आदमी पढ़ सके। उनके विचार से अंग्रेज़ी भाषा को पढ़ने के लिए रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं अर्थात अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। उनके मत से बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख सकते। बोलने की बात ही अलग है।

उत्तर (ii) यथार्थ, बड़े भाई साहब आज के अभिभावक के सच्चे प्रतिनिधि हैं। प्रस्तुत पाठ में बड़े भाई साहब ने अपने विद्यार्थी होने के कर्तव्य को पूर्ण रूप से उपेक्षित कर केवल सच्चे अभिभावक की ही भूमिका निभाई है। अतः उन्हें आज के अभिभावक का सच्चा प्रतिनिधि कहना समीचीन है।

उत्तर (iii) प्रस्तुत गद्यांश में अनेक खेल-तमाशों का ज़िक्र हुआ है जो इस प्रकार हैं- मेले-तमाशे, क्रिकेट और हॉकी।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) बड़े भाई साहब की बातों का लेखक पर बहुत व्यापक असर पड़ता था। इसका कारण था-भाई साहब द्वारा उपदेश परक वचन, हृदय को लगने वाली बातें और मन को आहत करने वाले सूक्तिबाण जिन्हें सुनकर लेखक का मन तिलमिला उठता। लेखक के हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो उठते और उसकी हिम्मत हारने लगती।

उत्तर (ii) बड़े भाई साहब द्वारा वर्णित पाठ्यक्रम की अभेद्य कठिनाई एवं उनके द्वारा दिए गए उपदेशों और सूक्तिबाणों को सुनकर उसका मन इतना विचलित हो उठता कि वह सोचने लगता पढ़ाई छोड़कर घर वापस जाने के लिए। वह सोचता, जो काम वश का नहीं, उसमें समय बर्बाद करने से क्या फायदा।

उत्तर (iii) लेखक के मस्तिष्क से निराशा के बादल हटते ही उसमें साहस का प्रचार हो उठता और वह अब आगे से जी जान लगाने की धारणा करने लगता और चटपट पढ़ने का एक टाइम टेबल बना लेता।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कथा नायक की रुचि खेलने-कूदने, पतंगें उड़ाने, कनकौए लूटने एवं मौज-मस्ती करने में अधिक थी, पढ़ने में कम।

उत्तर 2. बड़े भाई साहब का छोटे भाई से पहला सवाल होता- 'अब तक कहाँ थे?'

उत्तर 3. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में यह परिवर्तन हुआ कि उसकी स्वच्छंदता पहले से अधिक बढ़ गई और बड़े भाई साहब की स्वच्छंदता का लाभ उठाने लगा।

उत्तर 4. छोटा भाई खेल-कूद का कोई अवसर पाते ही हाथ से न जाने देता। वह पढ़ता था मगर उतना ही जिससे होम टास्क पूरा हो जाए और कक्षा में जलील न होना पड़े।

उत्तर 5. बड़े भाई साहब एक साल का काम करने में दो साल लगा देते थे।

उत्तर 6. कमरे में आते ही बड़े भाई साहब का रौद्र रूप देखकर लेखक के प्राण सूख जाते।

उत्तर 7. बड़े भाई साहब उपदेश देने की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगने वाली बातें कहते, ऐसे सूक्तिबाण चलाते कि हृदय के टुकड़े हो जाते।

उत्तर 8. बड़े भाई साहब के सालाना इम्तिहान में फेल होने से दुखी हो जाने के कारण लेखक ने उन्हें आड़े हाथों लेने का विचार त्याग दिया।

उत्तर 9. लेखक के मन में यह कुटिल भावना उत्पन्न हुई कि भाई साहब यदि एक साल और अनुत्तीर्ण हो जाएँ तो वह उनके बराबर हो जाएगा।

उत्तर 10. लेखक को कनकौवे उड़ाने का एक नया शौक पैदा हो गया था और उसका सारा समय बड़े भाई साहब से नज़रें बचाकर पतंगबाजी को ही भेंट हो रहा है।

उत्तर 11. भाई साहब के सिर के ऊपर से एक कटा हुआ कनकौवा गुजरा जिसकी डोर नीचे लटक रही थी। वे कद में लंबे होने के कारण डोर पकड़कर होस्टल की तरफ़ बेतहाशा दौड़ पड़े क्योंकि उसी के लिए लड़कों का एक समूह तेज़ी से दौड़ा चला आ रहा था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. लेखक उम्र और कक्षा में बड़े भाई साहब से 5 वर्ष छोटा था। उसकी उम्र नौ साल की थी और बड़े भाई साहब 14 साल के थे। इसलिए उन्हें लेखक की देखभाल करने और उसकी गतिविधियों की निगरानी करने का पूर्ण और जन्मसिद्ध अधिकार था।

उत्तर 2. बड़े भाई साहब को मन की इच्छाएँ इसलिए दबानी पड़ती थीं क्योंकि वे लेखक से बड़े थे। उनका सोचना था कि यदि बड़ा होकर वे बेराह चलने लगेंगे तो लेखक को सन्मार्ग पर कैसे प्रवृत्त कर सकेंगे। यह भी बड़े होने का एक कर्तव्य है।

उत्तर 3. लेखक को बड़े भाई साहब के रौद्र रूप के दर्शन इसलिए हो जाया करते थे क्योंकि लेखक का मन पढ़ने में एकदम नहीं लगता था। लेखक को लगातार एक घंटे तक बैठकर पढ़ना पहाड़ लगने लगता था। वह ज्यों ही अवसर पाता, होस्टल से निकट होने के कारण मैदान में निकल आता और वहाँ कभी कंकरियाँ उछालता तो कभी कागज़ की तितलियाँ उड़ाता, और यदि कोई स्थायी साथी मिल जाता तब और आनंद विभोर होकर चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूदते। कभी फाटक पर सवार होकर उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठाते। लेखक की यह अध्ययन विरोधी गतिविधि देखकर बड़े भाई साहब रौद्र रूप धारण कर लेते जिसके दर्शन लेखक को कमरे में प्रवेश करते ही होते थे।

उत्तर 4. जामेट्री के विषय में बड़े भाई साहब की अवधारणा क्लिष्ट होने की थी। उनका कहना था कि यदि अबज के स्थान पर अजब कर दिया जाए तो क्या फ़र्क है। इसके विषय में तर्क देते थे कि दाल-भात-रोटी खायी थी भात-दाल रोटी खाई इसमें क्या अंतर है। परंतु परीक्षक तो चाहते हैं कि जो पुस्तक में लिखा है वही लिखा जाना चाहिए। उन्हें परीक्षार्थी की परेशानी से क्या मतलब। परीक्षकों ने रटंत को ही शिक्षा का नाम रख छोड़ा है। बड़े भाई साहब जामेट्री को बे-सिर-पैर की विद्या कहते हैं और कहते हैं, ऐसी शिक्षा पढ़ने से क्या लाभ? किसी रेखा के लंब पर गिरने से आधार दोगुना होगा। इससे क्या प्रयोजन। दुगुना हो या चार गुना या आधा ही रह जाए, इससे क्या फ़र्क। लेकिन परीक्षा में पास होना है तो यह सब लिखना ही होगा।

उत्तर 5. बड़े भाई साहब डाँट-फटकार लगाते हुए लेखक को अनेक सलाह दे डालते थे। एक दिन लेखक को प्रातः कालीन समय गुल्ली-डंडा को भेंट कर ठीक भोजन के समय कमरे पर आया देखा तो बड़े भाई साहब बहुत क्रुद्ध हो उठे। वे उसे फटकार लगाते हुए बोले- ''यदि इसी तरह अंग्रेज़ी की पढ़ाई करोगे तो ज़िंदगी भर पढ़ते रहोगे और कभी भी एम हर्फ नहीं जान सकोगे। अंग्रेज़ी पढ़ना इतना आसान नही है। बड़े-बड़े विद्वान भी अंग्रेज़ी शुद्ध रूप में नहीं लिख सकते। शुद्ध बोलना तो दूर रहा। वे अपने परिश्रम के विषय में बताते हुए कहते कि तुम अपनी आँखों से देखते हो कि मैं रात-दिन कितना परिश्रम करता हूँ, कहीं मेले-तमाशे में भी नहीं जाता। प्रतिदिन हॉकी और क्रिकेट मैच होते हैं फिर भी मैं कहीं नहीं जाता तब भी एक कक्षा में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम अपनी पढ़ाई के प्रति इतने लापरवाह और उदासीन हो। वे सलाह देते कि यदि तुम्हें इसी तरह अपनी उम्र गँवानी है तो उचित यह है कि तुम घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा जी की गाढ़ी कमाई के पैसे क्यों बरबाद करते हो? लेखक बड़े भाई साहब की लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता।

उत्तर 6. लेखक का मन पढ़ाई से ज़्यादा खेलकूद में लगता था। वह पढ़ने का निश्चय करके भले ही टाइम-टेबिल बना लेता पर इस टाइम-टेबिल पर अमल करने की जगह उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की सुखद हरियाली, हवा के झोंके, खेलकूद की मस्ती और उल्लास, कबड्डी के दाँव-पेंच और बॉलीबाल की फुरती उसे अपनी ओर खींच ले जाती, ऐसे में उसे टाइम टेबिल और किताबों की याद तक नहीं रहती थी।

उत्तर 7. परीक्षकों के संबंध में भाई साहब के विचार बहुत अच्छे नहीं थे। उनका कहना था कि परीक्षक इतने निर्दयी होते थे कि जामेट्री में अजब लिखने की जगह अबज लिखते ही अंक काटकर छात्रों का खून कर देते थे, वह भी इतनी व्यर्थ की बात के लिए। इन परीक्षकों को छात्रों पर दया नहीं आती थी।

उत्तर 8. भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई को अत्यंत कठिन बताते हुए उसका जो भयंकर चित्र खींचा था, उससे लेखक भयभीत हो गया। लेखक को इस बात के लिए खुद पर आश्चर्य हो रहा था कि वह स्कूल छोड़कर घर क्यों नहीं भागा। लेकिन इसके बाद भी उसकी खेलों में रुचि और पुस्तकों में अरुचि यथावत बनी रही।

उत्तर 9. बड़े भाई साहब को भी कनकौवे उड़ाने की इच्छा होती थी, उनका भी जी ललचाता था कि वे खेल-तमाशे देखें, छोटे भाई की तरह खेले लेकिन बड़े होने की मर्यादा उनके पाँवों की बेड़ियाँ बनी हुई थीं। उनकी विचारधारा थी कि यदि वे स्वयं बेराह चलेंगे तो अपने छोटे भाई को बेराह चलने से कैसे रोक सकेंगे। बड़े होने के कारण यह कर्तव्य उनके सिर पर है।

उत्तर 10. लेखक ने स्वयं परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाने और बड़े भाई साहब के अनुत्तीर्ण हो जाने का लाभ उठाना शुरू कर दिया। उसके मन में बड़े भाई साहब के प्रति जो भय और आदर था वह कम हो गया था। भाई साहब उसकी इस

धारणा से पूर्ण अवगत थे। इस मामले में उनकी सहज बुद्धि बहुत तीव्र थी और एक दिन जब लेखक सवेरे के समय गुल्ली-डंडे के खेल में बिता कर भोजन के समय घर पर आया तो बड़े भाई साहब उसके इस व्यवहार से बहुत क्रुद्ध हो उठे। उनकी छोटे भाई पर बहुत तीखी प्रतिक्रिया हुई। आते ही बोल पड़े-तुम कक्षा में प्रथम आ गए तो प्रतीत होता है तुम्हें घमंड हो गया, यह घमंड तो बड़े-बड़ों का नहीं रहा। रावण जैसे शक्तिशाली का भी घमंड टूट गया तो तुम क्या चीज़ हो। केवल परीक्षा उत्तीर्ण कर लेना ही महत्वपूर्ण नहीं होता। महत्वपूर्ण होता है बुद्धि का विकास।

उत्तर 11. बड़े भाई साहब लेखक को फटकारने के क्रम में कह रहे हैं- आजकल परीक्षक प्रश्न-पत्र में लिख देते- 'समय की पाबंदी' पर चार पन्नों का निबंध लिखो। कौन नहीं जानता की समय की पाबंदी का बहुत महत्व है। समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है। इससे मनुष्य के जीवन में संयम आता है, दूसरों को उस पर स्नेह होने लगता है तथा उसके कारोबार में उन्नति होती है। जो बात एक वाक्य में कही जा सकती है, उसे चार पन्नों में लिखने की क्या आवश्यकता है। यह परीक्षकों की विद्यार्थियों के प्रति हिमाकत है। यह समय की बर्बादी भी है। बड़े भाई साहब कहते हैं कि जो बात एक पंक्ति में कही जा सकती है उसके लिए चार पन्ने रंगने की क्या आवश्यकता। लेखक को फटकारते हुए बड़े भाई साहब कहते हैं, जब तुम मेरी कक्षा में आओगे तब तुम्हें पढ़ाई की कठिनाई का ज्ञान होगा।

उत्तर 12. छोटा भाई कनकौवा लूटने के लिए बेतहाशा दौड़ता हुआ जा रहा था, सहसा बाज़ार से लौटते हुए भाई साहब से मुठभेड़ हो गई। उसी कनकौवे के पीछे बालकों की एक बड़ी सेना को देख, बड़े भाई साहब उग्रभाव से बोल पड़े- इन बाज़ारी लौंडों के साथ कनकौवे के लिए दौड़ते शर्म नहीं आती तुम्हें इतना भी बोध नहीं है कि तुम जिस कक्षा में पढ़ रहे हो वह कितनी महत्वपूर्ण है। मुझसे अब केवल एक जमात नीचे हो। तुम्हारी कक्षा को उत्तीर्ण कर लोग नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कई मिडलचियों को जानता हूँ जो प्रथम श्रेणी के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिटेंडेंट हैं। कितने लीडर और संपादक हैं। तुम उसी आठवीं जमात में आकर बाज़ारी लड़कों के साथ कनकौवे उड़ा रहे हो तुम्हें शर्म नहीं आती। तुम्हारी कम अक्ल पर दु:ख होता है। यह सच है कि तुम ज़हीन हो, लेकिन यह ज़ेहन किस काम की जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. बड़े भाई साहब भले ही फ़ेल होकर एक कक्षा में दो-तीन साल लगाते थे, परंतु उनमें अनुभव और सहज बुद्धि बहुत तीव्र थी। वे मानव मन की बात में पूर्ण सक्षम थे। वे अच्छी तरह समझ गए थे कि लेखक परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर कक्षा 8 में पहुँच गया है और उससे एक ही कक्षा नीचे रह गया है। उसके मन में बड़े भाई के अनुत्तीर्ण होने से उनके प्रति अवज्ञा उत्पन्न हो गई थी यह बात वे बड़ी अच्छी तरह समझ रहे थे। अब लेखक के मन पर उनका आतंक नहीं रह गया था उसे अब आत्मगौरव की अनुभूति होने लगी थी। लेखक के मन में यह भी विचार पनपने लगे थे यदि बड़े भाई साहब ने उसकी फजीहत की तो वह स्पष्ट रूप से उन्हें सुना देगा- आपने रात-दिन परिश्रम करके कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-खेलते कक्षा में प्रथम आ गया। बड़े भाई साहब अपनी सहज बुद्धि द्वारा उसके मनोभावों को अच्छी तरह समझ रहे थे और जब एक दिन लेखक अपना प्रात:काल का महत्वपूर्ण समय गिल्ली-डंडे के खेल में बिताकर भोजन के समय घर लौटा तो बड़े भाई साहब ने उसे आड़े हाथों लिया और बोले-तुम्हें अव्वल दर्जे में उत्तीर्ण होने का घमंड हो गया है परंतु केवल परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर लेना ही पर्याप्त नहीं होता, असली चीज़ है-अनुभव और बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय भी समझो।

उत्तर 2. बड़े भाई साहब ने अपने परीक्षा में फेल होने पर तत्कालीन शिक्षा प्रणाली की जिन कमियों को गिनाया है और उन्हें उत्तरदायी ठहराया है, हम उससे सहमत नहीं हैं। बड़े भाई साहब ने जामेट्री, अलजेबरा की अपने फ़ेल होने के विषय में जो आलोचना की है वह न तो तत्कालीन शिक्षा-प्रणाली के लिए हुई है और न ही उन विषयों की क्लिष्टता के लिए हुई है। बड़े भाई साहब के परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने में उनकी कर्तव्यनिष्ठा जनित कुंठा है जो उनके परीक्षा में फेल होने का कारण है। बड़े भाई साहब लेखक से केवल 5 वर्ष ही बड़े हैं। उनकी भी खेलने-कूदने, उन्मुक्त विद्यार्थी जीवन व्यतीत करने की इच्छाएँ हैं जिन्हें इन्होंने आदर्श कर्तव्यनिष्ठा के नीचे कुचल रखा है। ये अध्ययन तो करते हैं लेकिन कुंठाग्रस्त मस्तिष्क उसे ग्रहण नहीं करता। वे अपने मनोग्रंथि की ओर ध्यान न देकर शिक्षा-प्रणाली पर ही प्रहार करना प्रारंभ करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि उनका छोटा भाई उसी शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत कक्षा में प्रथम आता है। जामेट्री, अलजेबरा सूत्र पर आधारित होते हैं और सूत्र के उचित प्रयोग से ही हल होते हैं। अत: यहाँ बड़े भाई साहब का तर्क निराधार है। उसी तरह 'समय की पाबंदी' निबंध चार पन्नों में लिखने पर बड़े भाई साहब द्वारा दिया गया

तर्क उपयुक्त नहीं है। अंग्रेज़ी विषय की क्लिष्टता पर भी बड़े भाई का तर्क किसी भी दृष्टिकोण से शिक्षा-प्रणाली के दोष को प्रकट करने में समर्थ प्रतीत नहीं होता। इस प्रकार बड़े भाई साहब के अनुत्तीर्ण होने में तत्कालीन शिक्षा-प्रणाली किसी भी प्रकार उत्तरदायी नहीं है।

उत्तर 3. बड़े भाई साहब ने अपनी अम्माँ और दादा जी के अनुभव (तजुर्बे) की बहुत-सी बातें बताईं जो इस प्रकार हैं-

बड़े भाई साहब ने अपनी अम्माँ के विषय में बताते हुए कहा- अम्माँ ने पढ़ाई में कोई कक्षा उत्तीर्ण नहीं की थीं और दादा जी भी पाँचवी-छठी कक्षा के आगे नहीं पढ़े थे परंतु उनमें जीवन और संसार का बहुत अधिक तजुरबा था। हम चाहे जितनी जमात पढ़ लें, परंतु अम्माँ और दादा को हमें सुधारने, नसीहतें देने का अधिकार सदैव रहेगा। जो ज्ञान और जीवन का अनुभव उनमें है वह किताबें पढ़ने से नहीं प्राप्त हो सकता। उनका यह अधिकार केवल जन्मदाता होने के नाते ही नहीं है, बल्कि इसलिए है कि उन्हें संसार का तजुरबा हमसे तुमसे ज़्यादा है। अमेरिका की राजव्यवस्था और कितने हेनरी हुए हैं, शायद इसका ज्ञान उन्हें भले ही न हो, आकाश में कितने नक्षत्र-तारे हैं, भले ही यह न जानते हों, किंतु अनेक ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे-तुमसे ज़्यादा है।

उन्होंने अम्मा और दादा के तजुर्बे का उदाहरण देते हुए कहा—द्वैव वशात् आज यहाँ मैं बीमार पड़ जाऊँ तो तुम्हारे हाथ-पैर फूल जाएँगे और तुम दादा को तार देने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकोगे। तुम्हें कोई प्राथमिक उपचार न सूझेगा। परंतु तुम्हारे स्थान पर दादा जी होंगे तो वे सर्वप्रथम अपने स्तर पर किसी को तार न देकर अपने अनुभव के आधार पर मर्ज पहचानकर उसका उपचार करेंगे और सफल न होने पर ही किसी डॉक्टर को बुलाएँगे। दूसरा उदाहरण देते हुए कहा-बीमारी तो बड़ी समस्या है। हमें-तुम्हें तो इतना भी पता नहीं है कि महीने भर का खर्च कैसे करें। जो कुछ दादा भेजते हैं, हम 20-22 दिन में ही खर्च कर देते हैं और आगे पैसे-पैसे को मोहताज हो जाते हैं। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी, नाई से मुँह चुराने लगते हैं परंतु जितना हम और तुम आज खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग बहुत इज़्ज़त और नेकनामी से निभाया है और एक बड़े कुटुंब का पालन किया है।

उत्तर 4. बड़े भाई साहब के अनुत्तीर्ण होने और स्वयं के कक्षा में प्रथम आने पर लेखक के मन में बड़े भाई साहब के प्रति कई विचार आए। लेखक के मन में बड़े भाई साहब के अनुत्तीर्ण होने पर सहानुभूति के विचार आए तो कुटिल भावना ने भी जन्म लिया। लेखक बड़े भाई साहब के क्रांतिहीन रोते हुए चेहरे को देखकर करुणा से द्रवित हो उठा और वह भी उनके साथ रोने लगा। उसकी अपने उत्तीर्ण होने की खुशी आधी हो गयी। परंतु वहीं दूसरी ओर लेखक को अपने अच्छे अंकों में उत्तीर्ण होने का अभिमान भी हुआ। उसके मन में यह भी आया कि वह बड़े भाई साहब को आड़े हाथों ले और उनसे कहे- कहाँ गई आप की घोर तपस्या? मैं मज़े से पूरे साल खेलता भी रहा और अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो गया और आप किताबी कीड़ा होने पर भी फेल हो गए। इस प्रकार लेखक के मन में अभिमान आया जिससे बड़े भाई के प्रति मन में अनादर की भावना बढ़ी। अब लेखक को बड़े भाई साहब द्वारा दी जाने वाली नसीहतों से ऊब होने लगी थी। उसने अपने मन में सोच लिया कि पढ़ाई को लेकर उन्होंने मेरी और फजीहत की तो मैं साफ़ कह दूँगा-'आपने दिन-रात अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-कूदते अपनी कक्षा में प्रथम आ गया।' यद्यपि लेखक अपने मन के इन विचारों को बड़े भाई साहब के सामने नहीं कहा परंतु उसके रंग-ढंग से साफ़ स्पष्ट होते थे।

उत्तर 5. यह सोचना कि 'यदि बड़े भाई साहब की डाँट-फटकार न मिलती तो छोटा भाई कक्षा में अव्वल न आता' आंशिक रूप से सत्य है और अधिक रूप से असत्य जिसका विवेचन इस प्रकार है—

यद्यपि यह सत्य है कि विद्यार्थी पर अभिभावक की उपस्थिति का व्यापक असर पड़ता है। विद्यार्थी के मन में अभिभावक की मौजूदगी में एक अदब होता है जिससे वह किसी प्रकार की लापरवाही नहीं कर पाता। प्रस्तुत पाठ में लेखक की रुचि पढ़ने की अपेक्षा खेलने में अधिक रहती है और शायद बड़े भाई साहब साथ न होते तो यह ज़हीन होने पर भी अपने ज़ेहन को उजागर करने में सफल नहीं हो पाता। यह बड़े भाई साहब की डाँट-फटकार न होती, और उसका लेखक के मन में अदब न होता तो शायद वह परीक्षाओं में अव्वल न आता। क्योंकि यह पढ़ता ही नहीं इसका दूसरा पहलू यह है कि बिना प्रतिभा के, बिना बुद्धि के कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करना संभव नहीं है। इस प्रकार लेखक एक मेधावी छात्र था। वह एक तीव्र प्रतिभा का परंतु बेहद लापरवाह एवं खेलों में अधिक रुचि लेने वाला व्यक्ति था। वह जब भी पढ़ने के लिए पुस्तकें उठाता बड़े भाई साहब की फटकार के डर से ही।

इस प्रकार लेखक के कक्षा में अव्वल आने में लेखक का मेधावी छात्र होना साथ ही बड़े भाई साहब की डाँट-फटकार का भी प्रभाव पड़ा। इस बात को लेखक ने स्वीकार भी किया है।

उत्तर 6. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल कक्षाएँ उत्तीर्ण कर लेने से नहीं आती। उनके दृष्टिकोण में महज परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाना ही बहुत बड़ी चीज़ नहीं है। जीवन की समझ के लिए बुद्धि का विकास होना आवश्यक है। साथ ही जीवन की समझ आती है उम्र के विकास के साथ। बड़े भाई साहब लेखक से स्पष्ट रूप से कहते हैं कि हो सकता है तुम अगले वर्ष हमसे भी आगे निकल जाओ परंतु हमारे-तुम्हारे बीच जो 5 वर्ष का अंतर है, उसे तुम तो क्या, ईश्वर भी नहीं मिटा सकता। मुझे जीवन का, इस दुनिया का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते चाहे तुम पी. एच. डी या डी. लिट कर लो। उन्होंने तजुर्बो के लिए अम्माँ और दादा जी के तजुर्बों का उदाहरण भी दिया।

उत्तर 7. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

बड़े भाई साहब का स्वभाव रूढ़िवादी विचारों का पोषक है। उनका मानना है कि बड़े होने से कुछ भी करने का अधिकार किसी को नहीं मिलता। घर के बड़े को अनेक बार तो उन कामों में भी अपने को शामिल होने से रोकना पड़ता है, जो उसी उम्र के लड़के बेधड़क करते रहते हैं और उसका कारण है वे लड़के अपने घर में किसी से बड़े नहीं होते।

प्रस्तुत पाठ में बड़े भाई साहब हैं तो उम्र में छोटे लेकिन घर में उनसे भी छोटा एक भाई है। यद्यपि वे उम्र में कुछ वर्ष ही बड़े हैं, परंतु बड़े होने के कारण उनसे बड़े होने की बहुत-सी अपेक्षाएँ की जाती हैं। वे स्वयं भी बड़े होने का दायित्व निर्वहन करते हुए चाहते हैं कि वे छोटे भाई के लिए एक मिसाल का काम करें।

बड़े भाई साहब एक आदर्शवादी बड़े भाई हैं जो बड़े भाई के आदर्श का पालन करने में अपने बाल-सुलभ क्रियाकलापों की तिलांजलि दे देते हैं। वे आदर्श की मिसाल सिद्ध करने और बड़े का दायित्व निभाने के चक्कर में अपना बचपन खो देते हैं और किताबी कीड़ा बन जाते हैं। हरदम किताबों में खोए रहने पर भी प्रत्येक कक्षा में अनुत्तीर्ण होते जाते हैं।

बड़े भाई साहब की विशेषता है कि वे शिक्षा के मामले में जल्दबाजी पसंद नहीं करते। वे शिक्षारूपी भवन की बुनियाद बहुत ठोस धरातल पर डालना चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। इसके लिए वे एक साल का काम दो साल में करते थे। उनकी धारणा थी, जब बुनियाद ही मजबूत नहीं होगी तो भवन पायेदार कैसे बन सकता है?

बड़े भाई साहब में अपने बड़ा होने का बोध था। वह छोटे भाई की भाँति भले ही प्रतिभाशाली न हों पर उनमें छोटे भाई को अंकुश में रखने की पर्याप्त क्षमता थी जिसे उन्होंने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा- ''तो भाईजान, यह गरूर दिल से निकाल डालो कि तुम शिक्षा में मेरे निकट आ गए हो तो स्वतंत्र हो गए हो। मेरे रहते तुम बेराह न चल पाओगे। अगर तुम यह न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका भी प्रयोग कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, मेरी बातें तुम्हें ज़हर लग रही हैं।''

उत्तर 8. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से ज़िंदगी के अनुभव को बहुत महत्वपूर्ण कहा है। उन्होंने किताबी ज्ञान को परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने का साधन मात्र माना है परंतु ज़िंदगी जीने के लिए सांसारिक अनुभव को महत्वपूर्ण माना है। वे छोटे भाई के पुस्तकीय ज्ञान को स्वीकार करते हुए कहते हैं- ''तुम ज़हीन हो, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन वह ज़ेहन किस काम का जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले।'' उनके अनुसार आत्मगौरव की रक्षा ज़िंदगी के अनुभव का विषय है। वे इसी क्रम में आगे कहते हैं- ''मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे तुम आज ही हमारी कक्षा में आ जाओ... लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है उसे तुम तो क्या खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा ही रहूँगा। मुझे दुनिया और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते।'' समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है।

पाठ–2

डायरी का एक पन्ना

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) आज प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाने के उपलक्ष्य में कलकत्ता (कोलकाता) के बड़े बाज़ार में बहुत उत्सव का वातावरण था। वहाँ प्रत्येक भवन पर राष्ट्रीय झंडे फहरा रहे थे। कई मकान वहाँ इस प्रकार सजाए गए थे कि ऐसा लगता था मानो वास्तव में सफलता मिल गयी हो। मनुष्य जिस रास्ते से भी जाते थे, उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता दिखाई देती थी।

उत्तर (ii) अंग्रेज़ी सरकार द्वारा इस कार्यक्रम को विफल बनाने के लिए व्यापक प्रबंध किया गया था। पुलिस अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त करते हुए अपना शक्ति प्रदर्शन कर रही थी। गोरखे और सार्जेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे और पुलिस की

बहुत-सी लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवार सिपाहियों का भी प्रबंध था। पुलिस ने वहाँ के बड़े-बड़े पार्कों एवं मैदानों को सवेरे से ही घेर लिया था।

उत्तर (iii) उस दिन कलकत्ते के बड़े बाज़ार की सजावट, प्रत्येक मकान पर झंडा फहराना–लोगों में अद्भुत उत्साह उत्पन्न कर रहा था।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) पूर्णोदास सुभाष बाबू के जुलूस का प्रबंधक था। उसी पर उनके जुलूस का मार्गदर्शन करने का दायित्व था और उन्होंने अपने कार्य को अंजाम बड़ी कुशलता से दिया था। स्त्री समाज भी अपना जुलूस निकालने की तैयारी में लगी हुई थी और जगह-जगह से उपयुक्त स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं।

उत्तर (ii) मोनुमेंट के पास जैसा प्रशासनिक प्रबंध प्रातः काल में था, वहाँ जैसा पुलिस बल का प्रबंध था, वैसा दिन के एक बजे नहीं था। ऐसा देख लोग अनुमान लगाने लगे कि शायद इस समय पुलिस सुबह की भाँति रंग न दिखाए। परंतु यह लोगों का मात्र भ्रम था।

उत्तर (iii) आज लोगों में अपूर्व उत्साह था प्रथम स्वतंत्रता दिवस पर झंडारोहण का। आज लोगों के हृदय में राष्ट्र प्रेम का ज्वार लहरा रहा था।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) मैदान में आयोजित इस विशाल सभा को ओपन लड़ाई इसलिए कहा गया कि जब से इस देश में कानून भंग का काम शुरू हुआ, तब से आज तक इस मैदान में इतनी बड़ी सभा का आयोजन नहीं हुआ था। यहाँ के पुलिस कमिश्नर द्वारा पहले ही घोषणा की जा चुकी थी कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार यहाँ कोई सभा नहीं की जा सकती।

उत्तर (ii) झंडा फहराने का कार्यक्रम संपन्न करने वाली समिति को ही यहाँ कौंसिल कहा गया है। कौंसिल की ओर से घोषणा की जा चुकी थी कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। अतः सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए।

उत्तर (iii) 'कानून भंग का काम' का अर्थ था ब्रिटिश कानून को न मानना अर्थात अंग्रेज़ी कानून का उल्लंघन।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) झंडा फहराने के कार्यक्रम को पूरा न करने देने के लिए सुभाष बाबू को पुलिस ने पकड़ लिया और गाड़ी में बैठाकर लाल बाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। उनके गिरफ़्तार कर लिए जाने के बाद पब्लिक में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। कुछ ही देर बाद स्त्रियों का एक बड़ा समूह जुलूस बनाकर वहाँ से चली। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। दिन में जो पुलिस ठंडी पड़ गई थी, उसने फिर लाठियाँ बरसानी शुरू कर दीं। इस बार भीड़ अधिक होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर जुलूस टूट गया और वहीं मोड़ पर 50-60 स्त्रियाँ बैठ गईं। उन्हें पुलिस ने गिरफ़्तार कर लाल बाज़ार भेज दिया।

उत्तर (ii) पुलिस ने पुरुष और महिला प्रदर्शनकारियों पर लाठी बरसाने का एवं उन्हें लॉकअप में बंद कर देने जैसा अमानवीय और निंदनीय कार्य किया। सुभाष बाबू के लॉकअप में भेजने के बाद धर्मतल्ला मोड़ पर बैठी महिलाओं को भी लाल बाज़ार भेज दिया।

उत्तर (iii) महिलाओं के जुलूस निकालने पर वहाँ बहुत भीड़ हो गई तथा पुलिस ने निर्दयतापूर्वक लाठियाँ चलाई जिससे धर्मतल्ले के मोड़ पर जुलूस टूट गया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 26 जनवरी, 1931 के दिन की विशेषता यह थी कि उसी दिन पूरे हिंदुस्तान में प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था।

उत्तर 2. श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया तथा साथ के लोगों को मार-पीट कर भगा दिया।

उत्तर 3. कौंसिल की तरफ़ से घोषित किया गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा की जाएगी।

उत्तर 4. मारवाड़ी विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में 11 बजे झंडोत्सव मनाया। इसमें जानकी देवी और मदालसा बजाज-नारायण ने भाग लिया।

उत्तर 5. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था।

उत्तर 6. प्रचार में दो हज़ार रुपया खर्च किया गया था।

उत्तर 7. बड़े बाज़ार के अधिकतर मकानों पर झंडा इसलिए लगवाया गया था क्योंकि आज प्रथम स्वतंत्रता दिवस पूरे हिन्दुस्तान में मनाया गया था।

उत्तर 8. बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू को पुलिस ने इसलिए पकड़ा क्योंकि उन्होंने श्रद्धानंद पार्क में झंडा फहराया।

उत्तर 9. सुभाष बाबू के जुलूस को पुलिस चौरंगी पर रोकने में इसलिए नाकामयाब हुई क्योंकि उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ थी।

उत्तर 10. लाल बाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह को झंडा फहराने की ज़िम्मेदारी थी। जब वे झंडा फहराने अंदर जाने लगे तो उन्हें पुलिस ने अंदर नहीं जाने दिया। वहाँ पर भयंकर मारपीट हुई। दो-चार आदमियों के सिर भी फट गए।

उत्तर 2. कौंसिल की तरफ़ से निकाली गई नोटिस का मूल कथ्य था- 'मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। कौंसिल का उद्देश्य था कमिश्नर को खुला चैलेंज देना।'

उत्तर 3. जुलूस को न रोक पाने की खीझ पुलिस ने जनसमुदाय पर निर्मम अत्याचार करके उतारी। पुलिस के निर्मम अत्याचार के परिणामस्वरूप लगभग 160 आदमी तो अस्पताल गए और जो लोग घायल होने पर भी अपने घरों को चले गए, वे अलग हैं। कितने आदमी पकड़े गए, यह पता तो नहीं चला परंतु लाल बाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी।

उत्तर 4. झंडा दिवस के अवसर पर पुलिस ने जगह-जगह जो शक्ति-प्रदर्शन किया, लाठियों से पीटा, स्त्री-पुरुष का भेदभाव बिना किए लाठीचार्ज किया, इतना ही नहीं स्त्रियों को ले जाकर लॉकअप में डाल दिया। यह ब्रिटिश पुलिस की क्रूरता की पराकाष्ठा थी। पुलिस ने श्रद्धानंद पार्क, सुंदरी पार्क, मारवाड़ी बालिका विद्यालय आदि स्थानों पर अपनी नृशंसता का परिचय दिया। सुभाष बाबू के जुलूस पर पुलिस का क्रूरतम लाठीचार्ज ब्रिटिश शासन के अत्याचार का साक्ष्य है।

उत्तर 5. जिस समय पुलिस मोनुमेंट के नीचे लाठियाँ भाँज रही थी, उस समय उसके दूसरी तरफ़ स्त्रियाँ मोनुमेंट पर चढ़ झंडा लहरा रही थीं और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी क्योंकि वहाँ स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गयी थीं और सबके पास झंडा था।

उत्तर 6. 26 जनवरी 1931 के दिन ही संपूर्ण भारत में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। यह दिन भारत के इतिहास में अविस्मरणीय दिन है। उसी दिन की पुनरावृत्ति करने के लिए कलकत्ता में बहुत व्यापक तैयारियाँ की गयी थीं। लेखक ने भी अपना आर्थिक योगदान दिया था। इस दिन को यादगार बनाने के लिए केवल प्रचार में ही दो हज़ार रुपया खर्च किया गया था। सारे कार्यकर्ताओं ने इसे अपना काम समझ बड़े उत्साह से घर-घर जाकर समझाया था।

उत्तर 7. 'आज जो बात थी निराली थी', यह इस बात से प्रतीत हो रहा था कि वहाँ के लोगों में स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहराने का जो जोश, जो उत्साह दिखाई दे रहा था, इससे पूर्व ऐसा नहीं देखा गया था। आज लोग ऐसा महसूस कर रहे थे मानो वास्तव में स्वतंत्रता दिवस मना रहे हों। बाज़ारों-घरों को सजाया गया था, सर्वत्र घरों पर झंडे लहरा रहे थे और कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर के नोटिस के बावजूद स्थान-स्थान पर झंडा फहराने के लिए लोग निकल पड़े थे।

उत्तर 8. पुलिस कमिश्नर के नोटिस में और कौंसिल की नोटिस में परस्पर विरोधाभास था। पुलिस कमिश्नर के नोटिस में कहा गया था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार नगर में कोई सभा नहीं हो सकती। यदि आप सभा में भाग लेंगे तो दोषी होंगे। कौंसिल द्वारा जारी की गयी नोटिस में यह सूचना दी गयी थी कि 26 जनवरी 1931 को सायं 4 बजकर 24 मिनट पर मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। इस प्रकार यह ब्रिटिश कानून को न मानने का खुला चैलेंज था।

उत्तर 9. आज का दिन बंगाल के इतिहास का महत्वपूर्ण दिन था। आजतक कलकत्ता में इतनी स्त्रियाँ एक साथ कभी गिरफ़्तार नहीं हुई थीं। इस गिरफ़्तार में मदालसा भी थी जिसे थाने में पीटा भी गया था। आज की सभा में बहुत लोग घायल हुए थे। डॉ. गुप्ता घायलों की देख-रेख कर रहे थे। कुछ घायलों की स्थिति बहुत खराब थी। उन्हें अस्पताल भिजवाना था। डॉ. दास गुप्ता संभवत: कलकत्ता के इस त्याग का साक्ष्य तैयार करने में लगे थे क्योंकि बंगाल और कलकत्ता पर यह कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। आज यह कलंक काफ़ी हद तक धुल गया था।

निबन्धात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 26 जनवरी, 1931 को कलकत्ता में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में झंडा रोहण की सभा और ब्रिटिश पुलिस के पुरजोर विरोध के बावजूद सुभाष बाबू के नेतृत्व में जन सैलाब के साथ झंडा रोहण कार्यक्रम में अगुआई सुभाष बाबू के सशक्त नेतृत्व की साक्षी है। इस कार्यक्रम में उनके नेतृत्व में जिस प्रकार पुरुष-महिलाओं ने भाग लिया, लाठियाँ खाईं और जेल गयीं, यह सब सुभाष बाबू के सशक्त नेतृत्व का परिचय देने के लिए पर्याप्त है।

उत्तर 2. वृजलाल गोयनका लेखक के एक सहयोगी थे। वे लेखक के साथ दमदम में जेल में भी साथ रहे थे। इधर कई दिनों से वे लेखक के साथ थे और उनका सहयोग कर रहे थे, आज वह भी पकड़े गए। हुआ यह कि वे सर्वप्रथम झंडा लेकर मोनुमेंट की तरफ़ बड़ी तेज़ी से दौड़े परंतु स्वयं गिर पड़े। एक घुड़सवार ने उसे लाठी मारी और पकड़ लिया। कुछ दूर ले जाकर छोड़ दिया। फिर वह स्त्रियों के गिरोह में शामिल हो गया। वहाँ भी इसे पकड़कर छोड़ दिया गया तब वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लाल बाज़ार गया और वहाँ पर गिरफ़्तार हो गया। इस प्रकार झंडा दिवस को सफल बनाने में गोयनका की प्रमुख भूमिका रही।

उत्तर 3. सुभाष बाबू के जुलूस को सफल बनाने में स्त्री समाज की भूमिका अद्वितीय रही। सुभाष बाबू ठीक चार बजकर दस मिनट पर जुलूस लेकर आए। उन्हें चौरंगी पर रोकने का प्रयास किया गया परंतु पुलिस रोकने में असफल रही। इनके जुलूस के मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस की लाठियाँ पड़ीं। वे बहुत जोशो-खरोश से 'वंदे मातरम' बोल रहे थे। लाठीचार्ज में क्षित्तीश चटर्जी बुरी तरह घायल हुए थे। परंतु इनके साथ जुलूस में आई स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थीं। इस प्रकार सुभाष बाबू के गिरफ़्तार होने पर उनके कार्य को स्त्रियों ने ही पूर्ण किया।

उत्तर 4. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ हमें उन स्वतंत्रता प्रेमियों की याद दिलाने में योगदान करता है जो भारत माता की परतंत्रता की बेड़ियाँ काटने के लिए अपना बलिदान देने को आतुर थे। इसके साथ ही इस पाठ के माध्यम से ब्रिटिश शासन की निरंकुशता, क्रूरता और दमन की नीति का परिचय मिलता है।

इस पाठ से यह संदेश मिलता है कि यदि एक संगठित समाज कृत संकल्प हो तो वह सशक्त से सशक्त निरंकुश सत्ता को उखाड़ फेंक सकता है। इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है समाज को जागरूक करना जिससे वह संगठित होकर आतंक और निरंकुशता को उखाड़ फेंकने में सक्षम बने।

उत्तर 5. महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह आंदोलन के दौरान किया था और नमक बनाने के ब्रिटिश कानून की अवज्ञा करते हुए नमक बनाया था। इस कानून भंग आंदोलन में सत्याग्रहियों के साथ ब्रिटिश हुकूमत ने दमन की नीति अपनाई। सत्याग्रहियों को लाठियों से निर्ममता से पीटा गया। अनेक गिरफ़्तारियाँ भी हुईं। देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग तरीके से ब्रिटिश कानून की अवज्ञा की गई। देश के अनेक शीर्षस्थ नेता जेल में डाल दिए गए। परंतु कलकत्ता में कानून भंग आंदोलन का कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं हुआ। लेखक ने अपनी डायरी में इसी बात की जानकारी देते हुए लिखा है कि कलकत्ता में कानून भंग आन्दोलन के बाद यह पहली स्थायी सभा जो सुभाष बाबू के नेतृत्व में आयोजित की गई थी। इसके पहले यहाँ ऐसी सभा का आयोजन नहीं हुआ था। स्वतंत्रता दिवस की पहली वर्षगाँठ 26 जनवरी 1931 को कलकत्ता में झंडा फहराने के लिए आयोजित यह सभा ने इतना विशाल रूप धारण कर लिया कि वहाँ लोग-क्या स्त्रियाँ, क्या पुरुष-सभी मिलकर ब्रिटिश शासन और ब्रिटिश कानून के विरुद्ध एक खुला युद्ध छेड़ दिया। कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर द्वारा-'अमुक-अमुक धाराओं के अंतर्गत सभा करने, जुलूस आदि निकालना कानून के विरुद्ध है, इसका अनुपालन न करना अपराध होगा'-की घोषणा के बावजूद लोग जगह-जगह बड़ी संख्या में एकत्र होने लगे थे। कौंसिल ने भी कमिश्नर की घोषणा के विरुद्ध यह घोषणा कर दी थी कि ठीक 4 बजकर 24 मिनट पर मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। यह वास्तव में ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध एक खुली चुनौती थी। भारत को गुलामी की

बेड़ियों से मुक्त करने के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन सर्वथा उचित था। भारतीयों के लिए ब्रिटिश कानून के विरुद्ध अपना असंतोष प्रकट करने व उनकी बंद आँखें खोलने के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन करना आवश्यक हो गया था। कलकत्ता का यह सविनय अवज्ञा आन्दोलन अभूतपूर्व था।

उत्तर 6. 26 जनवरी 1931 का दिन कलकत्ता के इतिहास में अपूर्व था, इसमें कोई संदेह नहीं। लेखक के अनुसार देश भर में कानून भंग आन्दोलन प्रारंभ होने के बावजूद कलकत्ता इससे अछूता रहा था। जो भारत की स्वतंत्रता के प्रति निष्क्रियता को व्यक्त करता है। परंतु स्वतंत्रता दिवस की पहली वर्षगांठ 26 जनवरी, 1931 के दिन वहाँ के जनमानस की स्वतंत्रता के प्रति जिज्ञासा और झंडारोहण कार्यक्रम में भाग लेने का जुनून वास्तव में अपूर्व ही था। क्या स्त्रियाँ, क्या पुरुष, सभी के मन में झंडारोहण करने का अदम्य साहस अद्‌भुत था। लोगों को दमनकारी ब्रिटिश कानून का उल्लंघन करने में कोई भय और संकोच दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। सभी लोग अपने प्राण हथेली पर लिए उस सभा में शिरकत करने को प्रखर थे। और अंतत: हुआ भी वही। इस झंडारोहण कार्यक्रम में भाग लेने के परिणामस्वरूप बहुत से लोग पुलिस की बर्बरता के कारण घायल हुए, बहुत से लोगों को लॉकअप में डाल दिया गया, स्त्रियों को भी जेल भेजा गया। यही अदम्य उत्साह और साहस जो वहाँ उस अवसर पर देखने को मिला–कलकत्ता के इतिहास में अपूर्व था।

उत्तर 7. गांधी जी द्‌वारा सन् 1930 में आह्वान्वित कानून-भंग आन्दोलन की प्रतिक्रिया पूरे देश में दिखाई दी थी। जिस समय गांधी जी ब्रिटिश नमक कानून तोड़ कर नमक बना रहे थे, पूरे देश के विभिन्न भागों में कानून भंग का आयोजन किया गया था। हज़ारों की संख्या में लोग घायल हुए थे और जेल गए थे। यही कलकत्ता ही ऐसा स्थान था जिसपर कलंक था कि यहाँ कोई कार्य नहीं हो रहा है। परंतु 26 जनवरी, 1931 को जो कुछ कलकत्ता में हुआ और जिस जोशो-खरोश से हुआ, वह कलकत्ता पर लगे कलंक को पूरी तरह से धो दिया। सुभाष बाबू के नेतृत्व में झंडारोहण कार्यक्रम में जिस उत्साह और साहस से वहाँ की स्त्रियों और पुरुषों ने भाग लिया वह अपूर्व ही था और कलकत्ता पर लगे कलंक को धोने के लिए पर्याप्त था।

उत्तर 8. सुभाष बाबू की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार थीं-

सुभाष बाबू में उच्च कोटि के नेतृत्व गुण थे– सुभाष बाबू में नेतृत्व करने की अदभुत क्षमता थी। जो भी इनके समक्ष आ जाता, वह इनका ही होकर रह जाता। इसी गुण का प्रभाव था कि जो कार्य आज तक कलकत्ता में कभी नहीं हो सका था वह कार्य अभूतपूर्व तरीके से संपन्न हुआ।

सुभाष बाबू कुशल संचालक थे– सुभाष बाबू में नेतृत्व गुण तो था ही, इनमें कुशल प्रशासक/संचालक के गुण भी थे। उन्होंने अपनी इसी कौशल के द्‌वारा पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय को जुलूस के प्रबंध की सारी ज़िम्मेदारी सौंप रखी थी। वे दूरदर्शी व्यक्ति थे। वे जानते थे कि कमिश्नर के आदेशों का अनुपालन न करने पर वह गिरफ़्तार कर लिया जाएगा और परिणाम भी वही हुआ, पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय जुलूस के निकलने से पूर्व ही गिरफ़्तार कर लिए गए। इसके बावजूद सुभाष बाबू जुलूस निकालने में सफल रहे।

सुभाष बाबू की वाणी में जादू था– पुलिस के लगातार बर्बर व्यवहार करने के बावजूद उनके साथ आया जनसमूह मार खाना और जेल जाना स्वीकार कर लिया परंतु उनका साथ छोड़ने को तत्पर नहीं हुआ। यह उनकी वाणी का ही प्रभाव था।

इस प्रकार सुभाष बाबू नेतृत्व गुण के साथ बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

पाठ-3

तताँरा-वामीरो कथा

गद्‌यांश पर आधारित प्रश्न

गद्‌यांश - 1

उत्तर (i) गद्‌यांश की प्रथम पंक्ति में 'उसे' शब्द का प्रयोग ततांँरा के लिए किया गया है। लोग उसके साथ अच्छा व्यवहार इसलिए करते थे कि ततांँरा केवल गाँववासियों के लिए ही नहीं, समूचे द्‌वीपवासियों की मदद करने और त्याग करने के लिए चर्चित था। मुसीबत के समय वह किसी की भी मदद के लिए पहुँच जाता। उसके आत्मीय स्वभाव और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण ही लोग उसका आदर करते थे।

उत्तर (ii) तताँरा अपने पारंपरिक परिधान के साथ सदैव लकड़ी की एक तलवार भी बाँधे रहता था। उस तलवार के लकड़ी की बने होने के बावजूद वहाँ के लोग मानते थे कि वह एक विलक्षण और दैवीय शक्ति संपन्न थी। ऐसा इसलिए था कि तताँरा इस तलवार का प्रयोग कभी भी किसी के सामने न करता था।

उत्तर (iii) इस गद्यांश से हमें यही सीख मिलती है कि मनुष्य का आकर्षक व्यक्तित्व और आत्मीय स्वभाव लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) वह वामीरो थी जिसे एक अजनबी द्वारा घूर-घूर कर देखे जाने का बोध नहीं हुआ। इसका कारण था उसका तन्मय होकर एक मधुर गीत गाना। वह गीत गाने में इतनी तल्लीन थी कि उसे यह पता ही नहीं चला कि कोई उसका गीत सुनता हुआ नि:शब्द उसे घूरे जा रहा था।

उत्तर (ii) युवती ने उस अजनबी से जो अब तक नि:शब्द होकर उसका गाना सुन रहा था और एकाएक गाना रुक जाने पर गंभीर आवाज़ में बोला था-''तुमने एकाएक इतना मधुर गाना क्यों छोड़ दिया?'' अजनबी से उलटे प्रश्न कर दिया- ''पहले बताओ, तुम कौन हो, इस तरह मुझे घूरने और इस असंगत प्रश्न का कारण? अपने गाँव के अतिरिक्त किसी और गाँव के युवक के प्रश्नों का उत्तर देने को मैं बाध्य नहीं। यह तुम भी जानते हो।''

उत्तर (iii) क्योंकि अपने गाँव के युवक के अतिरिक्त किसी अन्य गाँव के युवक के प्रश्न का उत्तर देने को बाध्य नहीं थी।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) वामीरो अजनबी युवक तताँरा से मिलने व उसके आकर्षक सुंदर व्यक्तित्व को देख उसे भूल न सकी और घर पहुँचने पर भीतर-भीतर ही कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। उसके भीतर तताँरा से दूर होने की एक झूठी छटपटाहट थी। उस छटपटाहट से सहज होने के लिए झल्लाहट में दरवाज़ा बंद किया और मन को किसी और दिशा में ले जाने का प्रयास किया।

उत्तर (ii) वामीरो ने तताँरा के विषय में अनेक कहानियाँ सुन रखी थीं। उसकी कल्पना में वह एक अद्भुत साहसी युवक था। किंतु प्रत्यक्ष रूप में तताँरा उसके समक्ष एक भिन्न रूप में आया। वह सुंदर, बलिष्ठ तो था ही किंतु बेहद शांत, सभ्य और भोला था। उसका व्यक्तित्व ठीक वैसा ही था जैसा उसने अपने जीवनसाथी के रूप में कल्पना की थी।

उत्तर (iii) वामीरो तताँरा को भूल जाना चाहती थी, क्योंकि तताँरा एक दूसरे गाँव का युवक था जिसके साथ उसका संबंध संभव नहीं था।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) वामीरो से प्रथम मिलन के बाद तताँरा का मन मीठी पीड़ा से व्यथित था। मिलन की उत्कंठा में आँच रहित एक ठंडा और उबाऊ दिन गुज़र रहा था। शाम की प्रतीक्षा थी उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पूरे जीवन की अकेली प्रतीक्षा हो। तताँरा के गंभीर और शांत जीवन में ऐसा पहली बार हो रहा था। वह रोमांचित भी था और अचंभित भी था।

उत्तर (ii) तताँरा दिन ढलने से काफ़ी पहले ही लपाती की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया। उसे वामीरो की प्रतीक्षा में एक-एक पल पहाड़-सा लग रहा था। उसके भीतर वामीरो के आने का एक भय था जो उसे परेशान किए हुए था।

उत्तर (iii) तताँरा के मन की आशा की तुलना समुद्र की देह पर डूबती किरण से की गई है। जो कहीं भी विलीन हो सकती थी।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. तताँरा-वामीरो कथा उस समय के एक गाँव की है जब लिटिल अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े थे।

उत्तर 2. वामीरो के गाना गाते समय एकाएक एक ऊँची लहर उठी और उसे भिगो गई और उसी हड़बड़ाहट में वह अपना गाना भूल गई।

उत्तर 3. तताँरा ने वामीरो से गीत पूरा करने की याचना की और बोला- ''तुमने गाना क्यों रोक दिया? गाओ न!''

उत्तर 4. तताँरा और वामीरो के गाँव की रीति के अनुसार एक युवक-युवती का संबंध स्थापित करने के लिए दोनों का एक ही गाँव का होना आवश्यक था।

उत्तर 5. अंदमान द्वीप समूह के अंतिम दक्षिणी द्वीप का नाम है लिटिल अंदमान।

उत्तर 6. तताँरा के बहुचर्चित होने में सहायक थी उसकी उदारता, आकर्षक व्यक्तित्व और सबकी सहायता में शामिल होने का गुण।

उत्तर 7. तताँरा पारंपरिक पोशाक के साथ अपनी कमर में एक तलवार बाँधे रहता था।

उत्तर 8. तताँरा की तलवार लकड़ी की बनी थी।

उत्तर 9. तताँरा वामीरो के श्रृंगार गीत के माधुर्य को सुनकर अपनी सुध-बुध खोने लगा।

उत्तर 10. वामीरो लपाती गाँव की रहने वाली थी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. जब लिटिल अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े हुए थे, तब वहाँ एक सुंदर-सा गाँव था-पासा। इसी गाँव के निकट एक आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, सुंदर और शक्तिशाली युवक रहता था जिसका नाम था तताँरा। उस युवक के प्रति निकोबारवासियों के मन में बहुत सम्मान था। उससे सभी बहुत प्रेम करते थे क्योंकि वह बहुत नेक दिल और सब की मदद करने के लिए तत्पर रहता था। वह केवल अपने गाँव की ही नहीं बल्कि समस्त द्वीप वासियों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता था।

उत्तर 2. तताँरा अपने पारंपरिक परिधान के साथ अपनी कमर में एक तलवार बाँधे रहता था। वह तलवार लकड़ी की बनी थी जिसे वह कभी भी अपने से अलग नहीं करता था और न ही उस तलवार का दूसरों के सामने प्रयोग ही करता था। वहाँ के लोगों की धारणा थी कि वह तलवार लकड़ी की बनी होने पर भी उसमें चमत्कारिक दैवीय शक्ति थी। तताँरा की तलवार एक अद्‌भुत रहस्य थी।

उत्तर 3. एक दिन शाम को तताँरा दिनभर के परिश्रम से थका हारा समुद्र के किनारे टहलने निकला। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज में डूबने को था। समुद्र की सायंकालीन शीतल हवा चल रही थी। पक्षियों की चहचहाट भी धीरे-धीरे शांत होने को थी इस समय तताँरा का मन शांत था और समुद्री बालू पर बैठा सूर्य की रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहार रहा था कि उसे पास से ही कहीं से एक मधुर संगीत गूँजता हुआ सुनाई दिया। वह गीत माधुरी सुन अपनी सुध-बुध खोने लगा। उसी समय लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की।

उत्तर 4. कोई अजनबी बड़ी तन्मयता से उसे निहार रहा है, यह वामीरो इसलिए नहीं जान सकी क्योंकि वह शाम के सौंदर्य में बेसुध एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगों को निहारते हुए एक श्रृंगार गीत गाने में तन्मय थी। उसे यह ज्ञात ही न हो सका कि कोई अजनबी युवक उसे नि:शब्द ताके जा रहा है।

उत्तर 5. वामीरो शाम के सौन्दर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगों को निहारते हुए एक श्रृंगार गीत गाने में तन्मय थी कि एकाएक एक ऊँची लहर उठी और उसे भिगो गई। वह हड़बड़ाहट में गाना भूल गई।

उत्तर 6. तताँरा अब तक वामीरो द्वारा गाए गीत के माधुर्य से सम्मोहित था। उससे युवती (वामीरो) ने क्या-क्या कहा, कुछ भी नहीं सुनाई दिया। जब वामीरो ने विरोध करते हुए कड़े स्वर में कहा- 'ढीठता की हद है, आखिर क्यों? क्या तुम्हें गाँव का नियम मालूम नहीं?' इतना बोल वह जाने लगी तो तताँरा को कुछ होश आया। वह उसके सामने रास्ता रोककर बोला-'मुझे माफ़ कर दो। जीवन में पहली बार मैं विचलित हुआ हूँ। तुम्हें देखकर मेरी चेतना लुप्त हो गई थी। मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। बस अपना नाम बता दो।'

उत्तर 7. तताँरा और वामीरो के इस आकस्मिक मिलन के बाद वामीरो का मन भी तताँरा की ओर आकर्षित हो गया था। वामीरो ने तताँरा के विषय में अनेक कहानियाँ सुन रखी थीं। तताँरा उसकी कल्पना में एक अद्‌भुत साहसी युवक था। किंतु आज तताँरा उसके सम्मुख जिस रूप में आया था। वह बलिष्ठ और सुंदर तो था ही, बेहद शांत और भोला था। वह घर पहुँचकर कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। उसके मन में तताँरा से दूर होने की एक झूठी छटपटाहट थी परंतु वह जितना उससे दूर होने की सोचती, बार-बार उसका याचना भरा भोला चेहरा सामने आ खड़ा होता। इससे यह स्पष्ट है कि वह तताँरा से आकर्षित थी।

उत्तर 8. वामीरो से मिलने के बाद तताँरा का अगला दिन इस प्रकार बीता मानो पूरे जीवन भर की अकेली प्रतीक्षा हो। किसी प्रकार रात बीती। तताँरा का हृदय व्यथित था। दिन आँच रहित ठंडा और उबाऊ हो गया था। शाम की बेसब्री से प्रतीक्षा थी। उसके शांत जीवन में यह बेचैनी और बेसब्री पहली बार अनुभूत हुई थी। वह बहुत आश्चर्यचकित और रोमांचित था।

उत्तर 9. ततांँरा शाम होने से बहुत पहले ही लपाती गाँव की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया था। सहसा उसे नारियल के झुरमुटों के बीच से आती एक आकृति दिखाई दी। वही वामीरो थी। ततांँरा के समक्ष आकर खड़ी हो गई। दोनों के मुँह से कोई बोल न फूटे। दोनों शब्दहीन थे परंतु दोनों के भीतर कुछ अवश्य था जो भीतर ही भीतर प्रवाहित हो रहा था। दोनों एक-दूसरे को निहारते हुए जाने कब तक खड़े रहे। दोनों में एक अव्यक्त भय था परंपराओं का, जो उन्हें मूक बनाए रहा।

उत्तर 10. ततांँरा अपने पारंपरिक परिधानों के साथ अपनी कमर में एक तलवार भी बाँधता था। वह तलवार लकड़ी की बनी थी। उस तलवार के विषय में लोगों का मत था कि वह लकड़ी की बनी होने पर भी उसमें अद्भुत दैवीय शक्ति थी। ततांँरा अपनी उस तलवार को कभी भी अपने से अलग नहीं होने देता था।

उत्तर 11. ततांँरा द्वारा यह पूछे जाने पर कि, ''तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया?'' वामीरो अपने सामने एक सुंदर युवक को देखकर आश्चर्यचकित हुई। वामीरो अपने को संयत कर बेरुखी के साथ जवाब दिया– "पहले बताओ, तुम कौन हो? इस तरह मुझे घूरने और असंगत प्रश्न करने का कारण? अपने गाँव के युवक के अलावा किसी और गाँव के युवक के प्रश्न के उत्तर देने के लिए मैं बाध्य नहीं।"

उत्तर 12. ततांँरा और वामीरो के इस त्यागपूर्ण बलिदान से निकोबार में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। निकोबार के निवासी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध स्थापित करने लगे। ततांँरा वामीरो का यह बलिदान शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए था। यही कारण है कि आज यह कथा वहाँ घर-घर में सुनाई जाती है।

उत्तर 13. निकोबार के लोगों द्वारा ततांँरा को पसंद किए जाने का कारण था उसकी उदारता, उसका आकर्षक और सुंदर व्यक्तित्व तथा शक्ति संपन्नता। वह स्वभाव से नेक और सदा सबकी मदद करने के लिए तत्पर रहता था। वह अपने गाँव वालों की ही नहीं वरन समस्त द्वीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। इसीलिए पूरे द्वीपवासी उससे बेहद प्रेम करते थे।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'ततांँरा-वामीरो कथा' पाठ के आधार पर ततांँरा का चरित्र चित्रण इस प्रकार है-

- ततांँरा इस कथा का नायक है जो सर्वगुण संपन्न है। इसमें वे सभी गुण मौजूद हैं जो एक नायक में होने चाहिए।
- ततांँरा एक सुंदर और शक्तिसंपन्न युवक है। उसकी बलिष्ठता की अर्मक कहानियाँ द्वीप में प्रचलित हैं।
- ततांँरा एक नेकदिल, मददगार और दयावान व्यक्ति है। वह सबके सुख-दुख में शरीक होने के लिए तत्पर रहता है।
- ततांँरा केवल अपने गाँव की ही नहीं बल्कि पूरे द्वीपवालों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता है। वह सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता है। जो भी कठिनाई के समय उसे स्मरण करते हैं, उनकी सहायता के लिए वह पहुँच जाता है। उसके इसी सद्व्यवहार के कारण दूसरे गाँवों के लोग भी अपने पर्व-त्योहारों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करते हैं। उसके आत्मीय स्वभाव के कारण लोग उसे बहुत पसंद करते हैं।

उत्तर 2. जब लिटिल अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े हुए थे, तब वहाँ दो प्रेमी युगल ततांँरा और वामीरो रहते थे। ततांँरा पासा गाँव का रहने वाला था और वामीरो लपाती गाँव की थी। ततांँरा अपने उदार स्वभाव, सुंदर व्यक्तित्व और शक्तिशाली होने के कारण पूरे द्वीप में प्रसिद्ध था। पूरे द्वीपवासी उससे प्रेम करते थे और वह पूरे द्वीप की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। ततांँरा और वामीरो आपस में प्रेम-सूत्र में बँध गए। उस समय वहाँ की प्रथा थी कि एक गाँव का युवक अपने गाँव की युवती से संबंध स्थापित कर सकते थे। वामीरो और ततांँरा के प्रेम के बीच यह प्रथा दीवार बन गई। जो अंत में इन दोनों प्रेमियों का बलिदान लेकर ही वह कुप्रथा समाप्त हुई। आज भी वहाँ ततांँरा-वामीरो की प्रेम कथा घर-घर सुनाई जाती है।

उत्तर 3. रूढ़ियों और परंपराओं का बंधन प्रेम की राह में बाधा नहीं बन सकते क्योंकि प्रेम सबको जोड़ने का कार्य करता है जबकि घृणा आपस में दूरी पैदा करती है। इन रूढ़ियों और परंपराओं की दीवार ढहाने के लिए त्याग और बलिदान की आवश्यकता पड़ती है। जो व्यक्ति समाज के लिए अपने प्रेम का, अपने जीवन तक का बलिदान करता है, समाज उसे न केवल याद करता है, बल्कि उसके बलिदान को व्यर्थ भी नहीं जाने देता। प्रस्तुत पाठ में ततांँरा-वामीरो का एक कुप्रथा को समाप्त करने के लिए दिया गया बलिदान इस कथन की पुष्टि करता है। इसी बलिदान के कारण ये दोनों प्रेमी युगल कार-निकोबार के घर-घर के आदर्श बनकर स्मरणीय हैं और उस प्रथा का उन्मूलन करने में भी सफल हुए।

उत्तर 4. निकोबार द्वीप समूह के विभक्त हो जाने में निकोबारियों का विश्वास है कि तताँरा का उस रूढ़ि और परंपरा के विरुद्ध आक्रोश का परिणाम था जो दो प्रेमियों के मिलन में बाधक बन रही थी। तताँरा को जहाँ विवाह की निसंध परम्परा पर क्षोभ था, वहीं अपनी असहायता पर भी। वामीरो का दुख उसे और गहरा कर रहा था। अंतत: तताँरा अपनी तलवार म्यान से निकाली और पृथ्वी में घोंप दी और अपनी पूरी शक्ति से एक रेखा खींच दी। कुछ देर में ही उस रेखा पर दरार पड़ने लगी और थोड़ी देर में धरती गड़गड़ाहट से फटने लगी। द्वीप दो भागों में विभक्त हो चुका था। एक तरफ़ तताँरा था, दूसरी तरफ़ वामीरो। इस प्रकार निकोबारियों को विश्वास है कि निकोबार द्वीप समूह के विभक्त होने में तताँरा-वामीरो का न मिल पाना ही है।

उत्तर 5. तताँरा दिन भर के अथक परिश्रम के बाद टहलने के लिए समुद्र के किनारे पहुँचा, उस समय वहाँ का प्राकृतिक दृश्य बहुत मनोहारी था। सायंकालीन सूर्य समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने वाला था। समुद्र से सायंकाल में बहने वाली शीतल मंद हवा का झोंका आ रहा था जो मन को अद्भुत शान्ति प्रदान कर रहा था। पक्षियों की चहचहाटें धीरे-धीरे शांत होती जा रही थीं। प्रकृति के इस मनोरम वातावरण में उसका मन शांति की अनुभूति कर रहा था। इस समय विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहार रहा था कि तभी पास कहीं से मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया।

उत्तर 6. वामीरो से मिलने के बाद तताँरा के जीवन में अद्भुत परिवर्तन हुआ। उसका शांत जीवन वामीरो के बिना अशांत हो उठा। उसके जीवन में ऐसा पहली बार हुआ था। वह इस आकस्मिक परिवर्तन से आश्चर्यचकित भी था और रोमांचित भी। तताँरा और वामीरो प्रतिदिन लपाती की उसी समुद्री चट्टान पर मिलते, एक-दूसरे को मूर्तिवत निर्निमेष देखते। उनके भीतर समर्पण अनवरत गहरा रहा था।

उत्तर 7. प्राचीनकाल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए अनेक प्रकार के पर्व आयोजित किए जाते थे। उन्हीं पर्वों में से एक पर्व था 'पशु पर्व'। इस पर्व का आयोजन अंदमान कार-निकोबार आदि में किया गया। पशुपर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं के प्रदर्शन के साथ-साथ, पशुओं से युवकों की शक्ति परीक्षा की प्रतियोगिता भी होती है। इस प्रतियोगिता में वर्ष में गाँव के सभी लोग हिस्सा लेते हैं। प्रतियोगिता समाप्ति के बाद नृत्य-संगीत का आयोजन होता है जो भोजन के साथ समाप्त होता है। यह प्रतियोगिता बहुत लोम-हर्षक होती है। पशुओं के साथ शक्ति प्रदर्शन बहुत खतरनाक होता है।

उत्तर 8. रूढ़ियाँ और परंपराएँ कभी-कभी राष्ट्र और समाज के विकास में बाधक बन जाती हैं और एक बोझ लगने लगती हैं। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर इनका टूट जाना ही हित कर होता है। प्रस्तुत पाठ तताँरा-वामीरो कथा भी रूढ़िगत परंपराओं पर आधारित है जिसको तोड़ने के लिए तताँरा-वामीरो को आत्मबलिदान देना पड़ा। उन दिनों कार-निकोबार में प्रथा थी कि एक ही गाँव का युवक उसी गाँव की युवती से प्रेम संबंध स्थापित कर सकता था। तताँरा और वामीरो में आपस में प्रगाढ़ प्रेम होने पर भी एक गाँव का न होने के कारण दोनों एक न हो सके।

पाठ-4

तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) राजकपूर ने शैलेंद्र की फ़िल्म में तन्मयता के साथ काम इसलिए किया क्योंकि शैलेंद्र उनके अनन्य सहयोगी थे और उन्होंने उनकी भावनाओं को शब्द दिए थे।

उत्तर (ii) जब शैलेंद्र ने राजकपूर को तीसरी कसम कहानी सुनाई तो उन्हें वह कहानी बेहद पसंद आई। राजकपूर ने बड़े उत्साहपूर्वक काम करना स्वीकार कर लिया लेकिन फ़ौरन पारिश्रमिक एडवांस देने की बात कही। ज़िंदगी भर की दोस्ती का बदला राजकपूर ऐसे लेंगे शैलेंद्र को उम्मीद न थी। इसलिए उनका चेहरा मुरझा गया था।

उत्तर (iii) शैलेंद्र एक आदर्शवादी भावुक कवि थे, जिसे अपर संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) तीसरी कसम को प्रदर्शित करने के लिए बमुश्किल वितरक इसलिए मिले क्योंकि इस फ़िल्म की संवेदना दो से चार

बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी। उसमें रची-बसी करुणा तराज़ू पर तौली जा सकने वाली चीज़ नहीं थी। यही कारण है कि जब फ़िल्म रिलीज़ हुई तो इसका कोई प्रचार नहीं हुआ।

उत्तर (ii) तीसरी कसम फ़िल्म में राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे सितारे थेद्य शंकर जयकिशन का संगीत था, जिनकी लोकप्रियता उन दिनों सातवें आसमान पर थी।

उत्तर (iii) इस फ़िल्म की संवेदना दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी। इसमें जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफ़ा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस कहानी में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तोला जा सकता था।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) फ़िल्म इंडस्ट्री के तौर-तरीकों में उलझकर शैलेंद्र अपनी आदमियत नहीं खोना चाहते थे।

उत्तर (ii) लोकप्रियता को लेकर शैलेंद्र के विचार किसी भी तरह के परिवर्तन के लिए तैयार नहीं था। उन्होंने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया। उनका मानना था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में उथलेपन को उनपर नहीं थोपना चाहिए, बल्कि कलाकार को उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करना चाहिए।

उत्तर (iii) शैलेंद्र के जीवन तथा गीतों में निम्नलिखित विशेषताएँ समान रूप से दिखाई देती हैं।

गीतकार शैलेंद्र अपने जीवन में गंभीर और शांत व्यक्तित्व रहे हैं। वे गीतकार के साथ कवि हृदय भी रखते थे इसलिए उनके गीतों में भाव प्रवणता होती थी। वे आदमियत की महत्ता को समझते थे इसलिए उनके गीतों में संवेदना होती थी दुरूहता नहीं। वे धरती से जुड़े व्यक्ति थे यही कारण है कि उनके गीतों में लोकजीवन तत्व मौजूद है। उनके प्रेरक व्यक्तित्व की भांति उनके गीतों में बसी करुणा में भी प्रेरणा होती है जो उत्साहित करती है।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) 'तीसरी कसम' फ़िल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को हु-ब-हु दर्शाया है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फ़िल्म में पूरी तरह से दिखाई गई है।

उत्तर (ii) हीराबाई के अभिनय में सूक्ष्मताओं का स्पंदन था। वहीदा रहमान ने हीराबाई की भूमिका निभाई थी। वह एक नौटंकी की बाई थी। हीरामन के पूछने पर कि 'मन समझती हैं न आप?', उसपर हीराबाई का आँखों से बोलना, दुनियाभर के शब्द उस भाषा को अभिव्यक्त नहीं कर सकते थे। अपने सहज अभिनय से ग्रामीण के किरदार में जान फूँक दी है।

उत्तर (iii) हीरामन स्वभावतः मस्त मौला एवं सरल हृदय है। उसका उकडू बैठना, एक नौटंकी की बाई में अपनापन खोजना, गीत गाता गाड़ीवान आदि देहाती मासूमियत को चरम सीमा तक ले जाते हैं।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) हमारी फ़िल्मों की मुख्य कमज़ोरी उसमें लोक-तत्व का अभाव है।

उत्तर (ii) जब फ़िल्म में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन होता है तो उन्हें ग्लोरीफाई किया जाता है। वहाँ दु:ख का ऐसा वीभत्स रूप प्रस्तुत होता है जो दर्शकों का भावनात्मक शोषण कर सके।

उत्तर (iii) तीसरी कसम दु:ख को भी सहज स्थिति में, जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत करती है। यह इसकी खास बात थी।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) लेखक ने शैलेंद्र को कवि इसलिए कहा क्योंकि सिनेमा की चकाचौंध के बीच रहते हुए यश और धन-लिप्सा से कोसों दूर रहकर उन्होंने एक ऐसी फ़िल्म बनाई थी जिसे सिर्फ़ एक सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था। इतनी भावुकता केवल एक कवि के हृदय में ही हो सकती है।

उत्तर (ii) शैलेंद्र के गीत मनुष्य को जीवन में दुखों से घबराकर रुकने के स्थान पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देते हैं। लेखक ने उनके गीतों को शांत नदी के प्रवाह और समुद्र की गहराई से संबोधित किया है।

उत्तर (iii) शैलेंद्र की व्यथा में आदमी का पराजित होना शामिल नहीं है बल्कि आगे बढ़ने का संदेश निहित है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'तीसरी कसम' फ़िल्म राष्ट्रपति स्वर्णपदक से सम्मानित, बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार, मास्को फ़िल्म फेस्टिवल में भी यह पुरस्कृत हुई है।

उत्तर 2. तीसरी कसम फ़िल्म का निर्माण शैलेंद्र ने किया। उन्होंने अपने जीवन में सिर्फ़ एक ही फ़िल्म का निर्माण किया।

उत्तर 3. राजकपूर कला-मर्मज्ञ एवं आँखों से बात करनेवाले एक कुशल नायक थे।

उत्तर 4. 'तीसरी कसम' फ़िल्म को सैल्यूलाइड पर लिखी कविता अर्थात कैमरे की रील में उतारकर चित्रांकित करना इसलिए कहा गया है क्योंकि यह वह फ़िल्म है, जिसने हिंदी साहित्य की एक अत्यंत मार्मिक रचना को सैल्यूलाइड पर सार्थकता के साथ उतारा, इसलिए यह मात्र एक फ़िल्म नहीं, बल्कि सैल्यूलाइड पर लिखी कविता भी थी।

उत्तर 5. शोमैन का शाब्दिक अर्थ है– प्रसिद्ध प्रतिनिधि एवं आकर्षक व्यक्तित्व। एक ऐसा व्यक्ति जो अपने कला-गुण, व्यक्तित्व तथा आकर्षण के कारण सभी जगह प्रसिद्ध हो। राजकपूर भी अपने समय के एक महान फ़िल्मकार थे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'संगम' फ़िल्म से राजकपूर को अद्भुत सफलता मिली। इसी से उत्साहित होकर उन्होंने एक साथ चार फ़िल्मों के निर्माण की घोषणा कर दी। इन फ़िल्मों के नाम–अजंता, मैं और मेरा दोस्त, मेरा नाम जोकर, सत्यम् शिवम् सुंदरम् हैं।

उत्तर 2. राजकपूर ने शैलेंद्र की फ़िल्म 'तीसरी कसम' में पूरी तन्मयता के साथ कार्य किया। उन्होंने इस काम के बदले किसी प्रकार के पारिश्रमिक की अपेक्षा नहीं की। उन्होंने सिर्फ़ एक रुपया एडवांस लेकर काम किया और अपनी मित्रता का निर्वहन किया।

उत्तर 3. गीतकार एवं फ़िल्मकार शैलेंद्र एक सहृदय कवि थे। वे धनलोलुप बिलकुल नहीं थे, तीसरी कसम बनाने के पीछे की भी उनकी मंशा यश या धनलिप्सा नहीं थी। उन्होंने सिर्फ़ आत्मसंतुष्टि के लिए फ़िल्म बनाई।

उत्तर 4. 'तीसरी कसम' साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु की रचना 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। इस फ़िल्म में मूल कहानी के स्वरूप को बदला नहीं गया। कहानी की छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी बारीकियों पर गौर करते हुए उसे बिलकुल उसी तरह फ़िल्म में उतारा गया था। साहित्य की मूल आत्मा को पूरी तरह से सुरक्षित रखा गया था। नि:संदेह 'तीसरी कसम' ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है।

उत्तर 5. उदार चरित वाला व्यक्ति सरल हृदय का होता है। हीरामन के स्वभाव के आधार पर कहा जाए तो वह भी एक सरल साधारण हृदय वाला देहाती गाड़ीवान है। वह नौटंकी की बाई में अपनापन खोजता है। वह दिमाग की नहीं दिल की जुबान को समझता है। उसके लिए विशुद्ध प्रेम ही सर्वोत्तम है। हीरामन धन की चकाचौंध से बिलकुल विलग संवेदनशील भावनाओं से ओतप्रोत व्यक्तित्व है।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. शैलेंद्र एक कवि होने के साथ एक सफल गीतकार भी थे। उनके लिखे गीतों में कई विशेषताएँ दिखाई देती हैं। उनके गीत सरल, सहज और प्रवाहमयी भाषा में होने के बावजूद भी गहन अर्थ को खुद में समाहित किए हुए हैं। वे एक आदर्शवादी संवेदनशील कवि थे और उनका यही स्वभाव उनके गीतों में भी यदा-कदा झलकता था। बनावटी और दिखावे की प्रवृत्ति से सदैव दूर रहे हैं। उनके गीतों में भावों की प्रधानता थी और वे जनसाधारण के कवि थे। उनके गीतों में करुणा के साथ-साथ संघर्ष की भावना का मेल था। उनके गीत मनुष्य को हारकर रुकने के स्थान पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देते हैं। अंततः कहा जा सकता है कि उनके गीतों में शांत नदी-सा प्रवाह तो है, परंतु उसकी गहनता समुद्र-सी है। गीत में शामिल एक-एक शब्द भावनाओं की अभिव्यंजना करने में पूर्णत: सक्षम है।

उत्तर 2. प्रस्तुत पाठ के अनुसार, शैलेंद्र ने अपने जीवन में मात्र एक ही फ़िल्म का निर्माण किया। 'तीसरी कसम' ही उनकी पहली व अंतिम फ़िल्म के रूप में जानी जाती है। 'तीसरी कसम' फ़िल्म को निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है–

- मास्को फ़िल्म फेस्टिवल में भी पुरस्कृत।
- राष्ट्रपति स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया।
- बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

उत्तर 3. सच्चा मित्र होने के नाते राजकपूर शैलेंद्र को उनकी फ़िल्म तीसरी कसम की असफलता से परिचित करा चुके थे। राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म शैलेंद्र की पहली फ़िल्म है और वह कदापि नहीं चाहते थे कि शैलैंद्र के फ़िल्मी जगत की शुरुआत असफलता का स्वाद चख कर हो। परंतु शैलेंद्र तो एक सज्जन भावनाओं में बहने वाला कवि था, जिसको न तो

अधिक धन-संपत्ति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। 'तीसरी कसम' की मुख्य कहानी में जो भावनाएँ थी वे शैलेंद्र के दिल को छू गई थी और वे इस फ़िल्म को बनाने का मन बना चुके थे।

उत्तर 4. 'तीसरी कसम' हिंदी फ़िल्म जगत की एक सार्थक और उद्देश्यपरक फ़िल्म है, जिसका निर्माण प्रसिद्ध गीतकार एवं फ़िल्मकार शैलेंद्र ने किया। इस फ़िल्म में राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे प्रसिद्ध सितारों का लाजवाब अभिनय था। अपने समय के मशहूर संगीतकार शंकर जयकिशन का संगीत था जिनकी लोकप्रियता उस समय घर-घर थी। फ़िल्म के प्रसारण के पहले ही इसके सभी गीत लोकप्रिय हो चुके थे। इसके बाद भी इस फ़िल्म का कोई वितरक न था। यह फ़िल्म कब आई और कब चली गई मालूम ही न पड़ा, इसलिए ऐसी फ़िल्में बनाना जोखिमपूर्ण कार्य है।

उत्तर 5. 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पंक्ति के दसों दिशाओं पर संगीतकार शंकर जयकिशन ने आपत्ति जताई थी। उनका मानना था कि जन मानस तो सिर्फ़ चार दिशाएँ ही जानता-समझता है, दस दिशाएँ नहीं। इसका प्रभाव फ़िल्म और गीत की लोकप्रियता पर पड़ने की आशंका से उन्होंने ऐसा किया।

उत्तर 6. एक निर्माता जब फ़िल्म बनाता है तो उसका लक्ष्य होता है फ़िल्म अधिकाधिक लोगों को पसंद आए और लोग उसे बार-बार देखें। फ़िल्म का प्रचार इस प्रकार किया जाता है ताकि फ़िल्म कई वर्षों तक परदे पर चलें। तभी उससे अच्छी आय तथा लाभ की प्राप्ति होगी। इसके लिए वे तमाम तरह के हथकंडे अपनाते हैं फिर भी फ़िल्म नहीं चलती और वे चक्कर खा जाते हैं।

उत्तर 7. शैलेंद्र ने अपने जीवन में एक ही फ़िल्म का निर्माण किया, जिसका नाम 'तीसरी कसम' था। कवि और गीतकार ने जब फणीश्वर नाथ रेणु की अमर कृति 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' को सिनेमा परदे पर उतारा तो ये फ़िल्म मील का पत्थर सिद्ध हुई अर्थात इस फ़िल्म की जगह कोई दूसरी फ़िल्म नहीं ले पाई। आज भी इतने साल बीत जाने के बाद भी इस फ़िल्म को हिंदी फ़िल्म जगत की कुछ खास अमर फ़िल्मों में याद किया जाता है। इस फ़िल्म ने न सिर्फ़ अपने गीत, संगीत और कहानी के बलबूते पर शौहरत कमाई बल्कि इस फ़िल्म में उस ज़माने के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर ने अपनी सभी फ़िल्मों से ज़्यादा बेहतरीन एक्टिंग करके सभी को आश्चर्य में डाल दिया। फ़िल्म की हीरोइन वहीदा रहमान ने भी वैसी ही एक्टिंग की जैसी सबको उनसे उम्मीद थी। यह एक संवेदनात्मक और भावनापूर्ण फ़िल्म थी। इसमें शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई थी। इसलिए शैलेंद्र द्वारा बनाई गई फ़िल्म सिनेमा जगत में चली।

उत्तर 8. 'तीसरी कसम' फ़िल्म में राजकपूर ने 'हीरामन' और वहीदा रहमान ने 'हीराबाई' की भूमिका निभाई। जिस समय फ़िल्म 'तीसरी कसम' के लिए राजकपूर ने काम करने के लिए हामी भरी थी उस समय वे अभिनय के लिए प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हो गए थे। फ़िल्म में राजकपूर ने 'हीरामन' नामक देहाती गाड़ीवान की भूमिका निभाई थी। फ़िल्म में राजकपूर का अभिनय इतना सशक्त था कि हीरामन में कहीं भी राजकपूर नज़र नहीं आए। इसी प्रकार छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी 'हीराबाई' का किरदार निभा रही वहीदा रहमान का अभिनय भी लाजवाब था जिन्होंने हीरामन की बातों का जवाब जुबान से नहीं आँखों से देकर वह सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की जिसे शब्द नहीं कह सकते थे। इस प्रकार कह सकते हैं कि फ़िल्म 'तीसरी कसम' में राजकपूर और वहीदा रहमान के लाजवाब अभिनय ने फ़िल्म को जीवंतता प्रदान की है।

पाठ-5

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) लश्कर नूह नाम के एक पैगंबर थे जिसका जिक्र बाइबिल और अन्य पावन ग्रंथों में मिलता है। उन्होंने एक बार एक घायल कुत्ते को दुत्कारते हुए कहा– दूर हो जा गंदे कुत्ते! कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया–हमें इस तरह क्यों दुत्कारते हो? न मैं अपनी मरज़ी से कुत्ता बना हूँ और न तुम अपनी पसंद से इनसान। बनाने वाला तो सबको वही एक है। कुत्ते की बात सुनकर उसे पश्चाताप हुआ और वे सारी उम्र रोते रहे।

उत्तर (ii) लशकर द्वारा घायल गंदे कुत्ते को दुत्कारने के बाद कुत्ते ने उन्हे जो जवाब दिया, वह हृदय चक्षु को खोलने वाला था। उसने कहा–हमें क्यों दुत्कारते हो! न मैं अपनी इच्छा से कुत्ता हूँ, और न तुम अपनी इच्छा और पसंद से मनुष्य हो। बनाने वाला सबको तो परम पिता परमेश्वर एक ही हैं। कुत्ते की यह हृदयग्राही बात सुन नूह (लश्कर) की प्रज्ञा जागृत हुई। उसके जवाब से यह सीख मिलती है कि सभी जीव परम पिता परमेश्वर द्वारा ही बनाए गए हैं अत: किसी से घृणा नहीं करनी चाहिए।

उत्तर (iii) नूह के लकब ने कुत्ते को इसलिए दुत्कारा था कि इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) दुनिया कैसे अस्तित्व (वजूद) में आई? पहले क्या थी? किस बिंदु से इसकी यात्रा शुरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है तो धार्मिक ग्रंथ अपनी तरह से। परंतु इस दुनिया की रचना चाहे जैसे भी हुई हो परंतु इस पर पशु-पक्षी, मानव, नदी, पर्वत, समुद्र आदि सबको समान अधिकार है।

उत्तर (ii) मानव द्वारा अपनी बुद्धि से दीवारें खड़ी करने का परिणाम यह हुआ कि जो पूरा संसार पहले एक दीवार के समान था, अब वह अनेक टुकड़ों में विभक्त होकर एक-दूसरे से दूर हो गया है। आज समाज में राग और द्वेष में वृद्धि मनुष्य के बुद्धिमान हो जाने का ही परिणाम है। पहले लोगों के हृदय विशाल थे तब एक दालानों-आँगनों में सभी मिल-जुलकर रह लेते थे लेकिन जब से हृदय संकुचित होने लगे हैं और दिमाग में वृद्धि हुई है, लोग डिब्बे जैसे छोटे घरों में सिकुड़ने लगे हैं।

उत्तर (iii) जैसे-जैसे हम आपसी प्रेम-सौहार्द से दूर होते जा रहे हैं हमारी सोच, संकुचित होती जा रही है और पारिवारिक रिश्ते कम होते जा रहे हैं।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) आज मनुष्य विज्ञान अर्थात मस्तिष्क को ही सर्वोपरि मानने लगा है और प्रकृति को नज़रअंदाज़ करता जा रहा है। लेखक इस गद्यांश में इसी बात की ओर संकेत करते हुए कह रहा है कि मानव बढ़ती हुई आबादी को देख अपने बुद्धिबल से कई सालों से समुद्र को पीछे धकेलता जा रहा था। अनेक बिल्डर वहाँ ऊँचे-ऊँचे भवन खड़े करने में लग गए। समुद्र मनुष्य के इन क्रियाकलापों के समक्ष नतमस्तक हो पहले तो पैर समेटा, फिर उकड़ूँ बैठ गया। मनुष्य इतने पर भी संतुष्ट नहीं हुआ। अंततः समुद्र खड़ा हो गया। इस पर भी उसे संतोष नहीं हुआ।

उत्तर (ii) जब बिल्डरों की ज़्यादती नहीं रुकी और समुद्र को खड़ा रहने की भी जगह नहीं बची तो वह क्रुद्ध हो उठा। यह सिद्धांत है कि जो जितना बड़ा होता है उसे गुस्सा भी उतना ही कम आता है परंतु जब आता है तो उसे रोकना मुश्किल हो जाता है। यही हुआ। उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को बच्चों की गेंद के समान तीन दिशाओं में फेंक दिया और यह सिद्ध कर दिया कि प्रकृति के साथ विज्ञान का सामंजस्य हितकर है।

उत्तर (iii) समुद्र ने तीसरे जहाज़ को गेट-वे-ऑफ़ इंडिया पर फेंक दिया जो टूट-फूटकर सैलानियों का नज़ारा बना।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) मकान के दालान के रोशनदान में कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना रखा था और उसमें दो अंडे दे रखे थे। एक बार एक बिल्ली ने उचककर दोनों अंडों में से एक को तोड़ दिया। लेखक की माँ ने जब यह दृश्य देखा तो उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने दूसरे अंडे को बचाने का बहुत प्रयत्न किया परंतु दूसरा अंडा उनकी असावधानी से टूट गया।

उत्तर (ii) लेखक की माँ द्वारा भी एक अंडा टूट जाने से वह बहुत दुखी हो गई। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनके दुख देख लेखक की माँ रोने लगीं। उन्होंने अनजाने में अपने द्वारा हुए गुनाह माफ़ करने के लिए दिन भर रोजा (उपवास) रखा। वे दिनभर रोती रहीं और बार-बार नमाज पढ़कर खुदा (ईश्वर) से अपने द्वारा अनजाने में हुए अपराध के लिए क्षमा माँगती रहीं।

उत्तर (iii) माँ द्वारा अपनी गलती के लिए खुदा से माफ़ी माँगने का उद्देश्य प्रायश्चित रहा होगा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. लेखक का घर ग्वालियर शहर में था।

उत्तर 2. कबूतर परेशानी में इधर-उधर इसलिए फड़फड़ा रहे थे क्योंकि उनके दोनों अंडे गिरकर टूट गए थे।

उत्तर 3. बिल्डरों द्वारा समुद्र को पीछे धकेलने का उद्देश्य था-वहाँ बड़े-बड़े भवन बनाना।

उत्तर 4. अब जीवन छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों में सिमटने लगा है।

उत्तर 5. चींटियों ने सोलोमेन जिन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है, के लिए दुआ की।

उत्तर 6. बाइबिल के सोलोमेन को कुरआन में सुलेमान कहा गया है।

उत्तर 7. नूह नामक पैगंबर का ज़िक्र बाइबिल और दूसरे पवित्र ग्रंथों में मिलता है।

उत्तर 8. नूह का असली नाम लश्कर था।

उत्तर 9. लेखक की लाइब्रेरी में घुसकर कबीर या मिर्ज़ा गालिब को वे कबूतर सताने लगते हैं जिन्होंने लेखक के फ्लैट के मचान में घोंसला बना लिया था।

उत्तर 10. क्योंकि इन कबूतरों द्वारा रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर लेखक की पत्नी ने उनके आशियाने की जगह पर एक जाली लगा दी थी और उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. जब सोलोमेन ने चीटियों द्वारा यह कहते सुना कि–सभी चींटियाँ अपनी-अपनी बिलों में चलें, बहुत बड़ी फ़ौज आ रही है तब सोलोमेन अपनी फ़ौज को रोककर चींटियों से बोले–"घबराओ नहीं, सोलोमेन को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। वह किसी के लिए भी मुसीबत नहीं है, सबके लिए प्यार-मुहब्बत है।"

उत्तर 2. नूह के लकब ज़िंदगी भर रोते रहे। रोने का कारण था एक घायल कुत्ता। एक बार नूह के सामने से एक घायल गंदा कुत्ता निकला। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा–"दूर हो जा गंदे कुत्ते। इस्लाम धर्म में कुत्तों को गंदा कहा गया है।" कुत्ते ने नूह की दुत्कार सुनकर उन्हें जवाब दिया–"न मैं अपनी मरज़ी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। सबको बनाने वाला तो वही एक है।" कुत्ते की ज्ञानपरक बातें सुन नूह को आत्मबोध हुआ और अपने कृत्य पर उम्र भर रोते रहे।

उत्तर 3. पौराणिक कथा यह बताती है कि महाभारत संग्राम समाप्त होने के बाद हस्तिनापुर का राज्य परीक्षित को सौंपने के उपरांत युधिष्ठिर अपने चारों भाइयों व पत्नी द्रौपदी के साथ हिमालय पर चले गए। जैसे-जैसे लोग आगे बढ़ते गए एक-एक कर वे बर्फ में समाप्त हो गए। अंत में बचे युधिष्ठिर और उनके साथ एक श्याम वर्ण कुत्ता। प्रस्तुत पाठ के लेखक ने उसी का वर्णन किया है। यही कुत्ता युधिष्ठिर का अंतिम साथी था।

उत्तर 4. संसार के विषय में आज के मनुष्य और लेखक के विचारों में बहुत अंतर है। आज का मनुष्य संसार के उद्भव और विकास को विज्ञान के नज़रिए से देखता है लेकिन लेखक का मानना है कि संसार की रचना, उद्भव, विकास चाहे जैसे भी हुआ हो परंतु यह पृथ्वी किसी एक की नहीं है। इस पर पशु, पक्षी, जीव-जंतु, नदी-पर्वत, समुद्र आदि सबकी बराबर हिस्सेदारी है। आज विज्ञान पर निर्भर मानव ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। वह अपने बुद्धि के बल पर प्रकृति को भी बदलने लगा है।

उत्तर 5. लेखक के अनुसार धरती पर पशु-पक्षी, मानव, नदी, पर्वत, समुद्र आदि सबकी हिस्सेदारी है परंतु मनुष्य जाति ने इस हिस्सेदारी में अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी करने लगा है एक समय था कि एक ही घर के छत के नीचे पूरे परिवार का बसर हो जाता था, अब घर छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों में सिमटने लगा है। देश की बढ़ती आबादी समुद्र को भी पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों का उन्मूलन; बढ़ते हुए प्रदूषण ने पक्षियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूदों के प्रयोग ने वातावरण को दूषित कर दिया है। अब गरमी में अधिक गर्मी, बेवक्त की बाढ़, जलजला, तूफ़ान और नये-नये रोग मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं।

उत्तर 6. यह निर्विवाद सत्य है कि देश की बढ़ती हुई आबादी पर्यावरण प्रदूषण के लिए सबसे अधिक ज़िम्मेदार है। बढ़ती हुई आबादी से वन उन्मूलन को बढ़ावा मिला है। वनोन्मूलन अवर्षण को जन्म देता है। बढ़ती आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उद्योगों की स्थापना। उद्योगों से निःसृत होने वाले अपशिष्ट पदार्थों का प्रवाहित होना जल और वायु प्रदूषण का कारण है। उद्योग-धंधों से निकलने वाले धुएँ वातावरण को प्रदूषित करते हैं। इस प्रकार देश की बढ़ती जनसंख्या और आबादी प्रदूषण के लिए पूर्ण रूप से ज़िम्मेदार हैं।

उत्तर 7. मनुष्य के अत्याचार से क्रोधित प्रकृति अनेक प्रकार से अपना भयंकर रूप दिखाती है। जैसे-जैसे मनुष्य ने प्रकृति पर अत्याचार करना प्रारंभ किया गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, जलजला, बाढ़, भयंकर तूफ़ान, नित नये-नये रोग उत्पन्न होकर मनुष्य को अपना भयंकर रूप दिखाना प्रारंभ कर दिया। प्रकृति की सहनशक्ति की भी एक सीमा होती है। इसका जीता-जागता एक उदाहरण है कुछ साल पहले मुंबई में घटित एक घटना।

उत्तर 8. मुंबई में कई सालों से प्रकृति का मज़ाक उड़ाते हुए अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए समुद्र को पीछे धकेलते जा रहे थे और बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी करते जा रहे थे। समुद्र ने पहले तो अपनी फैली हुई टाँगों को समेटा, फिर थोड़ा सिमट कर बैठ गया। फिर भी बिल्डर नहीं माने। जगह कम पड़ी तो उकडूँ बैठ गया। अंततः वह खड़ा हो गया। जब इस पर भी बिल्डर नहीं माने तो उसे गुस्सा आ गया और एक रात समुद्र ने अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को बच्चों की गेंद के समान उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समुद्र के किनारे आकर गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधा गिरा। तीसरा गेट वे ऑफ़ इंडिया पर टूट-फूटकर पर्यटनों का नज़ारा बना।

उत्तर 9. अरब में लश्कर को नूह के नाम से इसलिए याद करते हैं क्योंकि वे सारी उम्र रोते रहे। उनके रोने का कारण था एक ज़ख्मी कुत्ता। हुआ यह कि एक बार नूह के सामने एक घायल गंदा कुत्ता गुजरा। नूह ने कुत्ते को दुत्कारते हुए कहा– 'दूर हो

जा गंदे कुत्ते!' इस्लाम धर्म में कुत्ते को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने नूह की दुत्कार सुनकर बोला– "न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका वही तो एक है।– मिट्टी से मिट्टी मिले, खो के सभी निशान। किसमें कितना कौन है, कैसे हो पहचान।" नूह ने कुत्ते की यह बात सुनी और दुखी हो जीवन भर रोते रहे।

उत्तर 10. लेखक की माँ का कहना था कि सूर्यास्त के समय आँगन में लगे पौधों या वृक्षों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। ऐसा करने से पेड़ रोते हैं। हिंदू संस्कृति में भी कुछ पौधों के पत्ते संध्या समय तोड़ने के लिए निषेध है। कहा गया है कि पौधों में भी ईश्वर का अंश होता है।

उत्तर 11. प्रकृति में आए असंतुलन का परिणाम है–गरमी में ज़्यादा गरमी, बेसमय की बरसात, अतिवृष्टि-अनावृष्टि, जलजला (भूकंप), बाढ़ (सैलाब), तूफ़ान और नित नये-नये रोग। प्रकृति के इस असंतुलन का ज़िम्मेदार भी पूर्ण रूप से मानव ही है। आज संसार के किसी-न-किसी भाग में इस असंतुलन का परिणाम नित्य देखने को मिल रहा है। कहीं बाढ़ आ रही है, तो कहीं सुनामी आ रही है। इतना सब कुछ होने पर भी मनुष्य की आँखें नहीं खुल रही हैं।

उत्तर 12. लेखक की माँ ने पूरे दिन रोज़ा इसलिए रखा कि उनसे अनजाने ही कबूतर का एक बचा हुआ अंडा ज़मीन पर गिरकर टूट गया। एक अंडे को बिल्ली ने पहले ही तोड़ दिया था। उनसे कबूतर के जोड़े का दुख नहीं देखा जा रहा था। वह उनकी फड़-फड़ाहट देखकर रोने लगीं। वे अनजाने में हुए अपराध के प्रायश्चित के लिए दिन भर रोती रहीं और बार-बार नमाज़ पढ़ती रहीं।

उत्तर 13. लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक की दूरी में बहुत से बदलाव देखे हैं। प्रकृति भी बदली है, मनुष्य भी बदला है। अब धीरे-धीरे लोगों के मन से अपनापन का भाव समाप्त हुआ है। लेखक बताता है कि वार्सोवा में इस समय जहाँ उसका घर है, यहाँ पहले दूर तक जंगल था, पेड़ थे, अनेक प्रकार के परिंदे थे, जानवर थे। अब यहाँ समंदर के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों और जानवरों को बेघर कर दिया है। कुछ परिंदे शहर छोड़कर ही चले गए हैं।

उत्तर 14. 'डेरा डालने' का अर्थ है– अस्थायी रहने का स्थान बना लेना जिसके उजड़ने का कोई निश्चित समय नहीं है। ऐसा ही एक अस्थायी डेरा दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट के मचान में घोंसला डालकर बना लिया था। कबूतर के बच्चे अभी छोटे-छोटे थे। उनके खिलाने-पिलाने, परवरिश करने की ज़िम्मेदारी दोनों बड़े कबूतरों की थी। वे दिन में कई बार आते-जाते हैं और उनके आने-जाने से हमें परेशानी होती थी। कभी-कभी कोई चीज़ गिराकर तोड़ देते थे। कभी लाइब्रेरी में उत्पात करते थे। लेखक की पत्नी रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर उनके आशियाने के स्थान पर एक जाली लगा दी। उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर खामोश और उदास बैठे रहते हैं अब न तो अम्मा है जो रोज़ा रखे और न सुलेमान जो उनकी जुबान समझ उनका दुख बाँटें।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1 मनुष्य के हस्तक्षेप से पहले तो समुद्र मनुष्य की ज़्यादतियाँ को सहन करता रहा, वह इनके अनुसार ही सिमटता जा रहा था। पहले तो समुद्र ने अपनी फैली हुई टाँगें समेटी, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। जब मनुष्य को फिर भी जगह से संतोष नहीं हुआ तो वह उकड़ूँ बैठ गया। अंततः खड़ा हो गया। जब समुद्र को खड़े रहने की भी जगह कम पड़ने लगी तो उसे गुस्सा आ गया। यह सिद्धांत भी है कि जो जितना बड़ा होता है, उसे गुस्सा भी कम आता है। और जब गुस्सा आ जाता है तो उस पर नियंत्रण मुश्किल हो जाता है। और हुआ भी– एक रात समुद्र की लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को उठाकर तीन दिशा में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह गिरा। तीसरा गेट-वे-ऑफ़ इंडिया पर टूट-फूटकर सैलानियों का नज़ारा बना। फिर वे चलने-फिरने लायक न बन सके।

उत्तर 2. लेखक की माँ और उनकी पत्नी में प्रकृति और पशु-पक्षियों के प्रति दृष्टिकोण में विशाल अंतर है। लेखक की माँ उस श्रेणी की महिला हैं जिसके मन में दूसरों के प्रति दया, करुणा, प्रेम, सहानुभूति की प्रधानता थी। उनके जीवन का लक्ष्य परोपकार था। जीव जगत के प्रति दया थी। उनके मन में पेड़-पौधों के प्रति भी दया थी, श्रद्धा थी। वे उनमें भी जीवन की अनुभूति करती थीं। यही कारण है कि कबूतर के अंडे के टूट जाने पर उनके मन में अपराध बोध जागृत हो गया। जिसके प्रायश्चित के लिए वे दिन भर रोजा पर रहीं और अनेक बार नमाज अदा कर अपनी भूल के लिए क्षमा माँगती रहीं।

लेखक की पत्नी आज के सामाजिक परिवेश की सदस्य हैं जिनके लिए स्वहित सर्वोपरि है। दूसरों के सुख-दुख से कुछ भी लेना-देना नहीं है। आज के परिवेश में किसी दूसरे के सुख-दुख में दुखी होने की भावना का अभाव है। यही कारण है अपने मचान पर घोंसला बनाकर रहने वाले कबूतर युगल को बेघर करने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता।

उत्तर 3. प्रस्तुत पाठ 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' में लेखक ने धरती पर जन्म लेने वाले सबसे प्रबुद्ध, प्राणी मनुष्य की संवेदनहीनता को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। ईश्वर ने यह धरती उन समस्त जीवधारियों के लिए बनाई थी, जिसे उसने स्वयं जन्म दिया था। इन जीवधारियों में मनुष्य सबसे प्रबुद्ध था। ईश्वर ने उसे यह नेमत इसलिए बख्शी थी कि यह समस्त जीवधारियों का संरक्षण और संवर्धन करेगा। परंतु हुआ ठीक इसके विपरीत। आदमी नाम के इस अजीम करिश्मे

ने धीरे-धीरे समस्त धरती को अपनी जागीर बना लिया और इस पर रहने वाले तमाम जीवधारियों को दर-बदर कर दिया। आदमी को इतने से ही संतोष नहीं हुआ। आज वह स्वार्थ और महत्वाकांक्षा की पूर्ति में इतना अंधा हो गया है कि वह समस्त रिश्ते, संबंधों को त्याग अपनी ही प्रजाति को नष्ट करने पर तुल गया। अपनी जात के लोगों को बेदखल करने पर कटिबद्ध हो गया है। अब उसे न तो किसी के सुख-दुख की चिंता है न किसी को सहयोग करने की चिंता।

उत्तर 4. जब लेखक ग्वालियर से बंबई (मुंबई) गए थे, तब से आज के संसार में बहुत बदलाव आया है। बंबई स्थित वार्सोवा जहाँ लेखक का फ्लैट है, जब वह वहाँ गए थे, तब वहाँ बहुत दूर तक जंगल ही जंगल था। वहाँ अनेक प्रकार के वृक्ष थे, अनेक प्रजातियों के पक्षी और जानवर थे। अब इसी वार्सोवा में समुद्र के किनारे बहुत बड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इस प्रकार लेखक के देखते-देखते वार्सोवा में बहुत बदलाव आया है।

लेखक के देखते-देखते वार्सोवा में प्राकृतिक परिवर्तन ही नहीं हुआ है, लोगों के मन भी बदले हैं। सोच में भी बदलाव आया है। लेखक ने इसका वर्णन अपनी माँ और पत्नी के वैचारिक अंतर को व्यक्त करते हुए किया है।

उत्तर 5. प्रस्तुत पाठ 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' के आधार पर सुलेमान की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

सुलेमान को बाइबिल में सोलोमेन के नाम से जाना जाता है। सुलेमान एक बादशाह थे। उनमें वे सभी गुण और विशेषताएँ मौजूद थीं, जिन विशेषताओं को कुदरत ने धरती पर रहने वाले सभी प्राणियों को प्रदान की थी और जिसे मनुष्य जाति ने छिन्न-भिन्न कर दिया। सुलेमान एक इनसान परस्त बादशाह थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे मनुष्य के ही राजा नहीं थे, समस्त जीव जगत, पशु-पक्षी सबके राजा थे। उनमें सभी जीवों के प्रति संवेदनशीलता थी। वे सबकी भावनाएँ, सबकी भाषा समझते थे। सबके सुख-दुख से उनका सरोकार था। वे सबके रखवाले थे। आज के मानव की तरह विध्वंसक नहीं थे।

उत्तर 6. लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली इसलिए लगवानी पड़ी, क्योंकि लेखक के फ्लैट के एक मचान में दो कबूतरों ने अपना घोंसला बना लिया था। इस कबूतर युगल के दो बच्चे हैं जो अभी उड़ नहीं सकते। अत: उनके भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी उन्हीं दो कबूतरों पर है जिसके लिए उन्हें बार-बार घर के अंदर-बाहर आना-जाना पड़ता है। उनके आने-जाने से लेखक को भी परेशानी होती है। वे कभी-कभी घर का सामान भी तोड़ देते हैं। कभी लाइब्रेरी में घुसकर कबीर और मिर्ज़ा गालिब को भी सताने लगते हैं। इन परेशानियों से ऊब कर एक दिन लेखक की पत्नी ने उस स्थान पर जहाँ कबूतरों का आशियाना था, वहाँ एक जाली लगा दी तथा उनके बच्चों को दूसरे स्थान पर स्थापित कर दिया गया।

उत्तर 7. समुद्र के गुस्से की वजह थी, मनुष्य द्वारा बार-बार प्रकृति के क्रिया-कलापों में हस्तक्षेप करना, प्राकृतिक उपादनों के साथ ज़्यादती करना। मनुष्य ने अपने को ही सर्वोच्च मानते हुए कुदरत द्वारा उत्पन्न किए गए अन्य उपादानों-समुद्र, पर्वत आदि को सताना शुरू कर दिया। बढ़ती हुई आबादी के कारण मनुष्य ने समुद्र को पीछे धकेलना प्रारंभ कर दिया और खाली स्थान पर बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें बनाना शुरू कर दिया। समुद्र मनुष्य इस ज़्यादती को सहन करते हुए पहले तो अपनी टाँगें समेटी, फिर थोड़ा सिमटकर बैठ गया। मनुष्य फिर भी नहीं रुका। तब समुद्र उकड़ूँ बैठ गया। अंतत: वह खड़ा हो गया। जब समुद्र को खड़ा रहने की भी जगह नहीं मिली तो उसे गुस्सा आ गया। उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को गेंद के समान उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज़ वर्ली के किनारे गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट वे ऑफ़ इंडिया पर टूट कर सैलानियों का नज़ारा बना।

उत्तर 8. आज मनुष्य नयी-नयी वैज्ञानिक खोजों, अनुसंधानों के बलबूते प्रकृति पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में लगा है। वह शीत, ताप, अंतरिक्ष पर काफ़ी हद तक वर्चस्व स्थापित करने में सफलता पा लेने का दंभ करता है परंतु प्रकृति के एक ही झटके मनुष्य के दम्भ को चूर कर देते हैं। मनुष्य की विज्ञान जगत में इतनी गहरी पैठ होने के बावजूद प्राकृतिक तांडव को नियंत्रित कर पाने की बात तो दूर, उसका पूर्वानुमान लगाना भी संभव नहीं हो पाता। जब प्रकृति के विरुद्ध मनुष्य द्वारा की गई ज्यादती की समय सीमा टूट जाती है तो प्रकृति द्वारा किया गया तांडव बहुत विनाशकारी होता है। वही विनाशकारी तांडव कुछ वर्ष पहले बंबई में देखने को मिला। यह तांडव प्रकृति की सहन शक्ति की सीमा के टूटने का ही परिणाम था।

उत्तर 9. जो व्यक्ति जितना धीर और गंभीर होता है, उसमें उतनी ही सहनशक्ति होती है। गंभीर व्यक्ति विवेकवान होता है। विवेकवान व्यक्ति में विचार शक्ति की प्रबलता होती है। इसी प्रबल विचार शक्ति के कारण वह किसी विषय को गंभीरता से विचार करता है और जहाँ तक संभव होता है, उसका समाधान ढूँढ़ने का प्रयास करता है। प्रस्तुत पाठ में समुद्र ने भी, जहाँ तक संभव था, मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध ज़्यादतियों को नज़रअंदाज़ करता गया। यही समुद्र की भलमनसाहत थी, और जब मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध की जाने वाली ज़्यादती की सहन सीमा टूटी, प्रकृति ने अपने गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में प्रकट किया जो इतना डरावना था कि बंबई निवासी डर कर अपने-अपने ईश्वरों से प्रार्थना करने लगे।

उत्तर 10. प्रस्तुत पंक्तियों में 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के लेखक बताते हैं कि वार्सोवा, जहाँ इस समय लेखक का फ्लैट है, वहाँ पहले एक विशाल जंगल था जो दूर तक फैला था। जंगल में अनेक प्रकार के पशु-पक्षी थे। परंतु आज यहाँ समुद्र के किनारे एक लंबी-चौड़ी बस्ती बस गयी है। मनुष्य ने इस धरती को अपनी जागीर समझते हुए यहाँ के बहुत से

पशु-पक्षियों को उनके घर से बेघर करके इधर-उधर भटकने को विवश कर दिया है। इनमें से कुछ तो यह शहर ही छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होने यहीं आस-पास अस्थायी निवास बना लिया है।

उत्तर 11. प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में एक प्रबुद्ध व्यक्ति की जीवों के प्रति संवेदनशीलता को प्रकट किया गया है। शेख अयाज़ के पिता मन में एक चींटी के प्रति इतना अपनापन की सोच थी कि चींटों के अपने परिवार से बिछड़ जाने के कारण दूषित हो सामने रखा भोजन छोड़ कुएँ पर गए। आज का मनुष्य, मानवता से आखिर इतना क्यों दूर होता चला जा रहा है? अब क्यों दूसरे के दुख में दुखी होने वाले लोग नहीं हैं?

पाठ-6

पतझर में टूटी पत्तियाँ

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) व्यवहारवादी लोग सदैव सतर्क रहते हैं और प्रत्येक कदम उठाने से पूर्व लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम आगे बढ़ाते हैं। ये जीवन में सफल होते हैं और दूसरों से आगे भी निकल जाते हैं। परंतु विचारणीय यह है कि क्या ऐसे लोग ऊपर भी चढ़ते हैं? शायद नहीं। स्वयं ऊपर चढ़ना और दूसरों को भी ऊपर ले जाने का प्रयत्न केवल आदर्शवादी ही कर सकते हैं।

उत्तर (ii) व्यवहारवादी और आदर्शवादी में अंतर–

व्यवहारवादी लोग हानि-लाभ का हिसाब लगाकर ही अपना कदम बढ़ाते हैं और इसके प्रति सदैव सतर्क रहते हैं।

आदर्शवादी सदैव ऊपर की ओर अग्रसर होते हैं और दूसरों को भी ऊपर उठाने का प्रयत्न करते हैं।

व्यवहारवादी लोगों ने समाज को गिराने का ही काम किया है। जबकि आदर्शवादियों ने समाज को शाश्वत मूल्यों का उपहार दिया है।

उत्तर (iii) समाज के लिए आदर्शवादी ही उपयुक्त है क्योंकि इन्होंने समाज को शाश्वत मूल्य प्रदान किया है।

गद्यांश – 2

उत्तर (i) जापानवासियों के जीवन में रफ़्तार कर्तव्यनिष्ठा और प्रतिस्पर्धा के कारण बढ़ी है और यह रफ़्तार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ी है। अमेरिका द्वारा जापान का पूर्ण विध्वंस का प्रयास ही जापानियों के मन में प्रतिस्पर्धा का कारण है। यहाँ लोग एक महीने का कार्य एक दिन में ही पूरा करने की सोचते हैं। ऐसी स्थिति में दिमाग की गति तेज़ होना स्वाभाविक है। जापान में कोई चलता नहीं दौड़ता है, बोलता नहीं बकता है।

उत्तर (ii) जापानवासियों का अमेरिका से प्रतिस्पर्धा की भावना ही वहाँ रफ़्तार का कारण है। जापानवासी एक महीने का काम एक दिन में ही पूरा कर लेना चाहते हैं। मस्तिष्क सदैव तेज गति से ही कार्य करता है और जब उसमें गति बढ़ाने वाला इंजन लगा दिया जाए तो वह और अधिक गतिशील हो उठता है जिसके परिणामस्वरूप जापान में मानसिक रोगियों में भारी वृद्धि हुई है।

उत्तर (iii) अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने का उल्लेख यहाँ इसलिए किया गया है कि यही विश्व का सबसे विकसित समृद्धिशाली राष्ट्र है।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) 'टी-सेरेमनी' जापान में चाय पीने की एक विधि है। जापानी भाषा में इसे चा-नो-यू कहा जाता है। टी सेरेमनी में चाय पीने में लेखक को अद्भुत अनुभव हुआ। लेखक यहाँ पहले दस-पंद्रह मिनट तक तो उलझनग्रस्त रहा। फिर उसे अनुभूति हुई कि उसके दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे मंद पड़ती जा रही है। थोड़ी देर में वह बिलकुल बंद हो गई। उसे ऐसा लगने लगा मानो वह अनंतकाल में जी रहा है। उसे अब सन्नाटा भी सुनाई देने लगा था।

उत्तर (ii) चाजीन 'टी सेरेमनी' में भाग लेने वालों का स्वागतकर्ता होता है। लेखक और उनके मित्र जब टी सेरेमनी में भाग लेने गए तो चाजीन ने उठकर उनका स्वागत किया और कमर तक झुककर उन्हें प्रणाम किया। दो......झो (आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर हमें बैठने का स्थान दिखाया।

उत्तर (iii) टी-सेरेमनी चाय पीने की एक विधि है जो मानसिक तनाव दूर करने के लिए आयोजित की जाती है।

गद्यांश – 4

उत्तर (i) टी-सेरेमनी विधि में शांति प्राप्त करना ही मुख्य उद्देश्य होता है इसलिए वहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता। चाजीन ने प्याले में चाय डालकर लेखक और उनके मित्रों को दिया। प्याले में कुल दो घूँट चाय होती है। जिसे बूँद-बूँद कर पीना होता है।

उत्तर (ii) टी-सेरेमनी में चाय पीने का सिलसिला लगभग डेढ़ घंटे तक चला। लेखक को पहले 10-15 मिनट तक कुछ उलझन हुई। फिर उन्होंने अनुभव किया कि उनके दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ती जा रही है। थोड़ी देर बाद दिमाग की गति बिलकुल बंद हो गई। लेखक को लगा, मानो वह अनंतकाल में जी रहा हो। यहाँ तक कि उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा था।

उत्तर (iii) चाय पीने का कार्यक्रम लगभग डेढ़ घंटे तक चलता रहा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. शुद्ध सोना मिलावट रहित होता है जबकि गिन्नी सोना में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है।

उत्तर 2. जब कुछ लोग विशुद्ध आदर्श में थोड़ी-सी व्यावहारिकता मिलाकर चलाते हैं तो ऐसे लोग प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट कहलाते हैं।

उत्तर 3. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के समान होते हैं।

उत्तर 4. लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड का इंजन लगाने की बात इसलिए कही है कि जापानी चाहते हैं कि एक महीने का काम एक दिन में ही हो जाए।

उत्तर 5. जापानी में चाय पीने की विधि को 'चा-नो-यू' कहते हैं।

उत्तर 6. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता।

उत्तर 7. समाज को गिराने में व्यवहारवादियों की प्रमुख भूमिका रहती है।

उत्तर 8. व्यवहारवादी लोग सदैव सतर्क रहते हैं और अपनी हानि-लाभ का आकलन करके ही आगे कदम बढ़ाते हैं।

उत्तर 9. शाश्वत मूल्य आदर्शवादियों की देन है।

उत्तर 10. अपने साथ दूसरों को ऊँचा उठाने का कार्य सदैव आदर्शवादियों ने किया है।

उत्तर 11. लेखक के मित्र के अनुसार, जापान में 80 फ़ीसदी लोग मनोरुग्ण लोग हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. गिन्नी के सोने का उपयोग इसलिए अधिक किया जाता है कि उसमें थोड़ा ताँबा मिलाया हुआ होता है, इसीलिए वह अधिक चमकदार, शुद्ध और मजबूत होता है। इसीलिए स्त्रियाँ इस सोने का आभूषण अधिक बनवाती हैं।

उत्तर 2. गांधी जी प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे। वे व्यावहारिकता को पहचानते थे, उसकी कीमत जानते थे परंतु वे कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतरने देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर प्रतिष्ठापित करते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसके मूल्य में वृद्धि करने के पक्षधर थे।

उत्तर 3. व्यवहारवादी लोगों की विशेषता है कि ऐसे लोग बहुत सतर्क होते हैं। ये सदैव अपने हानि-लाभ का आकलन कर ही अपना कदम आगे बढ़ाते हैं। इस प्रकार के लोग हानि, अपयश के साथ समझौता नहीं करते। इनका लक्ष्य यश, कीर्ति अर्जित करना होता है, भले ही आधार मिथ्या हो। अकसर व्यवहारवादी जीवन में सफल होते हैं, दूसरों से आगे भी निकल जाते हैं। परंतु किसी को ऊँचाई पर ले जाना इनके वश की बात नहीं।

उत्तर 4. समाज के उत्थान में आदर्श का ही स्थान प्रमुख होता है। बिना आदर्श के समृद्ध समाज का निर्माण संभव नहीं है। समाज के उत्थान का कार्य सदैव आदर्शवादियों ने ही किया है। आदर्शवादियों का लक्ष्य स्वयं ऊँचाई पर उठना और समाज को ऊँचाई पर ले जाना है। आज समाज के पास शाश्वत मूल्यों जैसा यदि कुछ है तो वह आदर्शवादियों द्वारा ही दिया हुआ है।

उत्तर 5. व्यवहारवाद सोना, ताँबा मिले गिन्नी सोने जैसा है जो दिखने में बहुत चमकदार लगता है। जिस प्रकार लोग गिन्नी सोने की चमक से प्रभावित हो जाते हैं उसी प्रकार समाज में व्यावहारिकता की तारीफ़ होने लगती है जिसके कारण उनके जीवन से धीरे-धीरे आदर्श तिरोहित होने लगता और उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आती है परिणाम होता है सोना (आदर्श) पीछे रह जाता है और ताँबा आगे आता है इसीलिए व्यवहारवाद समाज के लिए हानिकारक है। व्यवहारवादी जीवन में सफल होते हैं, दूसरों से आगे जाते हैं, परंतु समाज को ऊँचा उठाने की क्षमता उनमें नहीं होती।

उत्तर 6. अकसर हम मनुष्य के जीवन में देखते हैं कि या तो वह अपने जीवन के बीते हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझा रहता है या तो वह भविष्य के सपने देखता रहता है। वास्तविकता यह है कि यह दोनों काल मिथ्या हैं। एक बीत गया है जो लौटकर वापस नहीं आ सकता और दूसरा अभी आया नहीं। हमारे सामने जो क्षण है, वही हमारा अपना है वही सत्य है हमें उसी में जीना चाहिए। लेखक कह रहे हैं कि उस दिन चाय पीते-पीते मेरे मस्तिष्क से भूत और आसन्न भविष्य दोनों गायब हो गए थे केवल वर्तमान ही सामने था।

उत्तर 7. शुद्ध आदर्शों में ही वह क्षमता है जो व्यक्ति और समाज को ऊँचाई के शिखर तक ले जा सकते हैं। इसीलिए शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से की गई है। परंतु कुछ व्यवहारवादी उसमें व्यावहारिकता का ताँबा मिला देते हैं और उसे सोने जैसा व्यवहार करने लगते हैं, तर्क देने लगते हैं—गांधीजी भी एक व्यवहारवादी (Practical idealist) थे। परंतु उन्हें शायद नहीं पता कि गांधीजी आदर्शों को कभी व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतरने देते थे बल्कि वे व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर उतारते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना स्थापित कर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

उत्तर 8. लेखक के जापानी मित्र लेखक को शाम के समय एक टी-सेरेमनी में ले गए। वह स्थान एक छह मंज़िली इमारत थी। इमारत के बाहर एक बेढब-सा मिट्टी का बरतन था जिसमें पानी था। लेखक अपने मित्रों सहित इस पानी से हाथ-पैर धोये। तौलिए से हाथ पोछकर अंदर गए। अंदर चाजीन (स्वागतकर्ता) बैठा हुआ था जो इन्हें देखकर उठ खड़ा हुआ। कमर झुकाकर प्रणाम किया। दो......झो..... (आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर स्वागत किया। हमें बैठने की जगह दिखाई, अँगीठी सुलगायी, उसपर चायदानी रखी। कमरे से कुछ बरतन लाया, साफ़ किया। यह सब क्रियाएँ उसने बहुत गरिमापूर्ण ढंग से पूरी की।

उत्तर 9. टी-सेरेमनी में केवल तीन ही व्यक्ति को प्रवेश करने दिया जाता था क्योंकि वहाँ जाने का मुख्य उद्देश्य था शांति प्राप्त करना। वहाँ भीड़-भाड़ करने का कोई औचित्य नहीं था। लेखक भी केवल तीन ही मित्र थे।

उत्तर 10. कुछ लोग शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट कर अर्थात आदर्शरूपी शुद्ध सोने में ताँबारूपी थोड़ी व्यावहारिकता को मिलाकर अपना आदर्श डींगते हैं। हम उन्हें प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट कहकर उनकी तारीफ़ करना शुरू कर देते हैं जबकि तारीफ़ आदर्शों की नहीं की जाती बल्कि उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझों की ही होती है। परिणामस्वरूप सोना (आदर्श) पीछे रह जाता है और ताँबा (व्यवहारवाद) आगे आ जाता है। ऐसे लोग गांधीजी को प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट कहते हैं परंतु गांधीजी की विशेषता थी कि वे कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतरने देते थे। वे व्यावहारिकता (ताँबे) को आदर्श (सोने) के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं, ताँबे में सोना मिलाकर उसकी महत्ता में वृद्धि करते थे।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. जैसे-जैसे विज्ञान की प्रगति और संचार माध्यमों का विकास हुआ है, भारत भी वैश्वीकरण की प्रतिस्पर्धा के चलते गतिशील हुआ है। अब भारत ने विश्व के अन्य विकसित और विकासशील राष्ट्रों के साथ प्रतिस्पर्धा कर, उनके बराबरी पर पहुँचने की ज़ोर आजमाइश में तेज़ी से दौड़ लगाना प्रारंभ कर दिया है। विज्ञान जगत में भारत ने बहुत ख्याति अर्जित की है जो उसके भागम-भाग का परिणाम है। अंतरिक्ष विज्ञान में भी भारत ने बहुत ख्याति अर्जित कर ली है, जैसे भारत ने विज्ञान, उद्योग, कृषि आदि अनेक क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किया है, उसी तरह जापान में आयोजित 'टी-सेरेमनी' की तरह शांति प्राप्ति के प्रयासों की ओर भी उन्मुख हुआ है। उसी संदर्भ में ध्यान, योग, प्राणायाम का आश्रय लेना प्रारंभ कर दिया है।

उत्तर 2. 'झेन की देन' पाठ से हमें संदेश मिलता है कि हमारे समक्ष जो वर्तमान क्षण है वही सत्य है। हम उसे भूत और भविष्य की स्मृतियों की उम्मीदों में खो देते हैं और अपने जीवन को कष्टमय बना लेते हैं। हमें अपने वर्तमान को पहचानना चाहिए, उसी पर ध्यान देना चाहिए। जो बीत चुका है, उसको याद करने से क्या प्रयोजन। आनेवाला क्षण अनिश्चित है, फिर उसके विषय में कैसी चिंता? अतः हमें अपने वर्तमान को खुलकर जीना चाहिए।

उत्तर 3. गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी। अपनी इसी क्षमता के चलते उन्होंने भारत से एक ऐसे साम्राज्य की नींव हिला डाली, जिसके विषय में कहा जाता है कि उस साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता था। गांधीजी एक विशुद्ध आदर्शवादी थे परंतु उन्होंने व्यवहारवाद का भी पूर्ण अनुसरण किया। उनके व्यवहारवाद की यही विशेषता थी कि उन्होंने उसे कभी आदर्शवाद पर हावी नहीं होने दिया। यही कारण था उन्होंने आदर्शवाद को आधार बनाकर व्यवहारवाद का प्रयोग किया। उन्होंने आदर्शरूपी सोने पर व्यवहारवादरूपी ताँबे का स्तर चढ़ाकर उसे मूल्यवान बनाने में सफलता पाई। वे अच्छी तरह जानते थे कि आदर्श ही मनुष्य और समाज को ऊँचाइयों पर ले जा सकते हैं और उन्होंने सदैव आदर्शों का पालन किया।

उत्तर 4. हमारे विचार में जीवन के शाश्वत मूल्य हैं— सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, परहित, परोपकार और सहिष्णुता। इन मूल्यों की समाज को आज जितनी आवश्यकता है, उतनी पहले भी थी और आगे भी रहेगी। इन्हीं मूल्यों के अनुपालन से समाज में नैतिकता की स्थापना होती है। जब ये शाश्वत मूल्य समाज द्वारा नज़रअंदाज़ किए जाने लगते हैं तभी महाभारत का श्रीगणेश होता है। जैसा कि इन मूल्यों को शाश्वत संज्ञा दी गई है, आज के परिवेश में भी ये उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने की पहले थे। इन्हीं मूल्यों का आचरण, अनुपालन करने से ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का उत्थान संभव है। इनके पतन से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का पतन हो जाता है। इन शाश्वत मूल्यों की रक्षा सदैव आदर्शवादियों ने ही की है।

उत्तर 5. आदर्श शाश्वत नियमों पर आधारित होता है जबकि व्यावहारिकता समसामयिक होती है और समय-काल के अनुसार गढ़ ली जाती है। यही कारण है कि व्यावहारिकता लोकप्रिय बन जाती है, सर्वत्र उसी की तारीफ़ होने लगती है और आदर्श पीछे छूट जाते हैं। यही कारण है कि प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों के जीवन से आदर्श महत्वहीन होने लगता है और वे व्यावहारिक सूझ-बूझ को ही महत्वपूर्ण समझने लगते हैं। व्यावहारिक मूल्य कभी भी शाश्वत नहीं हो सकते। वे समय और परिस्थिति के

अनुसार परिवर्तनशील होते हैं। यही कारण है कि व्यवहारवादी लोग अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर लेते हैं, अन्य लोगों से आगे भी निकल जाते हैं, परंतु जहाँ तक समाज या मनुष्य के उत्थान की बात है, यह काम उनके लिए असंभव है।

उत्तर 6. इस प्रगतिवादी युग में विज्ञान के व्यापक प्रभाव से मनुष्य के जीवन जीने की गति में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में मनुष्य चल नहीं रहा है, दौड़ रहा है। जिसकी गति मंद पड़ी, वह बहुत पीछे चला जाएगा। उसकी प्रगति की गति भी अवरुद्ध हो जाएगी। आज मनुष्य का जीवन इतना गतिशील हो गया है कि वह कहीं क्षण भर रुककर किसी से दो बात कर ले। उसे बोलने की फुरसत नहीं है, वह बकता हुआ आगे बढ़ जाता है। जब वह फुरसत के क्षण में अकेला होता है तो स्वयं से बड़बड़ाते रहता हैं क्योंकि यहाँ किसी को भी अपने मन की बातें आदान-प्रदान करने का अवकाश नहीं है इस गतिवान युग ने मनुष्य को अकेला कर दिया है।

उत्तर 7. लेखक बताते हैं कि वे अपने जापानी मित्र के साथ टी-सेरेमनी में गए। टी-सेरेमनी जापान में चाय पीने की एक विधि है जिसे जापानी भाषा में चा-नो-यू कहते हैं। टी-सेरेमनी एक छह मंज़िला भवन है। लेखक अपने मित्रों के साथ वहाँ रखे एक जलपात्र से हाथ-पाँव धोए, तौलिए से पोछे और अंदर गए। वहाँ एक 'चाजीन' बैठा था। चाजीन आगंतुकों को देख स्वागत में खड़ा हो गया, कमर झुकाकर सबको प्रणाम किया। हमें बैठने का स्थान दिखाया। इसके बाद चाय बनाने की तैयारी में लग गया। उस समय वहाँ का वातावरण शांत था और चाजीन का गरिमापूर्ण शालीन व्यवहार इतना हृदयग्राही था कि लगता था, उसकी प्रत्येक भाव भंगिमा से जय जयवंती के स्वर गूँज रहे हों।

पाठ-7

कारतूस

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) सआदत अली आसिफ़ उद्दौला का भाई है और वज़ीर अली तथा आसिफ़ उद्दौला दोनों का दुश्मन है। वह सोचता है कि वज़ीर अली का जन्म सआदत अली की मौत का कारण बनेगा इसीलिए वह वज़ीर अली से शत्रुता रखता है।

उत्तर (ii) अंग्रेज़ों ने सआदत अली को अवध की गद्दी पर इसलिए बिठाया कि वह अंग्रेज़ों का मित्र है सआदत अली ने अपनी सभी जायदाद की आधी मल्कीयत और दस लाख रुपए नगद अंग्रेज़ सरकार को दिए हैं। साथ ही वह एक अय्याश प्रकृति का आदमी है।

उत्तर (iii) वज़ीर अली की पैदाइश को सआदत अली ने अपनी मौत का ख्याल किया।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) अंग्रेज़ों को इस बात की चिंता सताए जा रही थी कि यदि सारे हिंदुस्तान में कंपनी सरकार के खिलाफ़ एक लहर दौड़ जाएगी तो बक्सर और प्लासी में लॉर्ड क्लाइव को जो कामयाबी मिली थी वह लॉर्ड वेल्जली के शासनकाल में समाप्त हो जाएगी।

उत्तर (ii) अंग्रेज़ वज़ीर अली को पकड़ने के लिए चिंतित इसलिए थे कि वज़ीर अली अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहेज़मा को हिंदुस्तान पर आक्रमण करने के लिए दावत दे रहा था, दूसरा कारण था वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था।

उत्तर (iii) बक्सर और प्लासी का युद्ध जो लॉर्ड क्लाइव के नेतृत्व में लड़ा गया जिससे अंग्रेज़ी शासन की भारत में नींव पड़ी।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) वज़ीर अली ने अपने साहस और बहादुरी का परिचय कंपनी के वकील का कत्ल करके दिया। हुआ यह कि वज़ीर अली को अंग्रेज़ सरकार ने उसके पद से हटाकर उसे तीन लाख रुपए वार्षिक वजीफ़ा देकर बनारस भेज दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता तलब किया। वज़ीर अली ने कंपनी के वकील से शिकायत की कि वह उसे कलकत्ता क्यों बुला रहा है? वकील ने वज़ीर अली के साथ बदसलूकी की तो उसने वकील का कत्ल कर दिया क्योंकि उसके मन में अंग्रेज़ों के प्रति नफ़रत कूट-कूट कर भरी थी।

उत्तर (ii) अंग्रेज़ों ने अवध को अपने अधिकार में कर लिया, सआदत अली को वहाँ का शासन भार सौंप दिया। वज़ीर अली को तीन लाख रुपए वार्षिक वज़ीफा निर्धारित कर उसे रहने के लिए बनारस भेज दिया। इस प्रकार उसे सत्ता से हटाने में वे कामयाब हुए।

उत्तर (iii) वज़ीर अली द्वारा वकील की हत्या के दो कारण थे–

(1) वकील ने वज़ीर अली की शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया।

(2) वकील ने वज़ीर अली को अपशब्द कहे।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) वकील का कत्ल करने के बाद वज़ीर अली अपने साथियों सहित आज़मगढ़ की तरफ़ चला गया। आज़मगढ़ के शासकों ने उसे और उसके साथियों को सुरक्षित घागरा नदी के तट तक पहुँचा दिया। अब वे जंगलों में कई साल तक भटकते रहे।

उत्तर (ii) वज़ीर अली की योजना यह थी कि वह किसी तरह से सुरक्षित नेपाल पहुँच जाए और वहाँ रहते हुए अफ़गानी हमले की प्रतीक्षा करे, स्वयं भी अपनी ताकत बढ़ाए। उसका उद्देश्य था कि सआदत अली को उसके पद से हटाकर स्वयं अवध पर कब्ज़ा करे और अंग्रेज़ों को भारत से बाहर करे।

उत्तर (iii) वज़ीर अली के बारे में लेफ़्टिनेंट संभावना बता रहा था कि नेपाल पहुँचना तो कोई मुश्किल काम नहीं था और हो सकता है कि वह पहुँच भी गया हो।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कर्नल कालिंज का जंगल में खेमा वज़ीर अली को पकड़ने के लिए लगाया गया था।

उत्तर 2. इसलिए कि खेमा डाले हफ़्तों हो गए हैं पर वह हाथ ही नहीं लगता।

उत्तर 3. कर्नल ने सवार पर नज़र रखने के लिए इसलिए कहा कि वे देखते रहें कि वह किस तरफ़ जाता है।

उत्तर 4. सवार ने इसलिए कहा कि वज़ीर अली की गिरफ़्तारी मुश्किल है क्योंकि वह एक जाँबाज़ सिपाही है।

उत्तर 5. सवार के जाने के बाद कर्नल इसलिए हक्का-बक्का हो गया क्योंकि नाम पूछने पर सवार ने अपना नाम बताया-वज़ीर अली।

उत्तर 6. वज़ीर अली के अफ़साने सुनकर कर्नल को रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाते थे।

उत्तर 7. अफ़गानिस्तान को हमले की दावत सर्वप्रथम टीपू सुल्तान ने दी।

उत्तर 8. कंपनी के वकील का कत्ल वज़ीर अली ने किया।

उत्तर 9. कर्नल सवार को दस कारतूस देता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. अंग्रेज़ों के विरुद्ध वज़ीर अली के दिल में नफ़रत थी। इसका प्रमाण यह है कि वह केवल पाँच महीने तक ही अवधि का शासक रहा। वह इन पाँच महीनों के अंदर अवध के दरबार को अंग्रेज़ों के असर से बिलकुल मुक्त कर देने में लगभग सफल हो गया था।

उत्तर 2. सआदत अली अवध के शासक आसिफ़ उद्दौला का भाई था। आसिफ़ उद्दौला के बहुत दिनों तक कोई संतान नहीं हुई। सआदत अली ही स्वयं को उत्तराधिकारी मानता रहा। बहुत दिनों बाद वज़ीर अली के पैदा होने पर वह द्वेषवश उसे अपनी मौत मानने लगा।

उत्तर 3. कंपनी के वकील का कत्ल करने के बाद वज़ीर अली अपने जाँबाज़ साथियों के साथ बनारस छोड़कर आज़मगढ़ की ओर भाग गया। आज़मगढ़ के हुक्मरानों ने उसकी सहायता की और उसे घागरा नदी के तट तक सुरक्षित पहुँचा दिया।

उत्तर 4. अंग्रेज़ सैनिक और नवाब सआदत अली के सिपाही गोरखपुर के इन्हीं जंगलों में बड़ी कड़ाई से पीछा कर रहे थे। उन्हें विश्वास था कि वह अपने साथियों के साथ इन्हीं जंगलों में कहीं छिपा है।

उत्तर 5. शाहे-ज़मा अफ़गानिस्तान का बादशाह था जिसे वज़ीर अली ने हिंदुस्तान पर हमला करने के लिए आमंत्रित किया था। वज़ीर अली किसी भी तरह अंग्रेज़ों को भारत से भगा देने के लिए तत्पर था।

उत्तर 6. वज़ीर अली सआदत अली को तनिक भी पसंद नहीं करता था क्योंकि सआदत अली अंग्रेज़ी हुकूमत का पक्षधर था। अवध के नवाब आसिफ़ उद्दौला के बाद अवध की गद्दी पर वज़ीर अली को बैठाया गया। यह बात सआदत अली को स्वीकार नहीं थी। उसने षड्यंत्र करके तथा अंग्रेज़ी हुकूमत को आधा अवध एवं 10 लाख रुपए प्रदान कर अवध की सत्ता हथिया ली। इसीलिए वज़ीर अली सआदत अली को पसंद नहीं करता था।

उत्तर 7. अवध की सत्ता सआदत अली को सौंपने से अंग्रेज़ों को बहुत लाभ हुआ। सआदत अली एक विलास-प्रिय व्यक्ति था। उसने सत्ता हथियाने के लिए अंग्रेज़ों को अवध की आधी ज़ायदाद और दस लाख रुपए नगद दिए थे। अंग्रेज़ों का इससे लाभ ही लाभ हुआ।

उत्तर 8. सआदत अली एक सत्ता लोलुप और विलासप्रिय व्यक्ति था। वह सत्ता के लोभ में अंग्रेज़ों से षड्यंत्र कर वज़ीर अली को सत्ताच्युत कर दिया और अपनी ज़ायदाद का आधा भाग और दस लाख रुपये भी अंग्रेज़ों को दे दिए। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सआदत अली एक सत्ता लोलुप व्यक्ति था।

उत्तर 9. वज़ीर अली के हृदय में अंग्रेज़ी हुकूमत के प्रति बहुत घृणा थी। अंग्रेज़ों ने छलपूर्वक वज़ीर अली को अवध की गद्दी से उतारकर सआदत अली को नवाब बना दिया। और उसे वज़ीफा देकर बनारस भेज दिया था। कुछ महीने बीतने पर जब गवर्नर जनरल की तरफ़ से वज़ीर अली का बुलावा आया तो वह क्षुब्ध हो उठा। जब उसने वकील से इसकी शिकायत की तो वकील ने उसे अपशब्द कहे और उसने वकील की हत्या कर दी। इस तरह उसने गवर्नर जनरल के प्रति अपनी नाराज़गी दर्ज कराई।

उत्तर 10. वज़ीर अली ने अपने साहस और वीरतापूर्ण चातुर्य से कर्नल को मात दी। वह बेखौफ़ होकर एकदम अकेले कर्नल के कैंप में इस प्रकार चला आता था कि न तो कर्नल को और न ही फ़ौज को एकदम संदेह नहीं होता कि यह वज़ीर अली हो सकता है। वह कर्नल के कक्ष में जाकर उनसे केवल बातें ही नहीं करता बल्कि उनसे दस कारतूस भी प्राप्त कर लेता है। नाम पूछने पर वह अपना नाम अंत समय में बता देता है जिससे कर्नल हक्का-बक्का हो जाता है।

उत्तर 11. रॉबिनहुड अपने वीरोचित कार्यों के लिए ब्रिटिश इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। वैसी ही साहस भरी वीरता की अनेक कहानियाँ वज़ीर अली के विषय में भी प्रचलित हैं जिसे सुन कर्नल बहुत चमत्कृत हो जाता था। उन्होंने वज़ीर अली के पाँच महीने के कार्यकाल को बहुत निकट से देखा था। इन पाँच महीनों में वज़ीर अली ने अवध के दरबार से अंग्रेज़ी के प्रभाव को इस प्रकार समाप्त कर दिया कि देखकर उसकी वीरता और प्रशासनिक क्षमता पर आश्चर्य होता है।

उत्तर 12. सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का मकसद निम्न है–

1. सआदत अली कर्नल का मित्र है और बहुत ऐश पसंद व्यक्ति है।
2. सआदत अली ने नवाब की गद्दी पर बैठाने के बदले अपनी ज़ायदाद का आधा हिस्सा और 10 लाख रुपये नगद दिया। इस प्रकार अवध के अंग्रेज़ों के अधिकार में हो जाने की पूर्ण संभावना थी।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. लेफ्टीनेंट को पता था कि वज़ीर अली अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहेज़मा को हिंदुस्तान पर हमला करने के लिए बुला रहा था। जब उसे पता चलता है कि अफ़गानिस्तान के बादशाह को हमले का आमंत्रण सबसे पहले टीपू सुल्तान ने फिर वज़ीर अली ने फिर बंगाल के नवाब शमसुद्दौला ने भी दिया है तो उसे लगने लगा कि ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध पूरे हिंदुस्तान में एक वातावरण बन गया है शमसुद्दौला बंगाल के नवाब का रिश्ते में भाई है और बहुत खतरनाक आदमी है। उसे लगने लगा कि कंपनी के विरुदध भारत के भिन्न-भिन्न भागों से शासकों का संगठित होना कंपनी के लिए खतरे की घंटी है।

उत्तर 2. वज़ीर अली एक साहसी, पराक्रमी और जाँबाज़ सिपाही था। उसमें चातुर्य और साहस कूट-कूट कर भरा था। उसमें प्रशासनिक दूरदर्शिता भी थी। आसिफ़ उद्दौला के बाद उसने केवल पाँच महीने ही शासन किया परंतु इन पाँच महीनों में अपनी दूरदर्शिता और कार्यपटुता से अवध में अंग्रेज़ी प्रभाव को लगभग समाप्त ही कर दिया था।

वज़ीर अली की जाँबाज़ी का इससे बड़ा और क्या प्रमाण हो सकता है कि वह अंग्रेज़ सेना के कैंप में अकेले ही पहुँच जाता, अपनी चतुराई से कर्नल से अकेले मिलता, उनसे दस कारतूस भी प्राप्त कर लेता और जब वे उससे उसका नाम पूछते तो अपना नाम भी बता देता और कुशलतापूर्वक कैंप से बाहर चला जाता है। कर्नल उसे हक्का-बक्का होकर देखते रह जाते हैं।

उत्तर 3. वज़ीर अली की चारित्रिक विशेषताएँ–

वज़ीर अली एक वीर योद्धा के रूप में– वज़ीर अली एक वीर योद्धा है जिसकी अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। अंग्रेज़ी फौज़ का कर्नल, उसमें रॉबिनहुड की विशेषताएँ देखता है।

एक सच्चा देशभक्त– वज़ीर अली एक सच्चा देशभक्त है। अंग्रेज़ों को भारत से भगाने के लिए वह कटिबद्ध है। उसे अंग्रेज़ों से अपार घृणा है। उसी घृणा का ही परिणाम था कि वह कंपनी के वकील द्वारा कहे गए अपशब्द सहन नहीं कर पाता और उसकी हत्या कर देता है।

एक जाँबाज़ सिपाही– वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था। वह बेखौफ़ होकर बेहिचक अंग्रेज़ी फ़ौज के कैंप में घुसता है, कर्नल से एकांत में बात करता है, उनसे 10 कारतूस भी ले लेता है और सकुशल वापस चला जाता है।

उत्तर 4. 'कारतूस' पाठ हमें यह संदेश देता है कि यदि इरादा दृढ़ हो, नियति अच्छी हो, मन में साहस हो और कुछ कर जाने की तमन्ना हो तो मनुष्य सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। वज़ीर अली में ये सभी गुण मौजूद हैं इसीलिए वे निडर होकर कंपनी की बटालियन के खेमे में ही नहीं पहुँच जाता बल्कि वह अकेला युवक कर्नल पर अपनी वीरता का ऐसा प्रभाव डालता है कि वह उसे दस कारतूस भी दे देता है। लेफ्टिनेंट के पूछने पर कि वह कौन था-जवाब ऐसा देता है जो किसी अपराधी के लिए तो नहीं ही दिए जा सकते।

उत्तर 5. वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का कत्ल इसलिए कर दिया कि कंपनी के वकील ने उसे अपशब्द कहे। कंपनी ने सआदत अली को अवध का नवाब बनाने के बाद वज़ीर अली को तीन लाख वज़ीफा देकर बनारस भेज दिया। कुछ महीने बीतने

पर गवर्नर जनरल ने वज़ीर अली को कलकत्ता बुलाया। वज़ीर अली गवर्नर जनरल से चिढ़ा हुआ था। उसने सरकारी वकील से उसकी शिकायत की। वकील ने उसकी कोई सहायता नहीं की बल्कि उसे अपशब्द कहे। उसने वकील की हत्या कर दी और वहाँ से चला आया।

उत्तर 6. सवार ने कर्नल से बहुत बुद्धिमत्तापूर्वक कारतूस प्राप्त किए। वह सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ कर्नल के शिविर तक पहुँचता और आवाज़ लगाता है–मुझे कर्नल से मिलना है। गोरा सिपाही उसे कर्नल के सामने ले जाता है। सवार तन्हाई, तन्हाई की आवाज़ लगाता है। कर्नल वहाँ खड़े लेफ्टीनेंट और सिपाही को बाहर जाने का आदेश देता है। उनके बाहर जाने पर सवार कर्नल से खेमा डालने का कारण पूछता है। कर्नल बताता है–कंपनी का आदेश है कि वज़ीर अली को गिरफ़्तार किया जाय। सवार कहता है–वज़ीर अली को गिरफ़्तार करना मुश्किल है क्योंकि वह एक जाँबाज़ सिपाही है। कर्नल कहता है– मैंने भी सुन रखा है। आप क्या चाहते हैं? सवार कहता है कुछ कारतूस....वज़ीर अली को पकड़ने के लिए कर्नल दे देता है। जब कर्नल सवार से उसका नाम पूछता है तो वह अपना नाम वज़ीर अली बताता है और खेमे से बाहर चला जाता है।

उत्तर 7. जब कर्नल और लेफ्टीनेंट आपस में बातें कर रहे थे, एक सिपाही अंदर आकर बोला–दूर से गरदन उठती दिखाई दे रही थी। कर्नल ने सैनिकों को सावधान होने और निगरानी करने का आदेश दिया, परंतु लेफ्टीनेंट खिड़की से बाहर उधर ही देख रहा था जिधर धूल उड़ रही थी। लेफ्टीनेंट धूल के उड़ते गुबार को देखकर चकित था, ऐसा लग रहा था, पूरा एक काफिला चला आ रहा हो, परंतु ध्यान से देखने पर पता चलता–सवार एक ही है जो बहुत तेज़ी से घोड़ा दौड़ाता चला आ रहा था इसीलिए बहुत धूल उड़ रही थी। इस गद्यांश का तात्पर्य यह है कि घुड़सवार बहुत ही साहसी और घुड़सवारी में दक्ष है।

उत्तर 8. वज़ीर अली वकील की हत्या कर देने के बाद अपने कुछ जाँबाज़ और वफ़ादार साथियों के साथ बनारस से भाग निकला। यद्पि उसके पास कोई बड़ी सेना नहीं है। उसके साथ बहुत थोड़े से उसके दोस्त हैं जो बहुत साहसी और वफ़ादार हैं। उसके साथ अपने प्राणों की बलि देने के लिए तैयार रहते हैं। वज़ीर अली ने अपने इन थोड़े से साथियों के साथ अंग्रेज़ी सेना को परेशान कर रखा है। उसे पकड़ने के लिए अंग्रेज़ी सेना और अवध के नवाब सआदत अली के सिपाही संयुक्त अभियान चला रहे। अंग्रेज़ी सेना का कर्नल उनकी बहादुरी और साहस से परेशान होकर कह उठता है–मुट्ठी भर आदमी और यह दमखम।

स्पर्श : भाग 2–पद्य खंड

पाठ–1

साखी

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

उत्तर (i) मृग कस्तूरी की सुगंध से प्रभावित होकर उसे जंगल ढूँढ़ता फिरता है। उसे कस्तूरी की सुगंध बहुत प्रिय है। वह इस बात से अनभिज्ञ है कि उसे जो सुगंध प्राप्त हो रही है, वह कहीं अन्यत्र नहीं है। वह उसके नाभि में ही मौजूद है।

उत्तर (ii) राम और कस्तूरी में यही समानता है कि कस्तूरी मृग के नाभि में ही विद्यमान रहकर अपनी सुगंध बिखेरती है और मृग इस सत्य से अनजान उस सुगंध को पाने के लिए जंगल-जंगल भटकता है। ठीक उसी तरह राम (परमपिता परमेश्वर) भी प्रत्येक प्राणी में मौजूद है लेकिन हम उसको पाने के लिए मंदिर-मस्जिद गुरुद्वारे के चक्कर लगाते हैं।

उत्तर (iii) कवि – कबीरदास, कविता – साखी।

काव्यांश 2

उत्तर (i) कवि को ईश्वर की प्राप्ति तब संभव हुई जब उसके हृदय से मैं अर्थात अहंकार समाप्त हो गया। उसके मन से अहंकार के समाप्त होते ही ईश्वर से साक्षात्कार हो गया। अर्थात वह स्वयं ईश्वर स्वरूप बन गया।

उत्तर (ii) 'सब अँधियारा मिटि गया', का आशय यह है कि मन से अज्ञानांधकार मिट गया, अपने अंत:करण से मैं, मेरा, तेरा, का भाव मिट गया। मन अहंकार शून्य हो गया तो परमपिता परमेश्वर की प्राप्ति हो गई। अंत:करण ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित हो गया।

उत्तर (iii) जब मनुष्य के भीतर 'मैं' अथवा 'अहंकार' होता है।

काव्यांश 3

उत्तर (i) प्रस्तुत दोहे में कवि ने ईश्वर के विरह अर्थात वियोग की तुलना साँप से की है। जब ईश्वर प्राप्ति की जिज्ञासा मन में जाग जाती है तब उसका समाधान एकमात्र ईश्वर की प्राप्ति है। इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं सफल हो सकता। उसे कहीं भी कोई रस नहीं आता। ठीक उसी तरह जैसे विरह रूपी साँप शरीर में रहने पर कोई भी मंत्र काम नहीं करता।

उत्तर (ii) राम के वियोग में पड़े व्यक्ति की दशा बहुत विचित्र हो जाती है। जिसे 'राम' को प्राप्त करने की रट लग जाती है, वह व्यक्ति राम के वियोग में या तो मर जाता है, या पागल हो जाता है। उसे कहीं भी कोई रस नहीं प्राप्त होता। वह केवल राम के विरह में ही व्याकुल रहता है।

उत्तर (iii) आत्मा राम-मिलन की व्याकुलता का अनुभव कर रही है।

काव्यांश 4

उत्तर (i) कबीर ने अपने निकट अपने आलोचक, अपनी निंदा करने वाले को रखने की बात कही है। आलोचक (निंदक) का कार्य होता है अपने समीपी की कमियों को बताना। निंदक द्वारा निंदा करने या कमियाँ बताने से व्यक्ति अपनी एक-एक कमियों को दूर कर लेता है। इससे उसके चरित्र में निखार आता है। इसीलिए कबीरदास ने निंदक को अपने पास रखने की बात कही है।

उत्तर (ii) निंदक को सदैव अपने निकट स्थान देना चाहिए जिससे उसकी नज़र सदैव हमारे क्रियाकलापों पर पड़ती रहे। कबीरदास कहते हैं, निंदक को अपने आँगन में घर बनाकर रहने का स्थान देना चाहिए जिससे वह हमारे प्रत्येक क्रियाकलापों का छिद्रान्वेषण कर सके।

उत्तर (iii) निंदक की तुलना साबुन-पानी से की गई है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. अंहकार त्यागकर मीठी, प्रेमपूर्ण बोली गई वाणी कर्णप्रिय होती है और सुनने वाले को आनंद देती है। साथ ही बोलने वाले को भी आनंद प्रदान करती है।

उत्तर 2. जब ज्ञान का प्रकाश अपने अंतर में जल जाता है तो संसाररूपी अंधकार अपने आप समाप्त हो जाता है।

उत्तर 3. कवि ने 'प्रेम' को सर्वोपरि मानते हुए कहा है– केवल एक अक्षर 'प्रेम' को हृदय से पढ़ लेने मात्र से ही मनुष्य पंडित हो जाता है फिर उसे पोथियाँ पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

उत्तर 4. 'मन का आपा खोइ' का अभिप्राय है– मन का अहंकार खो देना।

उत्तर 5. कस्तूरी मृग के नाभि में होती है।

उत्तर 6. इस पंक्ति का अर्थ है– जब मन में अहंकार था, तब ईश्वर हमसे दूर थे।

उत्तर 7. विरह भुवंगम से कवि का तात्पर्य है– वियोगरूपी भुजंग या साँप।

उत्तर 8. कबीर मोह-माया रूपी घर को इसलिए जलाना चाहते हैं ताकि ज्ञान प्राप्त हो।

उत्तर 9. 'हम घर जाल्या आपणाँ' में 'घर' 'मोह-माया' का प्रतीक है जिसे कबीर ने जला दिया है।

उत्तर 10. इस काव्य पंक्ति के रचयिता संत कबीरदास है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. ईश्वर कण-कण में व्याप्त हैं पर हम उसे देख नहीं पाते। इसका कारण है–अज्ञान। मनुष्य मोह-माया रूपी अंधकार से इस प्रकार घिरा हुआ है कि ईश्वर की छवि उसे दिखाई ही नहीं पड़ती। हम शास्त्रों को पढ़कर ईश्वर को मंदिर-मस्जिद में ढूँढ़ते हैं। यही कारण है कण-कण में विद्यमान ईश्वर के हम दर्शन नहीं कर पाते।

उत्तर 2. कबीर ने अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए उपाय बताया है कि मनुष्य को सदैव अपने निंदक को अपने निकट रखना चाहिए। वे कहते हैं कि अपने निंदक को अपने आँगन में रहने के लिए स्थान देना चाहिए।

उत्तर 3. मन में आपा या अहंकार उपजने का कारण है स्वयं को सर्वशक्तिमान मान लेना। कबीरदास अहंकार को खोने के लिए कहते हैं कि दूसरों से ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो घमंड रहित हो। अर्थात अहंकार रहित होकर किसी से प्रेमपूर्ण बोली गई वाणी स्वयं को भी सुख प्रदान करती है और दूसरों को भी आनंददायक होती है।

उत्तर 4. 'ऐसै घटि घटि राँम है'– इस पंक्ति के माध्यम से कबीर ने इस सत्य से परिचित कराया है कि परमात्मा का निवास प्रत्येक प्राणी में है। वह कहीं अन्यत्र नहीं है, प्रत्येक कण-कण में समाया हुआ है। उससे रूबरू होने के लिए हमें स्वयं को पहचानने की आवश्यकता है।

उत्तर 5. 'सब अँधियारा मिट गया'–इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने यह बताने का प्रयत्न किया है जब ज्ञान का प्रकाश मनुष्य के अंतर में जल उठा तो अज्ञानरूपी अंधकार पूर्ण रूप से दूर हो गया क्योंकि मन से 'मैं' अर्थात अहंकार दूर हो गया।

उत्तर 6. कबीरदास के अनुसार ये सारा संसार सुखी है क्योंकि वह केवल खाने और सोने का काम करता है और इसी को परम सुख मानता है। ऐसे लोगों के दृष्टिकोण में वह व्यक्ति बहुत दुखी है जो ईश्वर चिंतन में उसके वियोग में दुखी होकर जागता है और उसके पाने की लालसा में रोता है।

उत्तर 7. राम वियोगी की दशा ऐसी हो जाती है कि वह या तो उसके वियोग में मर जाता है और यदि जीता है तो पागल हो जाता है। उसे परमात्मा से मिलने की इच्छा इतनी उत्कट हो जाती है कि उसे इस संसार से कोई मतलब नहीं रह जाता। वह विक्षिप्त-सा हो जाता है।

उत्तर 8. निंदक के बारे में कबीर की राय समाज की अपेक्षा सबसे भिन्न है। समाज अपने निंदक से सदैव दूर रहना चाहता है क्योंकि निंदा से समाज में अवमानना होती है परंतु कबीर मानते हैं कि निंदक के साथ रहने से मनुष्य को अपनी कमियाँ दूर करने का अवसर मिलता है और उसका चरित्र निर्मल हो जाता है।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. संसार की दृष्टि से वही व्यक्ति सुखी है जो खाता है और सोता है। ऐसे लोगों के दृष्टिकोण में कबीर जैसे लोग बहुत दुखी हैं जो परमात्मा के चिंतन में रात-दिन जागते हैं, उनके वियोग में तड़पते हैं। उनको पाने की तीव्र उत्कंठा में रोते हैं। ऐसे लोगों को बहुत दुखी कहा गया है।

उपर्युक्त पंक्तियों में 'सोना' शब्द का प्रयोग उनके लिए किया गया है जो सांसारिक मोह-माया में आबद्ध होकर खाने और सोने को ही परमसुख मानते हैं। 'जागना' शब्द उनके लिए प्रयुक्त हुआ है जो प्रभुचिंतन में तड़पते हैं और रोते हैं। उनका लक्ष्य परमात्मा में लीन होना है।

उत्तर 2. कबीर की साखियाँ मनुष्य के जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं। इनकी साखियों में जीवन मूल्यों की झलक मिलती है। कबीरदास की साखियों में जीवन के वास्तविक अनुभव का वर्णन है। उनके जीवन का अनुभव क्षेत्र बहुत विस्तृत था और उन्होंने अपने अनुभवों को अपनी साखियों में पिरोया। इनकी अधिकांश साखियाँ अध्यात्म पर आधारित हैं। वे जिस समय अवतरित हुए थे, उस समय समाज में बहुत विप्लव की स्थिति थी। सांप्रदायिक वैमनस्य, ऊँच-नीच का भेदभाव समाज में व्याप्त होने के कारण प्रतिदिन आपस में संघर्ष था। हिंदू-हिंदू, हिंदू-मुसलमान, दलित-सवर्ण में भारतीय समाज बँटा हुआ था। इस परिस्थिति में कबीर ने समाज को जगाने का प्रयत्न किया, लोगों में ऐसी धार्मिक चेतना जगाने का प्रयत्न किया जो किसी संप्रदाय से संबंध नहीं रखती थी। इसका उत्कृष्ट उदाहरण पाठ्य-पुस्तक में दी गई साखियाँ हैं।

उत्तर 3. ईश्वर के संबंध में कबीर की अवधारणा रूढ़ि और परंपराओं पर आधारित नहीं है। उन्होंने धार्मिकता, सांप्रदायिकता के नाम पर समाज में उत्पन्न होने वाले राग-द्वेष को देखा, उसका अनुभव किया। इससे होने वाली सामाजिक क्षति का अध्ययन किया। अंततः उन्होंने ईश्वरवाद का एक नया प्रारूप समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। उन्होंने मूर्ति पूजा, अजान आदि का मुखर होकर विरोध किया। उन्होंने कहा—"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। एकै आखिर प्रेम का, पढ़ै सुपंडित होय।" उन्होंने 'प्रेम' को बहुत महत्व दिया और कहा कि जहाँ आपको प्रेम की अनुभूति हुई फिर पोथी (धार्मिक ग्रंथ) पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। कबीरदास ने ब्रह्म का निराकार स्वरूप अपनी रचनाओं में स्वीकार किया है। इसीलिए वे कहते हैं– "जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं। सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।" उन्होंने हिंदू या मुसलमानों की रूढ़िवादी पूजा का कट्टर विरोध किया।

उत्तर 4. निंदा करने वाले को या आलोचना करने वाले को निंदक कहा गया है। समाज में निंदक की घोर अप्रतिष्ठा है। कोई भी अपनी निंदा या आलोचना करने वाले के साथ नहीं रहना चाहता। निंदक-आलोचक सदैव किसी की कमियों को उजागर करने का कार्य करता है इसलिए सभी लोग अपने निंदक से दूर रहना चाहते हैं। कबीरदास ने निंदक को सदैव अपने घर में रखने की सलाह दी है। निंदक नज़दीक रहकर व्यक्ति के चरित्र को परिष्कृत करने का कार्य करता है। जैसे-जैसे निंदक उसकी कमियों को उजागर करता जाता है, वह अपनी कमियों को परिष्कृत करता जाता है।

उत्तर 5. प्रस्तुत पाठ का शीर्षक 'साखी' शब्द संस्कृत के 'साक्षी' शब्द का तद्भव रूप है। साक्षी शब्द की उत्पत्ति साक्ष्य शब्द से हुई है जिसका अर्थ है—प्रत्यक्ष ज्ञान। संत संप्रदाय में अनुभूत ज्ञान की ही महत्ता है, शास्त्रीय ज्ञान की नहीं। कबीर का अनुभव क्षेत्र विस्तृत था। उन्होंने यह अनुभव जगह-जगह भ्रमण करके प्रत्यक्ष ज्ञान के रूप में प्राप्त किया था। यही कारण है कि उनकी साखियों में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। इसी कारण इनकी भाषा को 'पंच मेल खिचड़ी' कहा जाता है। इनकी भाषा को सधुक्कड़ी भी कहा जाता है।

उत्तर 6. 'विरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागे कोइ' इस पंक्ति का आशय यह है कि जब परमात्मा के वियोग का साँप शरीर में प्रवेश कर लेता है तो इसे उतारने के लिए या शरीर से दूर करने के लिए कोई मंत्र काम नहीं करता। फिर परमात्मा का वियोगी उसको प्राप्त करने की इच्छा में या तो प्राण त्याग देता है और यदि जीवित रहता है तो पागल हो जाता है। परमात्मा के प्राप्त करने की लगन इतनी तीव्र होती है कि उसके समक्ष सभी सांसारिक बंधन मिथ्या प्रतीत होने लगते हैं।

उत्तर 7. 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि' इस पंक्ति का आशय यह है कि कस्तूरी मृग की नाभि में रहती है और अपनी सुगंध बिखेरती है। मृग इस सत्य से अनभिज्ञ होकर उस सुगंध के स्त्रोत को जंगल-जंगल ढूँढ़ता फिरता है। ठीक वही स्थिति मनुष्य की भी है। परमात्मा का निवास मनुष्य के हृदय में है परंतु अज्ञानग्रस्त मनुष्य परमात्मा को प्राप्त करने के लिए अनेक यत्न करता है, तीर्थ-व्रत करता है, पूजा-पाठ, मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारे जाता है, मक्का-मदीना की यात्रा करता है। जबकि ईश्वर उसकी आत्मा में ही निवास करता है। बस जान लेने भर की देर है।

उत्तर 8. 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं हम नाँहिं'—इस पंक्ति का भाव यह है कि जब मैं अंहकारग्रस्त था, अपने को ही सर्वशक्तिमान मानता था, तब परमात्मा हमसे दूर था। आज जब हमारे अंतर से 'मैं' अर्थात अहंकार समाप्त हो गया तो परमात्मा की कृपा बरसने लगी। इस प्रकार जहाँ 'मैं', 'तुम', 'मेरा', 'तेरा' का भाव होगा, वहाँ ईश्वर की कृपा संभव नहीं है। जब ज्ञान की ज्योति अंतर में प्रज्वलित हो जाती है तो अज्ञानांधकार अपने आप ही दूर हो जाता है।

पाठ–2

पद

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

उत्तर (i) मीरा ने 'हरि' अपने आराध्य श्रीकृष्ण को कहा है और वह उनसे जनसामान्य की पीड़ा, दुख-दर्द को हरने की प्रार्थना करती हैं।

उत्तर (ii) श्रीकृष्ण ने अपने भक्तों की रक्षा निम्न प्रकार से की है— चीर-हरण के समय श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज चीर बढ़ाकर की, भक्त प्रहलाद की रक्षा नरसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु का वध करके किया, डूबते ऐरावत और ग्राह से गज की रक्षा की।

उत्तर (iii) कवयित्री – मीराबाई, कविता का नाम – पद।

काव्यांश 2

उत्तर (i) कवयित्री मीराबाई श्याम सुंदर श्रीकृष्ण का चाकर बनकर उनके लिए बाग लगाना चाहती हैं और नित्य उठकर उनके दर्शन करना चाहती हैं। वृंदावन की कुंज गलियों में भगवान श्रीकृष्ण की लीला का गान करना चाहती हैं। वे श्रीकृष्ण से भक्तिभाव की जागीर प्राप्त करना चाहती हैं। वे मोर मुकुट धारण किए, वैजंती माला धारण किए, वृंदावन में गाय चराते हुए मन को मोह लेने वाले श्याम सुंदर के दर्शन प्राप्त करना चाहती हैं। कुसुम्बी साड़ी पहनकर वे यमुना जी के तट पर आधी रात को श्रीकृष्ण के दर्शन की अकांक्षा करती हैं।

उत्तर (ii) मीरा की भक्ति समर्पण की भक्ति है। वे भगवान श्रीकृष्ण के प्रति पूर्ण अगाध भक्ति-भाव से ओत-प्रोत हैं। वे कभी उन्हें अपने आराध्य के रूप से स्वीकार करती हैं तो कभी अपने पति के रूप में। निर्गुण रूप में भी वे अपने आराध्य को स्वीकार करती हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण की चाकर बनकर उनकी विविध प्रकार से सेवा कर उनकी भाव-भक्ति अनुपम निधि (जागीर) को प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की है।

उत्तर (iii) मीराबाई बाग इसलिए लगाना चाहती हैं कि नित्य प्रति उठकर श्रीकृष्ण के दर्शन प्राप्त कर सकें।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कृष्ण के प्रति मीरा की समर्पण भावना प्रकट हुई है।

उत्तर 2. अनुप्रास अलंकार ('भ' की पुनरावृत्ति)

उत्तर 3. मीरा पारिवारिक संतापों से मुक्ति पाने के लिए श्रीकृष्ण की शरण में गईं।

उत्तर 4. मीरा अपने आराध्य से अपने को चाकर (नौकर) रचने का आग्रह करती हैं।

उत्तर 5. मीरा श्रीकृष्ण से यमुना किनारे उनका दर्शन करने के लिए मिलना चाहती हैं।

उत्तर 6. मीरा के पदों में मुख्य रूप से भक्ति रस का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं वात्सल्य और शृंगार का भी प्रयोग हुआ है।

उत्तर 7. श्रीकृष्ण ने भक्त प्रहलाद की रक्षा के लिए नरसिंह का रूप धारण किया।

उत्तर 8. मीराबाई श्रीकृष्ण से अपनी पीड़ा के साथ आम आदमी की पीड़ा हरने का अनुरोध करती हैं।

उत्तर 9. मीरा श्रीकृष्ण की लीला का गान वृंदावन की कुंज गलियों में करना चाहती हैं।

उत्तर 10. इस पंक्ति की रचना कवयित्री मीराबाई ने की है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती सर्वप्रथम सबकी पीड़ा हरने की प्रार्थना के साथ की है। इसके साथ ही उन्होंने द्रौपदी, भक्त प्रहलाद, गजराज की पीड़ा हरने की याद दिलाते हुए अपनी पीड़ा हरने की प्रार्थना की है। मीराबाई 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' पर विश्वास करने वाली हैं। वे सर्वजन का कल्याण करने के बाद अपने कल्याण, अपनी पीड़ा हरने की प्रार्थना अपने आराध्य श्रीकृष्ण से करती हैं।

उत्तर 2. मीराबाई श्याम की चाकरी इसलिए करना चाहती हैं कि उन्हें अपनी भक्ति से श्रीकृष्ण की भाव-भक्ति की निधि या दौलत प्राप्त हो जाएगी और प्रतिदिन उनके दर्शन प्राप्त होंगे, साथ ही उनके सुमिरन-भजन-कीर्तन का अवसर प्राप्त होगा।

उत्तर 3. कवयित्री मीरा ने श्रीकृष्ण को उनकी दयालुता, उनकी शक्ति-संपन्नता का परिचय इसलिए दिलाया है कि कहीं वे अपनी इतनी क्षमता होने पर भी दुखी जनों को भूल न जाएँ। इन्हीं दुखी जनों के कष्टों का निवारण करने के कारण ही तो उनका दीन-दयालु नाम पड़ा है।

उत्तर 4. पौराणिक कथा के अनुसार एक बार गजराज अपनी पत्नियों के साथ प्यास बुझाने के लिए एक तालाब पर गया। सरोवर में एक मगर रहता था। गजराज ने ज्योंहि सरोवर में पैर बढ़ाया, एक शक्तिशाली मगर ने उसका पैर पकड़ लिया और तालाब में खींचने लगा। जब गजराज को अपनी रक्षा का कोई उपाय न सूझा तो उसने भगवान श्रीकृष्ण को सच्चे मन से पुकार लगाई। भगवान सदैव भक्त के वश में होते हैं। उन्होंने उसकी पुकार सुन गज का सुदर्शन चक्र से रक्षा की और शापग्रस्त मगर को शाप से मुक्त किया।

उत्तर 5. भगवान ने नरसिंह रूप भी अपने भक्त प्रहलाद की रक्षा के लिए ही किया। जगत प्रसिद्ध है कि भगवान भक्त वत्सल हैं। भक्त प्रहलाद हिरण्यकशिपु नामक दैत्य के कुल में उसके पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए थे परंतु उनकी बचपन से ही आस्था भगवान विष्णु में थी। हिरण्यकशिपु की विष्णु से शत्रुता थी। उसने भक्त प्रहलाद को विष्णु की आराधना करने से बहुत मना किया परंतु प्रहलाद नहीं माने। अंतत: उस आततायी दैत्य ने प्रहलाद को मारने के अनेक प्रयास किए। एक दिन उसने खंभे में बांधकर प्रहलाद को तलवार से मारने का प्रयत्न किया तब भगवान विष्णु ने नरसिंह का रूप धारण कर दैत्य का वध कर दिया।

उत्तर 6. 'तीनूं बाताँ सरसी' के माध्यम से कवयित्री ने यह कहना चाहा है कि जब भगवान श्रीकृष्ण उन्हें अपनी दासी (चाकर) बना लेंगे तो कवयित्री उनकी अनेक प्रकार से सेवा करके उनसे तीनों लाभ एक साथ प्राप्त कर लेगी। ये तीनों लाभ हैं– प्रतिदिन अपने आराध्य की सेवा करना एवं दर्शन प्राप्त करना; प्रतिदिन अपने आराध्य के सुमिरन-भजन करना; और भक्ति-भाव की अमूल्य निधि (जागीर) प्राप्त करना। इस प्रकार उसे ये तीनों लाभ उनकी चाकरी से प्राप्त हो जाएँगे।

उत्तर 7. कवयित्री मीरा अपने प्रभु के सौंदर्य पर इसलिए रीझी हुई हैं कि उनका अपने भक्तों के प्रति असीम स्नेह है। वे अपने भक्तों के दुख निवारण करने के लिए सतत तैयार रहते हैं, इसके साथ ही उनकी रूप माधुरी भी मन को बरबस अपनी ओर आकर्षित करती है। उनके सिर पर मोर पंख का मुकुट है, गले में वैजंती की सुंदर माला शोभायमान है। ये मन को मोहने वाले मुरली मनोहर वृंदावन में गाय चराते हैं। इनके होंठों पर मुरली शोभायमान है। इस प्रकार की भक्त वत्सलता और श्रीकृष्ण का सौंदर्य कवयित्री के मन को रिझाने के लिए पर्याप्त है।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. मीराबाई ने मूल रूप से राजस्थान में जन्म लिया। अत: इनकी रचनाओं में राजस्थानी का प्रभाव पड़ा है। मीराबाई ने अनेक साधु-संतों, योगियों, यतियों का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। अत: अन्य भाषाओं-ब्रज, गुजराती, पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी हिंदी का प्रयोग भी इनकी रचनाओं में मिलता है। मीराबाई की भाषा सरल, सरस और सुबोध है। इनकी रचनाओं में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है। भाषा में मधुरता, कोमलता एवं सरसता के गुण विद्यमान है। इनके पदों में भक्ति रस का प्रवाह है। अनुप्रास, दृष्टांत आदि अलंकारों ने भाषा के प्रयोग को प्रवाहमय बनाने में सहायता की है।

उत्तर 2. मीराबाई भक्ति-रस की प्रधान कवयित्री हैं। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की आध्यात्मिक प्रेरणा ने जिन कवियों को जन्म दिया, उनमें मीराबाई का स्थान विशेष है। इनके भक्तिपरक पद पूरे उत्तर भारत सहित गुजरात, बिहार और बंगाल में प्रचलित हैं जिसमें कृष्ण भक्ति की धारा प्रवाहित होती है। पाठ में दिए गए पदों में उनकी भक्ति-भावना का सशक्त परिचय मिलता है। इन दोनों पदों में मीराबाई ने अपने परम आराध्य श्रीकृष्ण का ही गुणगान किया है। प्रथम पद में वे 'सर्वजन सुखाय' का अनुसरण करते हुए भगवान श्रीकृष्ण से सर्वजन के कष्टों को दूर करने की प्रार्थना करने के साथ ही उनकी क्षमताओं का स्मरण करती हैं और उन्हें उनका कर्तव्य याद दिलाने का प्रयत्न करती हैं जिससे उनका दीन-बंधु नाम कलंकित न हो। दूसरे पद में वे अपने भक्तिभाव को प्रकट करते हुए कहती हैं–वे श्यामसुंदर उन्हें अपनी दासी बना लें। उनकी दासी बनकर वे नित उनके दर्शन, कीर्तन-सुमिरन करती हुई उनके दर्शन प्राप्त करेंगी। यह सब न प्राप्त होने के कारण उनका मन अधीर हो उठा है।

उत्तर 3. मीराबाई श्रीकृष्ण का दर्शन प्राप्त करने के लिए उनका चाकर (दासी) बनना चाहती है। वे उनकी दासी बनकर श्रीकृष्ण के विहार के लिए एक बाग लगाएँगी और उसी बहाने उन्हें श्याम के दर्शन प्राप्त होंगे। लीला गान करेंगी। वे कहती हैं कि चाकरी के बदले तो वे उनके दर्शन प्राप्त करेंगी और अपने जीवन-यापन के खर्चे के लिए कुंज गलियों में उनके यशगान करेंगी। इससे उन्हें उनकी भाव-भक्ति की निधि (खज़ाना) प्राप्त होगी। मीरा अपने आराध्य भगवान श्रीकृष्ण से मिलन को व्याकुल हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए वे सब करने को तैयार हैं जिससे उनके आराध्य उनसे प्रसन्न होकर उन्हें स्वीकार कर लें। इस पद में मीरा की श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य भावना प्रकट हुई है। इस प्रकार की भक्ति को हम दास्य-भक्ति कहते हैं जिसमें आराधक अपने आराध्य को भगवान नहीं मानता बल्कि अपना मिलक मानता है।

उत्तर 4. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन बहुत मधुर और सरल शब्दों में किया है। इस पद में मीराबाई की दास्य-भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उसी भावना के अंतर्गत वे अपने आराध्य का सौंदर्य वर्णन ईश्वर के रूप में न कर अपने स्वामी के रूप में करती हैं। वे कहती हैं– उनके आराध्य के सिर पर मोर-पंख लगा मुकुट शोभायमान हो रहा है तथा उनके गले में वैजंती की माला सुशोभित है। अपने अधरों पर मुरली धारण किए हुए वे वृंदावन में गौएँ चराते हैं। ऐसे अपने स्वामी के लिए मैं अपने हृदय में ऊँचे महल बनाऊँगी और उसके बीच में प्रेम के बाग लगाऊँगी और वहीं केसरिया साड़ी पहनकर उनके दर्शन करूँगी।

उत्तर 5. मीराबाई की प्रस्तुत पंक्तियों का काव्य सौंदर्य इस प्रकार है–

कवयित्री कहती हैं–हे प्रभु, आप सभी जनों के कष्टों को दूर करें। यहाँ 'सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय' की भावना व्यंजित हुई है। कवयित्री भगवान को उनकी क्षमता की याद दिलाते हुए कहती हैं–हे प्रभु! कौरवों की द्यूत सभा में द्रौपदी का चीर हरण करते दुशासन से आपने ही रक्षा की और द्रौपदी की चीर बढ़ाकर उसकी लज्जा की रक्षा की थी। आप इतने भक्त वत्सल हैं कि अपने भक्त प्रहलाद की प्राण रक्षा के लिए आपने नरसिंह का रूप धारण कर उसके पिता दैत्यराज हिरण्यकशिपु का वध किया था। आप सर्वशक्तिमान हैं, आप सर्व सामर्थ्यवान हैं अत: आप सबके कष्टों को दूर करें। इन पंक्तियों में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है। भाषा में कोमलता, सरसता और मधुरता के गुण विद्यमान हैं।

पाठ–3

मनुष्यता

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

उत्तर (i) प्रस्तुत कविता में कवि उसी को उदार मानता है जो दूसरों के सुख-दुख के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने को तत्पर रहता है। इसीलिए कवि कह रहा है कि अच्छी तरह विचार कर लो कि इस संसार में आया प्रत्येक प्राणी मरणशील है। इनमें मनुष्य प्रबुद्ध है। मनुष्य को चाहिए कि वह ऐसी मृत्यु को प्राप्त हो कि मरणोपरांत भी लोग उसे याद करें। कवि ऐसे लोगों को मनुष्य की श्रेणी में नहीं मानता जो केवल अपनी ही सोचे। ऐसे लोग पशु की श्रेणी में गण्य हैं। अत: दूसरे का हित साधने वालों की कीर्ति का बखान स्वयं सरस्वती करती हैं।

उत्तर (ii) मनुष्य कहलाने का वास्तविक अधिकारी वही है जो मनुष्य के लिए, मनुष्यता की रक्षा तथा मनुष्य के कल्याण के लिए अपने प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार हो। ऐसे ही उदार पुरुष की सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है जो अपना हित साधने के पहले दूसरे का हित साधने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे ही लोगों की धरा ऋणी है, जो दूसरों की सहायता के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दें।

उत्तर (iii) उदार पुरुषों की पूजा समस्त सृष्टि करती है।

काव्यांश 2

उत्तर (i) दधीचि का गुणगान इसलिए किया गया है कि देवताओं की रक्षा के लिए उन्होंने अपना अस्थि-पंजर दान कर दिया। देवलोक में वृत्रासुर राक्षस ने अपना अधिकार कर लिया और इंद्र आदि देवाधिपतियों को अपने अधीन कर लिया। वृत्रासुर की मृत्यु तभी हो सकती थी जब महर्षि दधीचि की अस्थियों से वज्र बने। उसी वज्र के प्रहार से वृत्रासुर की मृत्यु संभव है। देवताओं ने ऋषि दधीचि से यह प्रार्थना की। दधीचि ने उनकी प्रार्थना सुनी। अपने योगबल से उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया, देवताओं ने उनके अस्थि-पंजर से वज्र बनाया और उसी वज्र से वृत्रासुर का वध किया और संकट से मुक्त हुए।

उत्तर (ii) महावीर कर्ण वह महारथी था जिनके बल पर कौरव युवराज दुर्योधन ने महाभारत संग्राम की नींव रखी। कर्ण के जन्म के समय ही उनका शरीर कवच और कुंडल से ढका था जिसने कर्ण को अजेय बना दिया था। अर्जुन के कल्याण के लिए इंद्र ने ब्राहमण का वेश बना कर्ण से उसका कवच और कुंडल माँग लिया। दानवीर कर्ण ने सहर्ष वह कवच और कुंडल उतार ब्राहमणरूपी इंद्र को दे दिया। यदि कर्ण के शरीर पर कवच और कुंडल रहता तो उन्हें अर्जुन कभी भी न मार पाते।

उत्तर (iii) मृत्यु से इसलिए नहीं डरना चाहिए क्योंकि यह शरीर अनित्य है फिर मृत्यु से डरना कैसा।

काव्यांश 3

उत्तर (i) मनुष्य को कभी भी धन का अहंकार नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार मनुष्य का शरीर अनित्य है, उसी प्रकार धन-संपदा भी अस्थिर है। अत: धन पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए। मनुष्य को अपनी शक्ति-सामर्थ्य पर भी घमंड नहीं करना चाहिए। इस संसार में कोई अनाथ नहीं है क्योंकि ईश्वर सदैव प्रत्येक प्राणी में विद्‌यमान हैं। अत: कभी भी मन में अहंकार भाव जागृत नहीं होने देना चाहिए।

उत्तर (ii) कवि ने भाग्यहीन उसे बताया है जो अधीर हो उठता है, जो धैर्यहीन है, जिसे उस परमपिता पर भरोसा नहीं है जो प्रत्येक क्षण उसमें अंतर्वास करते हैं, जो तनिक भी कठिनाई आने पर घबरा जाता है और अपना आत्मबल खो देता है उसे ही कवि ने भाग्यहीन बताया है।

उत्तर (iii) कवि – राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कविता – मनुष्यता।

काव्यांश 4

उत्तर (i) इस पद्‌यांश में कवि मनुष्य को यह संदेश देना चाहता है कि मनुष्य ही मनुष्य का एकमात्र बंधु है–यह विवेक जागृत होना सबसे बड़ी बात है। सभी के माता-पिता वही परमपिता परमेश्वर हैं। कवि कह रहा है कि कोई भी कर्म न तो बड़े होते हैं और न छोटे। यह बड़े-छोटे कर्म का भेद केवल बाहर से दिखाई देता है। अत: कर्म के आधार पर किसी को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए।

उत्तर (ii) विवेकवान मनुष्य वही है जो बिना किसी भेदभाव के मनुष्य को अपना बंधु मानता है। जिसके पास यह विवेक है कि कोई भी कर्म न तो छोटे होते हैं, न ही बड़े और वह सभी कर्मों को समान महत्व का मानता है। कर्मों का भेद फलानुसार बाह्‌य रूप में अवश्य दिखाई देता है परंतु वास्तव में ऐसा होता नहीं है।

उत्तर (iii) वेदों में इस सत्य को उद्‌घाटित किया गया है कि सभी कर्म एक समान हैं। भेद हमें बाह्‌य रूप में अवश्य दिखाई देता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि ने उसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है जिसे मरने के बाद भी लोग याद करें।

उत्तर 2. मनुष्य को तुच्छ धन पर गर्व नहीं करना चाहिए।

उत्तर 3. इतिहास उन लोगों के कारनामों से भरा पड़ा है जिन्होंने परार्थ में अपने प्राणों की परवाह न करते हुए सहर्ष अपने प्राण दे दिए।

उत्तर 4. कवि के अनुसार मृत्यु ऐसी होनी चाहिए जिसे सभी लोग याद करें।

उत्तर 5. पशु-वृत्ति केवल स्वहित का ही ध्यान रखती है, परहित का नहीं।

उत्तर 6. भाग्यहीन व्यक्ति उसे कहा गया है जो कठिनाई-परेशानी में अधीर हो उठता है।

उत्तर 7. उदार व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान है कि जो पशु के समान प्रवृत्ति वाला न होकर अपने दूसरे भाई-बंधु के लिए त्याग की भावना से भरा हो।

उत्तर 8. उस व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है जिसकी सुमृत्यु नहीं हुई। ऐसे व्यक्ति का जीना और मरना दोनों व्यर्थ है।

उत्तर 9. रंतिदेव एक राजा थे जो बड़े दयालु और दानवीर थे। उन्होंने प्रजा की सेवा के लिए अपना सर्वस्व दान कर दिया। अंतत: ईश्वर की कृपा से परम पद को प्राप्त हुए।

उत्तर 10. राजा उशीनर ने शरण में आए एक कबूतर की प्राण रक्षा के लिए उसके बराबर मांसदान किया था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि उनके जीने और मरने को एक समान और व्यर्थ मानता है, जिनकी सुमृत्यु नहीं हुई। कवि कह रहा है, अच्छी तरह विचार कर लो कि इस संसार में जो जन्मा है, उसे निश्चित रूप से मरना है फिर मृत्यु से क्या डरना। कवि कह रहा है कि जब मृत्यु निश्चित है तो ऐसी मृत्यु मरे कि संसार याद रखे। संसार के कल्याण के लिए मरे। ऐसे लोगों की मृत्यु को सारा संसार याद रखता है।

उत्तर 2. मनुष्य किसी को अनाथ तब समझने लगता है, जब उसे धन का अहंकार हो जाता है और वह अपने को सनाथ और सामर्थ्यवान समझने लगता है। इसीलिए इस पद्‌यांश में कवि कहता है कि इस तुच्छ धन के लिए कभी भी अहंकार मत करो। धन के

बल पर अपने को सनाथ समझने की भूल मत करो। इस संसार में कोई भी अनाथ नहीं है क्योंकि सबके साथ वह परमपिता परमेश्वर है उस दीनबंधु के बहुत विशाल हाथ हैं। वे कब राजा को रंक और रंक को राजा बना दें कोई भरोसा नहीं।

उत्तर 3. हमें इस संसार में किसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि वह परमपिता परमेश्वर सबके साथ हैं और उस दयानिधान परमेश्वर के हाथ बहुत लंबे हैं। वे कब किस पर कृपा कर देंगे कहा नहीं जा सकता। अत: कभी भी किसी को अहंकार के वशीभूत होकर अनाथ समझने की भूल नहीं करनी चाहिए।

उत्तर 4. शिवि उशीनर देश के सम्राट थे। वे बहुत प्रजा वत्सल और दयालु थे। वे अपने राजदरबार में बैठे थे कि एक घायल कबूतर उनकी गोद में आ बैठा। कबूतर का पीछा करता एक बाज पक्षी भी आ पहुँचा। वह राजा से कबूतर को वापस माँगने लगा। वह भूख से पीड़ित था और कबूतर उसका शिकार था, जिसपर बाज का अधिकार था। राजा ने कहा शरणागत की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। बाज ने कहा–'भूखे की रक्षा करना भी आपका कर्तव्य है।' राजा ने बाज की बात मान ली और कहा–'इस कबूतर के बराबर मांस लेकर आप अपनी भूख शांत कीजिए।' यह कहकर राजा ने अपने शरीर से मांस काटकर तराजू पर रखा। कबूतर का वजन अधिक था राजा ने फिर मांस काटकर रखा। फिर भी कबूतर के बराबर नहीं हुआ। अंतत: राजा स्वयं तराजू पर बैठ गए। यह देख बाज का रूप धारण किए देवराज इंद्र प्रकट हो गए। कबूतर का रूप धारण किए अग्निदेव प्रकट हुए। बोले–'राजन, हम आपकी प्रजा वत्सलता की परीक्षा ले रहे थे। आप खरे उतरे।' उन्होंने उन्हें वरदान दिया और अपने लोक चले गए।

उत्तर 5. कवि ने सहानुभूति को महाविभूति कहा है। अपने समान ही दूसरे की अनुभूति करना एक ऐसा गुण है जिससे दूसरे की संवेदनाओं का पता चलता है और मनुष्य उसी के अनुरूप दूसरे से व्यवहार करता है। सहानुभूति सौमनस्यता स्थापित करती है। सहानुभूति से सद्‌भावना का जन्म होता है जो मनुष्यता को स्थापित करता है। इसीलिए इसे महाविभूति कहा गया है।

उत्तर 6. कवि कह रहा है कि मन में यह विश्वास रखते हुए कि अनंत अंतरिक्ष में हमारी रक्षा के लिए परमपिता परमेश्वर हैं, एक दूसरे का सहयोग लेते और देते हुए सभी लोग आगे बढ़ो, ऐसा न हो कि किसी के मौजूद होने पर भी किसी का काम न हो, एक–दूसरे के प्रति सद्‌भाव रखते हुए अपने लक्ष्य पर अग्रसर रहो तभी तुम्हें सफलता मिल सकेगी। मार्ग में आने वाली समस्त विघ्न–बाधाओं को दूर करते हुए आगे बढ़ो, आपसी सहानुभूति न कम हो, आपस में भेदभाव न हो और साहसपूर्वक आगे बढ़ो, सफलता तुम्हारे कदम चुमेंगी।

उत्तर 7. इस पंक्ति के माध्यम से कवि यह सीख देना चाहता है कि एक–दूसरे के प्रति हमारी सहयोग की भावना समाप्त न होने पाए जिससे किसी की सहायता के बिना किसी का काम रुक न जाए। अपने मन में एक–दूसरे के प्रति सहयोग करने की भावना न समाप्त होने पाए।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य के उस कृत्य को अनर्थ कहा है कि यदि एक भाई एक दूसरे भाई के सुख–दुख में सहयोग न करे, भाई की पीड़ा को हरने का प्रयत्न न करे यह एक अनर्थ ही है। यदि एक मनुष्य ही दूसरे मनुष्य के दुख को दूर करने का प्रयत्न नहीं करेगा तो आखिर और कौन सहायता करेगा। इस कविता के माध्यम से कवि ने प्रत्येक मनुष्य को एकसमान बताया है और सबको आपस में मिलकर एक–दूसरे का सहयोगी होने का संदेश दिया है। परंपरावलंबन से ही उन्नति और सफलता का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। कवि कहता है कि प्रत्येक मनुष्य के परमपिता एक ही हैं फिर मनुष्य–मनुष्य में भेद कैसा?

उत्तर 2. मनुष्यता एक सार्वभौम भाव है जो कभी समाप्त नहीं हो सकती। मानवता की समाप्ति का अर्थ है सृष्टि का विनाश। जिस देश में, समाज में मनुष्यता का अभाव होता जाएगा वह देश–समाज पतन की ओर अग्रसर होता जाएगा। आज के परिवेश में भी मानवता या मनुष्यता का अस्तित्व उसी परिमाण में है, जिस परिमाण में कवि के समय था। हाँ, उसके स्वरूप में परिवर्तन अवश्य हुआ। आज मनुष्यता का भाव स्वार्थ के मूल्य पर आधारित है। पहले मनुष्यता हृदय के भावों पर आधारित थी। लेकिन आज भी मनुष्यता है। इसका जीता–जागता उदाहरण 'निर्भया हत्याकांड' है जिसके परिणामस्वरूप विरोध में पूरी दिल्ली और इसके आस–पास के शहरों में लोग सड़कों पर उतर आए।

उत्तर 3. उशीनर के राजा शिवि ने दो प्राणियों की रक्षा के लिए अपने शरीर का मांस देना उचित समझा जिससे शिकारी पक्षी बाज की बुभुक्षा भी शांत हो जाए और घायल निरीह पक्षी कबूतर के भी प्राण बच जाएँ। इस प्रकार उन्होंने अपने मानवीय गुणों का परिचय देते हुए मानवता की रक्षा की।

महर्षि दधीचि ने देवलोक की रक्षा और इंद्र आदि देवताओं की प्राण रक्षा के लिए देवताओं के आग्रह पर अपना शरीर त्याग दिया और अपनी अस्थियों का दान कर दिया जिससे वज्र बना। उसी के प्रहार से वृत्रासुर का वध हुआ और देवलोक उसके अधिकार से मुक्त हुआ। कर्ण एक ऐसे महारथी थे जिनके बल पर कौरव पक्ष के युवराज दुर्योधन महाभारत युद्ध के सूत्रधार बने। कर्ण की ख्याति दानियों में भी थी। इनके जन्म के समय से ही इनके शरीर पर दैवीय कवच और कुंडल था जिससे वे

अजेय थे। प्रात: सूर्य आराधना के समय इनसे कोई कुछ भी माँगता, वे अवश्य देते। एक दिन ब्राह्मण वेशधारी इंद्र ने इनसे कवच और कुंडल माँग लिया। कर्ण जानते थे कि वे अन्याय का साथ दे रहे हैं क्योंकि दुर्योधन एक निरंकुश तथा अन्यायी व अहंकारी पुत्र था। अत: अन्याय की विजय न हो इसके लिए उन्होंने अपना कवच और कुंडल दान कर दिया।

उत्तर 4. व्यक्ति को मानवता का अनुपालन करते हुए सहकारितापूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए। सभी लोग एक ही परमपिता परमेश्वर की संतान हैं। अत: सभी में आपस में भ्रातृत्व प्रेम होना चाहिए। कर्मों के आधार पर आपस में अलगाव नहीं होने चाहिए। कर्म कोई छोटा या बड़ा नहीं होता अत: उसके आधार पर आपस में मतभेद नहीं होने चाहिए।

हमें आपस में मिलकर एक-दूसरे से कदम से कदम मिलाते हुए एक-दूसरे से सहयोग लेते-देते हुए अपने लक्ष्य पर बढ़ना चाहिए। इसी विधि से हमें सफलता प्राप्त हो सकेगी। विभक्त समाज कभी प्रगति पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता। एकता, सहकारिता और मनुष्यता ही व्यक्ति, समाज और देश की प्रगति में मील का पत्थर हो सकते हैं।

उत्तर 5. प्रकृति के अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें चेतना शक्ति की प्रबलता होती है। यही मनुष्य दूसरों के हितों का ख्याल रखने में तथा औरों के लिए भी कुछ करने में समर्थ हो सकता है। प्रस्तुत पाठ में कवि उसी को मनुष्य मानने को तैयार है जो स्वयं के लिए और अपनों के लिए तो जीते-मरते ही हैं परंतु देश और समाज के हितों के लिए भी अपना तन-मन-धन बलिदान करने के लिए हरदम तैयार रहते हैं। केवल स्वयं और अपनों के लिए जीने-मरने वालों में कवि मनुष्यता के पूरे लक्षण नहीं मानता। कवि उन्हीं को महान मानता है जिनमें अपना और अपनों के हित चिंतन से कहीं पहले और सर्वोपरि दूसरों का हित चिंतन हो। उस मनुष्य में ऐसे गुण हों जिनके कारण कोई मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होने पर भी युगों तक औरों की यादों में भी बना रह पाता है। ऐसे लोगों की मृत्यु सुमृत्यु की श्रेणी में गिनी जाती है।

उत्तर 6. प्रस्तुत कविता के अनुसार प्रत्येक मनुष्य एक ही परमपिता परमेश्वर की संतान हैं। सबके जन्मदाता, पालक, संरक्षक वही एक हैं। इस प्रकार समस्त मनुष्य जाति आपस में भाई-भाई हैं। यद्यपि उनमें आपस में कर्मों का भेद हो सकता है वह उनके कर्मफल के कारण है। कर्म कभी अच्छे-बुरे, छोटे-बड़े नहीं होते। प्रत्येक कर्म एक-दूसरे के पूरक होते हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा रहता है। फिर काम छोटे-बड़े और अच्छे-खराब कैसे हो सकते हैं। अत: मनुष्य मात्र बंधु है, कर्मों के आधार पर उनमें भेदभाव करना असंगत है।

उत्तर 7. कवि ने सबको एक-साथ मिलकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है कि प्रत्येक मनुष्य एक ही परमपिता की संतान हैं। अत: प्रत्येक मनुष्य में बंधुत्व की भावना होनी चाहिए। किसी भी मनुष्य को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि जब सबका परमपिता एक है तो कोई अनाथ कैसे हो सकता है? अत: किसी को अपने सनाथ होने का गर्व शोभा नहीं देता। दीन दयालु परमात्मा के बहुत विशाल हाथ हैं। अत: किसी प्रकार का अहंकार न करते हुए कवि ने सबको मिलकर चलने की प्रेरणा दी है।

उत्तर 8. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि मनुष्य मरणशील प्राणी है। उसके पास सोचने-समझने की बुद्धि के अलावा त्याग और परोपकार जैसे मानवीय मूल्य भी हैं। उसमें चिंतनशीलता, त्याग, उदारता, प्रेम, सद्भाव जैसे मानवोचित गुणों का संगम है। उसे इनका सदुपयोग करना चाहिए। मनुष्य को ऐसे कर्म करने चाहिए कि वह अपने सत्कार्यों से समृत्यु प्राप्त करें। इसके अतिरिक्त कवि ने अभिमान का त्याग कर मिल-जुलकर रहने का भी संदेश दिया है।

पाठ–4

पर्वत प्रदेश में पावस

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

उत्तर (i) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु का वर्णन मानवीकरण करके किया है। वर्षा ऋतु में प्रकृति अपना वेश क्षण-क्षण बदलती प्रतीत होती है। मेखलाकार पर्वतों की विशाल श्रृंखला है। उस पर्वत श्रृंखला के बीच खिले सहस्रों पुष्प मानो उन पर्वतों की आँखें प्रतीत हो रहे थे।

उत्तर (ii) मेखलाकार पर्वत श्रेणी के उपत्यका (नीचे के हिस्से) एक विशाल सरोवर है। उसमें पर्वतों का प्रतिबिंब ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो वे पर्वत उस जलरूपी दर्पण में अपना विशाल आकार देख रहा है।

उत्तर (iii) कवि – प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत

कविता – पर्वत प्रदेश में पावस।

काव्यांश 2

उत्तर (i) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने निर्झर को पर्वतों के गौरव का गाथागान करने वाले चारण के रूप में प्रस्तुत किया है। इन झरनों के गिरने से होने वाली कल-कल ध्वनि कवि के नस-नस में उत्साह का संचार कर रही है।

उत्तर (ii) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने पर्वत से गिरते झरनों की आवाज़ को पर्वत का गौरवगाथा का गान करता हुआ व्यक्त किया है। इन झरनों से नीचे गिरते हुए झाग, मोतियों की सुंदर लड़ियों के समान दिखाई दे रहे हैं और निर्झर के गिरने से निकलने वाली कल-कल ध्वनि कवि के नस-नस में उत्साह का संचार कर रही हैं।

उत्तर (ii) अनिमेष शब्द का अर्थ है– बिना पलक झपकाए या अपलक।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'पर्वत प्रदेश में पावस' नामक कविता में वर्षा ऋतु का वर्णन किया गया है।

उत्तर 2. पहाड़ी के बीच (उर या हृदय) से निकलकर (उगकर) ऊपर खड़े पेड़ अपनी उच्चाकांक्षा सदृश ऊपर देखते दिखाई दे रहे हैं।

उत्तर 3. कवि ने मोती की लड़ियों की भाँति सुंदर निर्झर के गिरने से उत्पन्न सफ़ेद झागों को कहा है।

उत्तर 4. शाल वृक्ष भयभीत होकर धरा में धँस गए।

उत्तर 5. पर्वतों का आकार मेखलाकार है।

उत्तर 6. पर्वत के चरणों में ताल (झील या सरोवर) पल रहे थे।

उत्तर 7. कवि ने पर्वत के चरणों अर्थात पर्वत के नीचे स्थित सरोवर के जल को दर्पण कहा है।

उत्तर 8. झाग भरे निर्झर मोतियों की लड़ी के समान लग रहे थे।

उत्तर 9. पहाड़ पर वृक्ष चिंतित भाव से अपलक नीरव नभ को निहार रहे थे।

उत्तर 10. इसका अभिप्राय यह है कि पर्वत पर उगे विशाल वृक्ष ऐसे लगते हैं मानो इनके हृदय में अनेक महत्वाकांक्षाएँ लिए आकाश की ओर चिंतातुर देख रहे हों।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. मेखलाकार का अर्थ है– करधनी के आकार का। कवि ने यहाँ इसका प्रयोग पर्वत श्रृंखला के रूप में हुआ है। यह पर्वत श्रृंखला पावस ऋतु में दूर-दूर तक फैली दिखाई देती है।

उत्तर 2. कविता में पर्वत को निम्नलिखित मानवीय कार्य करते हुए दर्शाया गया है–

- पर्वत श्रेणी पर खिले सहस्त्रों पुष्प पर्वतों की आँखें प्रतीत हो रही हैं। पुष्पों को पर्वतों की आँखों के रूप में दिखाया गया है।
- पर्वतों के चरणों में स्थित ताल के जल को दर्पण के रूप में और जल में प्रतिबिंबित पर्वतों को दर्पण में निहारता दिखाया गया है।

उत्तर 3. कवि ने पर्वतीय प्रदेश में स्थित तालाब के सौंदर्य का चित्रण तालाब का मानवीकरण करके किया है। पर्वतों के चरणों में पला ताल और उसमें पूरित जलराशि की कल्पना दर्पण से की गई है। पर्वतों के विशाल आकार का जल में पड़ता प्रतिबिंब ऐसा प्रतीत होता है मानो महाकार पर्वत नीचे जल में निहार रहे हैं।

उत्तर 4. पर्वत से गिरने वाले झरनों की विशेषता इस प्रकार है कि पहाड़ से गिर रहे झरने ऐसा प्रतीत हो रहे हैं मानो वे पहाड़ों की गौरवगाथा का गान कर रहे हैं। निर्झर के गिरते जल से होने वाली कल-कल ध्वनि कवि के नस-नस में उत्साह का संचार कर रही है। निर्झर के नीचे गिरने से उत्पन्न होने वाली झाग मोती की लड़ियों-सी प्रतीत हो रही है।

उत्तर 5. पर्वतों पर उगे पेड़ ऊपर उठकर इस प्रकार प्रतीत हो रहे हैं मानो इनके हृदय में अनेक महत्वाकांक्षाएँ लिए आकाश की ओर चिंतातुर देख रहे हैं।

उत्तर 6. प्रस्तुत कविता में पर्वत के प्रति कवि की कल्पना बहुत मनोरम है। इसका मुख्य कारण है कवि का जीवन इन्हीं पहाड़ों के प्राकृतिक सौंदर्य के बीच व्यतीत होना। यही कारण है कि जब हम पंत जी की कविता पढ़ते हैं तो लगता है हम इस समय पर्वतीय प्रदेश में ही विचरण कर रहे हैं। प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने पर्वतों के सौंदर्य को मानवीकृत करके कविता को अधिक चिंताकर्षक और मनोहारी बना दिया है।

उत्तर 7. प्रस्तुत कविता में कवि ने पर्वतों की तलहटी में (चरणों में) स्थित ताल (तालाब) की तुलना दर्पण से की है जो प्रसंगानुसार एकदम सटीक है जो एक सत्य कल्पना का सृजन करती है। तालाब के विशाल जलराशि पर, पहाड़ों और उसके बीच वृक्षों का प्रतिबिंब उसी प्रकार दिखाई दे रहा है जैसा वास्तविक दर्पण में दिखाई देता। अत: यहाँ कवि की कल्पना सत्य आधारित होने के कारण काव्य चमत्कार करने में समर्थ है।

उत्तर 8. प्रस्तुत कविता में कवि ने तालाब की समानता दर्पण से की है। जिस तरह दर्पण से प्रतिबिंब स्वच्छ व स्पष्ट दिखाई देता है, उसी प्रकार तालाब का जल स्वच्छ और निर्मल होता है। पर्वत अपना प्रतिबिंब दर्पण रूपी तालाब के जल में देखते हैं।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. पर्वत प्रदेश में आकाश में अचानक काले बादलों का समूह प्रकट होता है। आकाश में उड़ते बादलों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो पहाड़ों में सफ़ेद और चमकीले पंख लग गए हों और वे उड़ रहे हों। पहाड़ों से गिरते निर्झर जो अखरत नीचे झर-झर करते गिरते रहते थे, अचानक लुप्त हो गए हैं। बादलों के बीच केवल उनकी आवाज़ सुनाई दे रही है। ऐसा लगता है मानो आकाश ही पृथ्वी पर टूट पड़ा हो। (पर्वत प्रदेशों में बादल पृथ्वी से उठते प्रतीत होते हैं) इंद्र की जादूगरी से पर्वत प्रदेश में उठते बादलों को देख ऐसा प्रतीत होता है मानो बादलों से भयभीत होकर पर्वतों पर उगे शाल पृथ्वी में धँस गए हों अर्थात दिखाई नहीं दे रहे हैं। तालाब के शीतल जल में पड़ती बूँदों के कारण तालाब के ऊपर उठता धुआँ ऐसा प्रतीत होता है मानो उसमें आग लग गई है। इस प्रकार इंद्र की कारीगरी से पावस ऋतु में पर्वत प्रदेश में प्रकृति का सौंदर्य और मनोरम हो उठता है।

उत्तर 2. पर्वतीय प्रदेश में पहाड़ों के ऊपर उगे वृक्ष पर्वतीय प्रदेश की शोभा बढ़ाते हुए ऐसे प्रतीत होते हैं मानो उनमें आकाश को चूम लेने की या आकाश की ऊँचाइयों तक पहुँचने की उच्चाकांक्षा के कारण और शायद इसी चिंता से ग्रस्त हो आतुरतापूर्वक अपलक नीरव आकाश की ओर देख रहे हैं। कविता के आधार पर पहाड़ के नीचे के स्थान पर उगे वृक्ष और उनकी हरियाली से ऐसा प्रतीत होता है कि पहाड़ अधोवस्त्र धारण किए हुए अपनी लज्जा को आवरण पहनाए हों। उनके चरणों या तल में स्थित तालाब पहाड़ों के चरण धोता प्रतीत होता है। इस प्रकार पर्वतों के ऊपर उगे वृक्षों के सौंदर्य और पर्वतों के नीचे व पास उगे वृक्षों के सौंदर्य में बहुत अंतर है। परंतु दोनों सौंदर्य में वृद्धि करने में सहायक है।

उत्तर 3. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के रचयिता हैं प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत। पंत जी का जन्म प्रकृति के सौंदर्य को अपने अंक में समेटे पर्वतीय प्रदेश में हुआ। इनका बचपन यहीं बीता और प्रकृति की अनुपम छटा की छाप इनके हृदय पर छोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी। प्रस्तुत कविता में उन्होंने वर्षा ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों का स्पष्टीकरण बहुत ही मनोहर शैली में किया है। प्रस्तुत कविता मन में एक अद्‌भुत रोमांच उत्पन्न करती है और प्रकृति के ऐसे अद्‌भुत सौंदर्य को अपनी आँखों से देखने और परखने की उत्सुकता उत्पन्न करती है। पंत जी की अधिकांश कविताएँ पढ़ते हुए भी यही उत्सुकता जागृत होती है साथ ही यह अनुभूति होती है कि हम किसी ऐसी प्रकृति की गोद में आ पहुँचे हैं, जहाँ पर्वतों की अनवरत अपार श्रृंखला है, जिसमें से अनेक झरने बह रहे हैं और हम इस सौंदर्य का रसपान करते आत्ममुग्ध हो रहे हैं। पंत जी ने अपने विषय को अनेक उपमाओं से सँवारकर कोमल एवं मधुर कर दिया है।

उत्तर 4. प्रस्तुत कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' में कवि ने पर्वतों से झरते हुए निर्झर का मानवीकरण करते हुए पर्वतों की गौरव गाथा का गान करता हुआ दिखाया है। पर्वत प्रदेश से गिरने वाले निर्झर की कल-कल ध्वनि ऐसी प्रतीत होती है मानो निर्झर पर्वतों का आभार व्यक्त करने के लिए पर्वतों के यश-गाथा का गान सुना रहे हैं।

कवि ने बहते हुए झरने की तुलना मोतियों की लड़ी से की है। क्योंकि बहते हुए झरनों की जल राशि भूतल से टकरा कर सफ़ेद झाग उत्पन्न करती है। इसलिए बहती हुई अनवरत झाग की पंक्ति की तुलना कवि ने मोतियों की लड़ी से की है।

उत्तर 5. 'सहस्र दृग-सुमन' का तात्पर्य है—सहस्रों नेत्र-पुष्प अर्थात ऐसे पुष्प जो नेत्र के समान दिखाई देते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने पहाड़ों पर खिले पुष्पों के समूह में पर्वतों के नेत्र की कल्पना की है। कवि कह रहा है कि पर्वतों पर ऊपर खिले पुष्पों के समूह ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानो ये पर्वतों के नेत्र हैं जिनके माध्यम से पर्वत तलहटी में स्थित तालाब में भरे जलरूपी दर्पण में अपने विशाल आकार को निरख रहे हैं। इस प्रकार इस पद का प्रयोग कवि ने पर्वतों के लिए किया है।

उत्तर 6. वर्षा ऋतु में बादलों के आने से सर्वत्र इस प्रकार धुंध छा गई है कि लगता है पहाड़ कहीं उड़ गए हों, पर्वत से गिरते झरने इसी धुंध में विलीन हो गए हैं, केवल झरने का नीरव घोष सुनाई दे रहा है। उस छाई धुंध में पर्वतों पर उगे शाल के वृक्ष इस प्रकार अदृश्य हो गए हैं मानो वे प्रकृति का ऐसा भयानक वेश देख भयवश पृथ्वी में धँस गए हों।

उत्तर 7. प्रस्तुत कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' में कवि ने मानवीकरण अलंकार का प्रयोग कर प्रकृति को सजीव बना दिया है। प्रकृति में इस प्रकार प्राण डालने का कार्य केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसका पर्वत प्रदेश से गहरा नाता हो। पंत जी का बचपन इन्हीं पहाड़ों के मनोरम दृश्यों के बीच बीता। यही कारण है कि उन्होंने प्रकृति को सजीव रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने पर्वतों पर खिले पुष्पों में पर्वतों की आँखों की कल्पना कर प्रकृति का मानवीकृत रूप प्रस्तुत किया।

उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
है झाँक रहे नीरव नभ पर—

इन पंक्तियों में 'तरुवर के झाँकने' में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग कर तरुवर को मानवीकृत करने का प्रयास किया गया है।

पाठ–5

तोप

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

उत्तर (i) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने 1857 की एक तोप का वर्णन किया है जो कंपनी बाग के मुहाने पर रखी गई है। यह तोप स्वतंत्र भारत की नयी पीढ़ी को–जो सुबह-शाम कंपनी बाग में आते हैं–बताती है कि मैं बहुत शक्तिशाली थी और अनेक भारतीय स्वतंत्रता प्रेमी सूरमाओं की अपने ज़माने में धज्जियाँ उड़ा दी थी अर्थात उन्हें मौत के घाट उतार दिया था।

उत्तर (ii) कवि कंपनी बाग में रखी 1857 की इस तोप के रख-रखाव का वर्णन करते हुए बताते हैं कि यह तोप साल भर में दो बार चमकाई जाती है, ठीक उसी तरह जैसे कंपनी बाग का रख-रखाव होता है। यह तोप अंग्रेज़ों का खौफ़ भारतीय जनमानस में उत्पन्न करने के लिए यहाँ रखी गई थी, यह बताने या इसका परिचय देने के लिए यहाँ रखी गई थी।

उत्तर (iii) हमें विरासत में यह 1857 की तोप और कंपनी बाग मिली है।

काव्यांश 2

उत्तर (i) कवि तोप का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि किसी का भी समय हरदम एक समान नहीं होता। आज इस तोप की शक्ति भी वह नहीं रह गई है जो अंग्रेज़ों के समय थी। आज इस पर पक्षियाँ बैठकर कलरव करती हैं। कभी-कभी तो गौरैया पक्षी शैतानी करती हैं और इस तोप के भीतर घुस जाती हैं। आज यह तोप बच्चों और चिड़ियों के मनोरंजन का केंद्र बन गई है।

उत्तर (ii) अब हमें यह तोप हमारे अतीत की गलतियों का परिचय देती हुई प्रतीत होती है जिस कारण हमारे देश को गुलामी का दंश झेलना पड़ा और जब हमारे देश के स्वतंत्रता के दीवाने इस गुलामी से मुक्त कराने के लिए आगे बढ़े तो इसी तोप ने बड़ी निर्ममता से उन्हें कुचल डाला।

उत्तर (iii) कवि – वीरेन डंगवाल, कविता का नाम – तोप।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. तोप नामक पाठ हमें यह याद दिलाता है कि यदि भविष्य में कोई ऐसी कंपनी हमारे देश में पाँव न जमाने पाए जिसके घाव अभी तक हमारे हृदय में हरे हैं।

उत्तर 2. कंपनी बाग के प्रवेश द्वार पर 1857 की एक तोप रखवा दी गई थी।

उत्तर 3. कंपनी बाग में रखी तोप को साल में दो बार चमकाया जाता था।

उत्तर 4. कंपनी बाग के मुहाने पर रखी तोप 1857 के समय की है।

उत्तर 5. कंपनी बाग में सुबह-शाम बहुत से सैलानी आते हैं।

उत्तर 6. कभी-कभी शैतानी में गौरैया तोप के भीतर घुस जाती है।

उत्तर 7. कंपनी बाग अंग्रेज़ों द्वारा निर्मित एक उद्यान है जिसके मुहाने पर यह तोप रखी गई है।

उत्तर 8. कंपनी बाग की तरह विरासत में मिली इस तोप की सँभाल की जाती है।

उत्तर 9. कंपनी बाग में रखी तोप की घुड़सवारी छोटे बच्चे करते हैं।

उत्तर 10. इसका तात्पर्य है–जब जनजागरण होता है तो चाहे कितनी सर्वशक्तिमान क्रूर सत्ता हो, उसे एक दिन उसके समक्ष झुकना ही होता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. प्रस्तुत पाठ में वर्णित तोप कंपनी बाग में रखी गई है। इस तोप को वहाँ अंग्रेज़ों ने रखवाया था जिससे उसे देखकर भारतीयों के मन में भय का संचार हो और वे 1857 के भारतीय सैनिक विद्रोह की पुनरावृत्ति का साहस न कर सकें।

उत्तर 2. कंपनी द्वारा तोप रखवाने का उद्देश्य यह था कि सन् 1857 में अंग्रेज़ी सेना में भर्ती सैनिकों ने अंग्रेज़ी शासन के अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। अंग्रेज़ी सेना ने इस विद्रोह को बड़ी नृशंसता से शांत कर दिया था। कंपनी ने यह तोप इसलिए कंपनी बाग के मुहाने पर स्थापित करवा दिया था कि भारतीय स्वतंत्रता की आवाज़ उठाने के लिए पुनः साहस न करें अन्यथा तोपों से उन्हें कुचल दिया जाएगा।

उत्तर 3. कंपनी बाग की तोप को साल भर में दो बार रंगने का उद्देश्य था, तोप का रख-रखाव करना जिससे अंग्रेज़ों की यह धरोहर जो सदैव हमारी परतंत्रता की एवं इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले स्वतंत्रता-प्रेमियों को इस तोप द्वारा उड़ा देने की याद दिलाती रहें।

उत्तर 4. कंपनी बाग में आने वाले सैलानियों को तोप अपने बारे में यह बताती है कि वह भी किसी समय बहुत शक्तिशाली थी। उसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले अनेक सूरमाओं को जबरदस्ती मौत के घाट उतार दिया था, अपने समय में। अब मैं केवल स्मृति-शेष रह गई हूँ।

उत्तर 5. यहाँ उन सूरमाओं के बारे में बात की जा रही है जिन्होंने सन् 1857 में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था और जिन्हें अंग्रेज़ी सरकार ने निर्दयतापूर्वक कुचल दिया था और उन सूरमाओं को तोप के सामने खड़ा कर उड़ा दिया गया था। यह उस समय का वर्णन है जब देश में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन था।

उत्तर 6. अंग्रेज़ी शासनकाल में 'कंपनी बाग' अंग्रेज़ अधिकारियों का सैरगाह था जहाँ सुबह-शाम वे सैर-सपाटा व मनोरंजन किया करते थे। वहाँ सुरक्षा व्यवस्था बहुत चाक-चौबंद थी सिवाय अंग्रेज़ और उनके अधीन गुलामों के वहाँ कोई नहीं जा सकता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कंपनी बाग का भ्रमण पर्यटकों और सैलानियों के लिए खोल दिया गया। जो उन्हें देखकर अपनी भूतकाल की दुर्दशा को याद रख सकें।

उत्तर 7. कवि ने तोप को चिड़ियों और बच्चों के खेलने की वस्तु बताकर यह कहना चाहता है कि क्रूरता, अत्याचार और नृशंसता पर टिका हुआ शासन सामाज़िक एकता के समक्ष अवश्य ही झुकता है, उसका निश्चित ही पतन होता है। जैसे—एक दिन तोप बहुत शक्तिशाली थी परंतु आज निष्क्रिय और निस्तेज हो गई है। उस पर बच्चे घुड़सवारी करते हैं और चिड़िया गपशप।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. इस कविता के माध्यम से हमें तोप के विषय में यह जानकारी मिलती है कि किसी समय यह तोप बहुत शक्तिशाली थी। अपनी शक्ति के अहंकार में इसने भारत की स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले अनेक सूरमा शहीदों को कुचल दिया था। समय हरदम एक समान नहीं होता। क्रूर से क्रूर और निरंकुश शासन भी एक दिन पराभव को प्राप्त होता है। आज ठीक यही दशा इस शक्ति संपन्न तोप की है। आज इसी तोप पर बच्चे बैठकर घुड़सवारी करते हैं और चिड़ियाँ इस पर बैठी गप-शप करती हैं, यहाँ तक छोटी गौरैया पक्षी इसके अंदर भी भ्रमण कर आती हैं।

उत्तर 2. प्रस्तुत पाठ में दो वस्तुओं के विषय में बताया गया है जो हमें विरासत के रूप में प्राप्त हुई हैं। वह हैं—कंपनी बाग और पाठ में वर्णित तोप। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार करने के उद्देश्य से ब्रिटेन से आई थी। परंतु वह अपने छल-छद्म से व्यापार करते-करते यहाँ की शासक बन बैठी। उसने यहाँ कुछ बाग बनवाए और कुछ तोपें भी तैयार की। उन तोपों ने भारत को आज़ाद कराने के लिए निकले वीर स्वतंत्रता प्रेमियों को मौत के घाट उतार दिया। परंतु एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वज देशप्रेमियों ने इस क्रूर और निरंकुश सत्ता को उखाड़ फेंका और तोप को निष्क्रिय कर दिया। इन दोनों वस्तुओं को विरासत में मिली हुई इसलिए बताया गया है कि हम इन विरासतों को देखकर याद रखें। जिससे फिर कोई कंपनी यहाँ पाँव न जमाने पाए। जिसकी नीयत ईस्ट इंडिया कंपनी की तरह हो और यहाँ फिर यही तांडव मचे जिसके घाव अभी तक हमारे दिलों में हरे हैं।

उत्तर 3. प्रस्तुत कविता 'तोप' के माध्यम से कवि हमें कई संदेश देना चाहता है; जैसे-हमें अपनी विरासतों की रक्षा करते हुए उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। इसके अलावा हमें अपनी शक्ति और धन का घमंड किए बिना सभी के साथ विनम्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। कोई भी चीज़ कितनी भी बड़ी क्यों न हो, कितनी भी ताकतवर क्यों न हो, उसकी दशा एक समान नही रहती; जैसे—तोप ने भी बड़े-बड़े सूरमाओं की धज्जियाँ उड़ाई थी परंतु समय गुजरने के साथ ही सब नष्ट हो गया। इसके अतिरिक्त यह हमें अंग्रेज़ों के शोषण और अत्याचारों की याद दिलाती है और बतलाती है कि सुरक्षा और हितों के प्रति सचेत रहें। यह हमारे उन तमाम शहीद स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने तथा उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी देती है।

उत्तर 4. विरासत में मिली चीज़ों की सँभाल इसलिए होती है क्योंकि ये वस्तुएँ हमारे पूर्वजों, हमारी प्राचीन परंपराओं से हमें परिचित कराती हैं। ये हमारे अतीत के इतिहास, अतीत की सभ्यता-संस्कृति, रहन-सहन आदि से परिचित कराती हैं। इससे हमें अपनी अतीत की जानकारी प्राप्त कर बहुत कुछ सीखने-समझने का अवसर मिलता है।

उत्तर 5. कंपनी बाग में रखी तोप हमें यह सीख देती है कि समय हरदम एक समान नहीं रहता। यह हमें बताती है कि चाहे कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसकी शक्ति का पराभव अवश्य होता है, पाठ में वर्णित तोप की तरह। एक समय था जब यही तोप भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले स्वतंत्रता-प्रेमी वीर सूरमाओं को उड़ा दिया था। आज वही तोप कंपनी बाग में पड़ी निष्क्रिय और निस्तेज हो गयी है जिस पर बच्चे आकर घुड़सवारी करते हैं और चिड़िया गपशप करती हैं। गौरैयाँ पक्षी तो उसके अंदर भी घूम आती हैं।

उत्तर 6. तोप शीर्षक कविता का गद्य रूपांतरण

अंग्रेज़ों द्वारा बनवाए गए कंपनी बाग के प्रवेश द्वार पर एक तोप रखी गई है। यह तोप 1857 की है। विरासत में मिली इस तोप की बहुत सँभाल (रख-रखाव) की जाती है जैसे कंपनी बाग की की जाती है। यह तोप साल में दो बार साफ़ कर चमकाई जाती है।

कंपनी बाग में सुबह-शाम बहुत से सैलानी आते हैं। यह तोप उन्हें बताती है कि वह किसी समय बहुत शक्तिशाली थी। इसने अनेक अच्छे-अच्छे सूरमाओं की धज्जियाँ उड़ा दी थी। (साथ ही) तोप सैलानियों को यह भी बताती है कि (अब तो वह इतनी निष्क्रिय और शक्तिहीन हो गई है) कि अब तो छोटे लड़के उस पर घुड़सवारी करते हैं। जब उनके घुड़सवारी से वह फुर्सत पाती है तो चिड़ियाँ आकर उसपर गपशप करती हैं। कभी-कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं, विशेषकर गौरैया पक्षी। ये पक्षियाँ यह बात बताती हैं कि दरअसल तोप चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उसका मुँह एक न एक दिन बंद होना ही है।

पाठ–6

कर चले हम फ़िदा

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

उत्तर (i) प्रस्तुत कविता में प्रसिद्ध शायर कवि कैफ़ी आज़मी ने सैनिकों के बलिदान की गौरव गाथा लिखी है जो अपने देश और देशवासियों की रक्षा करते हुए देश की सीमा पर अपने प्राण दे देते हैं। वे यह जानते हुए भी कि सीमा पर उनका प्राणांत होना सुनिश्चित है, फिर भी अपने देश की आन और देशवासियों के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं।

उत्तर (ii) सैनिकों को इस बात का गर्व है कि वे युद्ध क्षेत्र में साँसों के रुकने और नाड़ियों में रक्त जम जाने की स्थिति में भी हमने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने आगे बढ़ते हुए कदमों को रुकने नहीं दिया। उनका सिर धड़ से भले ही अलग हो गया परंतु हमने हिमालय का सिर नत नहीं होने दिया।

उत्तर (iii) नब्ज़ जमने का कारण बर्फीला वातावरण रहा होगा।

काव्यांश 2

उत्तर (i) धरती को दुल्हन इसलिए कहा गया है कि जिस तरह विवाह के बाद दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है, उसी तरह आज युद्ध में सैनिकों ने अपने रक्त से इस धरती को लाल कर दिया है इसलिए धरती को दुल्हन कहा गया है।

उत्तर (ii) हुस्न और इश्क को वह जवानी ही बदनाम करती है जिसमें अपनी आन-बान-शान के लिए प्राण न्योछावर करने की क्षमता ही नहीं होती। जिस व्यक्ति में अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जज़्बा नहीं होगा, वह हुस्न की रक्षा और इश्क का निर्वाह कैसे कर सकता है।

उत्तर (iii) कवि कहता है, ज़िंदा रहने के अवसर तो बहुत हैं, हम सामान्यत: ज़िंदा ही हैं परंतु प्राण देने के अवसर बार-बार नहीं आते।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कैफ़ी आज़मी ने 'हक़ीकत' फ़िल्म के लिए इस गीत की रचना की।

उत्तर 2. इस गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है सन् 1962 का भारत-चीन युद्ध।

उत्तर 3. सैनिकों को राम-लक्ष्मण इसलिए माना गया है कि सीमा पर यही एकमात्र मातृभूमि की रक्षा के लिए मौजूद होते हैं।

उत्तर 4. सैनिक अपने साथियों से कह रहे हैं कि अपने सिर पर कफ़न बाँध लो जिससे कोई रावण मातृभूमि स्वरूपा सीता का दामन न छू सके।

उत्तर 5. क्योंकि सीता की रक्षा के लिए लक्ष्मण ने एक रेखा खींची थी और कहा था–इस रेखा से बाहर मत आना।

उत्तर 6. हमने अपने देश की मर्यादा को कलंकित नहीं होने दिया।

उत्तर 7. सैनिक मरते-मरते अपना वतन देश के नौजवानों के हवाले करते जा रहे हैं, जिनका दायित्व है–देश की रक्षा।

उत्तर 8. सैनिक को अपना सिर कटने का दुख इसलिए नहीं है कि उसने अपने देश के गौरव को नष्ट नहीं होने दिया।

उत्तर 9. कुर्बानियों की राह सूना नहीं होना चाहिए क्योंकि सूना होने पर भारतमाता की अस्मिता खतरे में पड़ जाएगी।

उत्तर 10. हमें उन उठने वाले हाथों को तोड़ देना चाहिए जो भारतमाता के दामन (आँचल) पर उठने लगें।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. भारत-चीन युद्ध भारत की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं था। भारत के साथ चीन ने विश्वासघात किया था। दूसरी बात भारत के पास सैन्य संसाधनों का अभाव था। चीन एक बर्फीला प्रदेश है जो हिमालय के उत्तर में स्थित है। वहाँ हरदम बर्फ़ पड़ती रहती है। इतनी ठंड में भी भारतीय सैनिकों ने अपनी बहादुरी का परिचय दिया।

उत्तर 2. युद्ध की कठिन परिस्थितियों में भी अपने प्राणों की आहुति देते हुए भारतीय सैनिकों में वही ओज और अदम्य साहस दिखाई दे रहा था। वे परिस्थितियों के साथ समझौता न करते हुए अपने अदम्य साहस और वीरता से दुश्मन सेना का सामना करते रहे। मरते समय भी उनके चेहरे पर बलिदान और वीरता के भाव झलक रहे थे।

उत्तर 3. भारत-चीन युद्ध में भारत के सैनिकों को जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ा, उनमें सबसे बड़ी मुसीबत थी युद्ध-क्षेत्र में पड़ती कड़कड़ाती ठंड। दूसरा अभाव था सैन्य संसाधनों का। भारत अभी कुछ ही वर्षों पहले गुलामी से मुक्त हुआ था। देश की आर्थिक स्थिति युद्ध के अनुकूल नहीं थी। ठंड से बचने के लिए सैनिकों के पास साधन नहीं थे।

उत्तर 4. भारतीय परंपरा में नवविवाहिता वधू को लाल जोड़े पहनाकर विदा किया जाता है। भारत के सैनिकों ने देश की रक्षा के लिए हँसते-हँसते आत्मबलिदान दिया और उनके रक्त से धरती भी लाल हो गई। इसीलिए युद्ध क्षेत्र में सैनिक धरती को भी दुल्हन की कल्पना कर देश के नवयुवकों में उत्साह भरने के लिए संदेश दे रहे हैं।

उत्तर 5. सैनिक अपनी जवानी को सार्थक तब मानता है जब उसे अपनी मातृभूमि और देशवासियों की रक्षा के लिए आत्मबलिदान का अवसर प्राप्त होता है। वह मानता है कि जो जवानी देश की रक्षा के लिए काम न आए वह जवानी जवानी ही क्या।

उत्तर 6. 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में हिमालय का सिर भारत के गौरव का प्रतीक है। भारत-चीन युद्ध हिमालय की बर्फीली चोटियों पर ही लड़ा गया था। इन शीतकालीन कठिन परिस्थितियों में भारत के सैनिकों ने यह युद्ध बड़े साहस और वीरता से लड़ा था।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. जिन गीतों में हृदयस्पर्शी भाषा, मार्मिकता की प्रधानता, गेयता, कर्ण-प्रियता, सत्यता, लयबद्धता, संगीतात्मकता की प्रधानता होती है, वह जीवन भर के लिए स्मरणीय हो जाते हैं। गीतों में जन-चेतना को जागृत करने की अद्भुत शक्ति होती है और यह तभी संभव है जब गीत की भाषा सशक्त हो, सत्य पर आधारित हो। गीत की संगीतात्मकता और लयात्मकता भी हो तो वह गीत जीवन भर स्मरणीय हो जाते हैं।

उत्तर 2. 'कर चले हम फिदा' नामक कैफ़ी आज़मी रचित यह कविता भारत की युवाशक्ति में देश के प्रति प्रगाढ़ प्रेम और देश के मान-सम्मान के लिए आत्मबलिदान कर देने की प्रेरणा देने में पूर्ण सक्षम है। इस कविता में युद्ध क्षेत्र में सैन्य-संसाधनों का अभाव, ठंड से बचने का कोई भी उपाय न होने पर भी चिलचिलाती ठंड में शत्रु से बहादुरी से लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी परंतु पीठ दिखाकर भारत के गौरव को कलंकित नहीं होने दिया तथा भारत की युवाशक्ति को संदेश देते गए कि अब भारत की रक्षा का पूरा दायित्व तुम पर छोड़कर जा रहे हैं।

उत्तर 3. 'कर चले हम फ़िदा' कविता पूर्ण रूप से प्रासंगिकता के अनुकूल है। यह कविता जिस समय लिखी गई, उस समय भारत की आर्थिक स्थिति दयनीय थी, सैन्यशक्ति कमज़ोर थी। भारतीय सैनिकों में केवल अदम्य साहस और देश पर प्राण न्योछावर कर देने की दृढ़ इच्छाशक्ति ही थी जिसके बल पर भारत-चीन युद्ध लड़ा गया। उस समय देश के युवा नागरिकों और देशवासियों में उत्साहवर्द्धन करने के लिए उस समय की परिस्थिति में ऐसी कविता की रचना बहुत आवश्यक थी। कैफ़ी आज़मी ने उस दायित्व का निर्वहन किया और अपनी इस रचना के माध्यम से सैनिकों और जनमानस में राष्ट्र-प्रेम का संचार किया। इस प्रकार यह रचना पूर्ण रूप से समसामयिक थी।

उत्तर 4. इस कविता में कवि ने रावण की संज्ञा प्रत्येक शत्रु राष्ट्र को दी है जो भारत माता के पाक दामन को कलंकित करने की ताक में रहते हैं। राम-लक्ष्मण भारत के युवाओं के लिए प्रयुक्त हुआ है, जिनका दायित्व है—अपनी मातृभूमि की रक्षा करना। कवि सैनिकों के माध्यम से भारत की युवा-शक्ति को यह संदेश देना चाहता है कि अब हमारे बलिदान के उपरांत इस सीतारूपी मातृभूमि की रक्षा करने, भारत के मान-सम्मान की रक्षा के लिए अब तुम्हीं राम हो और तुम्हीं लक्ष्मण। इतना जागरूक रहना कि कहीं कोई रावण आकर भारतमाता के पवित्र आँचल को हाथ न लगा सके।

उत्तर 5. प्रस्तुत कविता में 'साथियों' शब्द का संबोधन सैनिकों द्वारा देश की युवाशक्ति के लिए किया गया है और देशवासियों के लिए किया गया है। देश की नवयुवा शक्ति के लिए यह एक शिष्टाचारपूर्ण शब्द है जिसका संबोधन कर देश की भावी पीढ़ी के लिए देश की रक्षा करने के लिए, भारत के गौरव की रक्षा के लिए, भारत माता के दामन को पाक रखने के लिए आह्वान किया है जिससे हमारी मातृभूमि की अस्मिता पर कोई रावण हाथ लगाने का साहस न कर सके। इसीलिए कवि ने भारतीय सैनिक, जो देश की रक्षा के लिए मृत्यु से दो-दो हाथ करने के लिए तैयार थे, युवा-शक्ति को राम-लक्ष्मण कहा और उन्हीं के कंधों पर देश की रक्षा का भार छोड़ मृत्यु को गले लगाने को तैयार थे।

उत्तर 6. कवि ने इस कविता में 'काफ़िलें' शब्द का प्रयोग करते हुए भारत के नवजवानों से आत्म-बलिदानों का नया जत्था तैयार करने का आह्वान किया, जिससे आत्मबलिदान का मार्ग सूना न होने पाए। सैनिक युद्ध क्षेत्र से यह संदेश दे रहे हैं कि हम तो इस वतन के लिए प्राण न्योछावर करने के लिए तत्पर हैं, हमारे बाद यह हमारा बलिदान व्यर्थ न जाएँ। जीत का जश्न तो तभी मनाया जा सकता है जब प्राण न्योछावर कर देने का जश्न पूरा होगा।

उत्तर 7. देश के सैनिक भारत की भावी पीढ़ी को उत्साहित करते हुए कह रहे हैं—वे इस देश के सम्मान की रक्षा के लिए मौत को गले लगाने जा रहे हैं। अब तुम लोग भी अपने-अपने सिरों पर कफ़न बाँध लो। हमारे मृत्यु के गले लगा लेने के बाद अब तुम्हारी ही ज़िम्मेदारी है, भारत माँ की रक्षा करने की। अब यह देश हम तुम्हारे हवाले करते जा रहे हैं। अब तुम लोग हमारे इस बलिदान को व्यर्थ मत जाने देना। सैनिक संदेश देते हुए कह रहे हैं कि तुम अपने खून से ऐसी रेखा डाल देना जिसे लांघने की कोई हिम्मत न करे।

उत्तर 8. ईश्वर-प्रदत्त यह ज़िंदगी सबको प्रिय होती है। कोई भी इसे आसानी से नहीं खोना चाहता। मृत्यु से जूझ रहा असाध्य रोगी जो कि जानता है कि उसकी मृत्यु सुनिश्चित है, फिर भी इस सत्य से रूबरू होने को तैयार नहीं होता लेकिन ठीक इसके विपरीत सैनिक का जीवन होता है जो अपने किसी स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि दूसरे के हितों, सुरक्षा या देश की आज़ादी की रक्षा के लिए सीना तानकर खड़ा हो जाता है, यह जानते हुए भी कि वह भले ही औरों की रक्षा के लिए खड़ा हो, पर उसके प्राण निश्चित रूप से जाने की संभावना है। प्रस्तुत पाठ युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हक़ीकत' के लिए लिखा गया था, यह ऐसे ही सैनिकों के दिलों का हाल बयान करता है जिन्हें अपने बलिदान पर गर्व है। इसी के साथ ही उन्हें देशवासियों से कुछ अपेक्षाएँ भी हैं और वह देशवासी कोई और नहीं, हम और आप ही हैं। इसलिए हमें अपने हृदय पर हाथ रखकर स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या हम उनकी अपेक्षाओं को पूरा कर रहे हैं?

पाठ–7

आत्मत्राण

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

काव्यांश 1

उत्तर (i) कवि सहायक न मिलने पर चाहता है और ईश्वर से यह प्रार्थना करता है कि हमारा बल और पौरुष न डिगे। हमारा आत्मबल न डगमगाए। वह कह रहा है कि यदि जीवन में लाभ वंचना होने के कारण यदि हानि भी उठानी पड़े तब भी हमारा आत्मबल, पौरुषक्षीण न हो।

उत्तर (ii) कवि करुणानिधान से केवल यह शक्ति चाहता है जो कठिनाई, संकटकाल में भी उसका साथ न छोड़े। वह शक्ति है आत्मबल और उसका पौरुष। कवि ईश्वर से दुखों से त्राण दिलाने की प्रार्थना नहीं करता बल्कि वह संकटों को झेल लेने के लिए अपने बल-पौरुष की रक्षा करने के लिए प्रार्थना करता है।

उत्तर (iii) कवि ने ईश्वर को करुणामय कहकर संबोधित किया है।

काव्यांश 2

उत्तर (i) प्रस्तुत कविता में 'त्राण' शब्द का अभिप्राय भय निवारण या बचाव करना है। कवि ईश्वर से यह नहीं चाहता कि वे उसकी कहीं रक्षा करें, उसका भय निवारण या बचाव करें। वह करुणामय से केवल इतनी प्रार्थना करता है कि उसका आत्मबल और पौरुष क्षीण न हो, वह दुखों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हो, यदि हानि हो तो भी मैं उसे क्षय न मानूँ।

उत्तर (ii) कवि ईश्वर से निवेदन करता है कि हे करुणामय, आपसे मेरी यह प्रार्थना नहीं है कि आप मुझे भय से मुक्त करें या इससे बचाव करें। मैं आपसे केवल यही चाहता हूँ कि आप हमें रोग मुक्त और स्वस्थ रखें। जिससे मैं इस संसार सागर को पार कर सकूँ। मैं आपसे यह नहीं चाहता कि आप मेरे कष्टों का भार हरें और सांत्वना प्रदान करें। आपसे प्रार्थना है कि आप हमें निर्भय रहने की शक्ति प्रदान करें जिससे मैं कठिनाइयों से साहसपूर्वक सामना कर सकूँ।

उत्तर (iii) कवि – रवींद्रनाथ ठाकुर एवं अनुवादक – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

कविता – आत्मत्राण

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'आत्मत्राण' कविता एक प्रार्थना परक कविता है, जिसमें कवि ईश्वर से आत्मबल और पौरुष की रक्षा के लिए प्रार्थना करता है।

उत्तर 2. कवि करुणामय से हानि को सहन कर लेने की शक्ति की याचना करता है जिससे वह उसे क्षति न समझे।

उत्तर 3. कवि ईश्वर से कुछ माँगता नहीं बल्कि विपदाओं के कष्ट से भयभीत न होने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

उत्तर 4. कवि याचना में विश्वास नहीं करता बल्कि बल और पौरुष में विश्वास करता है इसीलिए वह परमात्मा से सांत्वना नहीं चाहता।

उत्तर 5. इसलिए कि कवि में आत्मगौरव और आत्मबल का अभाव नहीं है। वह विपदाओं से त्राण की इसीलिए प्रार्थना नहीं करता।

उत्तर 6. ईश्वर करुणामय है। उसकी करुणा का ही प्रभाव है कि यह संसार-विलास संभव है।

उत्तर 7. कवि ईश्वर से सहानुभूति के स्थान पर आत्मबल और पौरुष चाहता है जिसके द्‌वारा वह संसार सागर से लड़ने में सक्षम हो सकेगा।

उत्तर 8. 'बल-पौरुष न हिले' से अभिप्राय है—हमारा बल-पौरुष न क्षीण हो।

उत्तर 9. 'अनामय' शब्द का अर्थ है—निरोग और स्वस्थ।

उत्तर 10. कवि लाभ और हानि के संदर्भ में यह प्रार्थना करता है कि चाहे उसे लाभ मिले या हानि, वह किसी भी परिस्थिति में अपना आत्मबल न खोए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हे करुणामय! दुख और संताप से व्यथित मेरे मन को आप सांत्वना दें या न दें परंतु आपसे प्रार्थना है कि मुझे इतना आत्मबल प्रदान करें कि मैं दुख पर विजय प्राप्त कर सकूँ। उससे विचलित न होऊँ।

उत्तर 2. हम प्राय: दुख के विषय में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु, आप ऐसी कृपा करो कि हमें दुख की छाया कभी न पड़े। परंतु कवि ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं करता कि उसे दुख ही न हो। वह यह प्रार्थना करता है कि मुझे वह बल और क्षमता प्रदान करो जिससे मैं दुख पर विजय प्राप्त कर सकूँ।

उत्तर 3. आम लोगों के विचार में सुख के दिन वही हैं जिसमें किसी प्रकार का अभाव, किसी प्रकार का दुख, किसी प्रकार की अशांति न हो। कवि के विचार में—'सुख के दिन' वह है जब मनुष्य पर आए दुख, आपदा, विपत्ति पर साहसपूर्वक विजय प्राप्त कर सकें। मनुष्य के जीवन में सुख-दुख, कठिनाई आती हैं। मनुष्य आत्मबल, पौरुष से उस पर विजय प्राप्त कर ले—यही सबसे उत्तम सुख के दिन हैं।

उत्तर 4. कवि करुणानिधान से प्रार्थना कर रहा है कि हे करुणामय! मैं कभी विपत्ति के क्षणों में उससे भयभीत न होऊँ। मैं सदैव आने वाले दुख पर विजय प्राप्त करने में समर्थ होऊँ, कभी भी हमारा बल-पौरुष न डिगे। यदि लाभ के स्थान पर हानि मिले तो उसे हानि न समझ पाने की क्षमता प्रदान करें। हमें रोगमुक्त और आयोग्य जीवन प्रदान करें। मुझे ज़िम्मेदारियों को वहन करने की क्षमता प्रदान करें।

उत्तर 5. कवि अंत में अनुनय करता है उस करुणामय से कि मेरे दायित्व का भार भले ही कम न करो, परंतु उस दायित्व के भार को सहन करने की शक्ति हमें प्रदान करो जिससे मैं निर्भय होकर उस भार का या दायित्व का वहन कर सकूँ। हे प्रभु, सुख के दिन में तुम्हारी याद क्षण-क्षण आती रहे। तुम्हारी मनोहारी छवि आँखों के सामने प्रत्येक क्षण विद्‌यमान रहे।

निबंधात्मक प्रश्न

उत्तर 1. मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना के अतिरिक्त अनेक प्रयत्न करता है। अपनी उचित-अनुचित इच्छाओं की पूर्ति के लिए अनेक पूजा-अनुष्ठान करता है, तीर्थ-व्रत करता है। अनेक नैतिक-अनैतिक कर्म करने के लिए दूसरों का पीड़न, वंचन भी करने से नहीं चूकता। इसके अतिरिक्त मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए परिश्रम करता है, संघर्ष करता है, कठिनाइयों को सहन करता हुआ इच्छाओं की पूर्ति के लिए अग्रसर होता जाता है।

उत्तर 2. आत्मत्राण का अर्थ है—आत्मा या मन का भय निवारण, उससे मुक्ति। कवि ने इस कविता के माध्यम से मनुष्य को संदेश दिया है कि अपने मन को सभी प्रकार के दुख, आपत्ति, दायित्व के भारवहन के भय से मुक्त रखो और निर्भय होकर अपने आत्मबल से उसका सामना करो। ईश्वर ने आपको सभी कठिनाइयों का निवारण करने के लिए बुद्‌धि, बल, पौरुष प्रदान किए हैं। हमें सदैव उन्हीं का प्रयोग कर अपने दुखों, कठिनाइयों, विपत्तियों पर सदा जय प्राप्त करनी चाहिए। ईश्वर ने ही सुख और दुख, आदि बनाए हैं और फिर उन्हें उपभोग करने या उस पर विजय प्राप्त करने के लिए बल-पौरुष प्रदान किए हैं।

उत्तर 3. रवींद्रनाथ ठाकुर द्‌वारा रचित 'आत्मत्राण' कविता हमें दुख से संघर्ष करने का मार्ग प्रशस्त करती है न कि दुख निवारण के लिए भगवान से प्रार्थना का संदेश देती है। सुख और दुख ईश्वर की ही देन हैं फिर ईश्वर कैसे सुख मनुष्य को प्रदान कर सकते हैं और कैसे दुख का निवारण कर सकते हैं। उन्होंने हमें दोनों का उपभोग और जय प्राप्त करने के लिए आत्मबल और पौरुष प्रदान किया है।

उत्तर 4. आत्मत्राण का अर्थ है—आत्मा का त्राण अर्थात आत्मा या भय का निवारण, उससे मुक्ति। कवि का उद्‌देश्य है कि मनुष्य जीवन में आने वाले दुखों को निर्भय होकर साहसपूर्वक सहन करे। दुख ही न मिले—कवि ईश्वर से ऐसी प्रार्थना नहीं करता

बल्कि वह मिले हुए दुखों को सहने, उसे झेलने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है। वह जीवन में आने वाली किसी विपदा, संकट को न आने देने की प्रार्थना ईश्वर से कभी नहीं करता बल्कि उन आपदाओं-विपत्तियों को सहन करके और झेलने की शक्ति और पौरुष प्रदान करने की याचना करता है। इसलिए पाठ का यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

संचयन : भाग 2

पाठ–1

हरिहर काका

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. महंत की धर्म और लोक-परलोक की बातें सुनकर हरिहर काका दुविधा में फँस गए। उन्हें महंत जी अनेक धार्मिक प्रलोभन देते हुए बोले–हरिहर, यहाँ कोई किसी का नहीं है, न भाई न बंधु। सब लोग तुम्हारी ज़मीन की लालच में ही तुम्हारे आगे-पीछे लगे थे। अब तुम्हें उनकी नीयत का पता चल चुका है। अब सब छोड़कर ईश्वर की भक्ति में मन लगाओ। अपने हिस्से का खेत ठाकुरबारी के नाम लिखकर ईश्वर की सेवा करो। सीधे स्वर्ग को प्राप्त करोगे। महंत की इन्हीं बातों को सुनकर हरिहर काका दुविधा में पड़ गए।

उत्तर 2. हरिहर काका के भाइयों का उनके साथ व्यवहार अमानवीय, पारिवारिक मान-मर्यादा के विपरीत, बेहद स्वार्थपूर्ण और निंदनीय था। उनके भाइयों के स्थान पर यदि मैं होता तो हरिहर काका के साथ वही व्यवहार करता जो एक परिवार के वरिष्ठ सदस्य को करना चाहिए। हम मानते हैं कि लालच और वंश की संपत्ति वश में ही होनी चाहिए। इसके लिए हम काका को उतना ही आदर-सम्मान देते जितना अपने पिता जी को जिससे काका के मन में परिवार से दूर जाने का विचार ही न उत्पन्न होता।

उत्तर 3. हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले ठाकुरबारी से भेजे गए महंत के गुंडे थे। जब महंत को लगा कि हरिहर काका अब अपनी 15 बीघा ज़मीन ठाकुरबारी के पक्ष में नहीं लिखेंगे तो उन्होंने अपने धर्माचार्य के नकाब को उतार फेंका और कुछ हथियारबंद गुंडों की सहायता से हरिहर काका का उनके घर से अपहरण करा लिया। उन्होंने उनके साथ मार-पीट की और जबरन सादे कागज़ पर अँगूठे के निशान लगवा लिए और एक कमरे में बंद कर दिया।

उत्तर 4. कथानक के आधार पर आज समाज में रिश्तों की अहमियत स्वार्थ आधारित हो गई है। कोई न कोई गाँव आज भी ऐसा मिल जाता है, जहाँ स्वार्थ में संपत्ति की लालच में हरिहर काका जैसे रिश्ते की धज्जियाँ उड़ाई जाती हैं। महंत हरिहर काका की आवभगत ज़मीन के लालच में करता रहा। ठीक यही स्थिति हरिहर काका के भाइयों की थी। पहले तो उन्होंने भी स्वार्थ में काका की आवभगत की बाद में ठाकुरबारी के महंत जैसा आचरण किया। आज धन-दौलत के आगे खून के रिश्ते भी फीके पड़ने लग गए हैं।

उत्तर 5. हरिहर काका के प्रकरण में गाँव में दो गुट हो गए थे। एक गुट का विचार था कि हरिहर काका को अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर ईश्वर सेवा में लग जाना चाहिए और अपना परलोक सुधारना चाहिए। ये लोग ऐसे थे जिनके लिए ठाकुरबारी पेट-पूजा का साधन थी। दूसरे गुट का विचार था कि हरिहर काका को अपनी ज़मीन परिवार को ही देनी चाहिए। उनकी ज़मीन पर उनके भाइयों का हक़ है इसलिए कि वे उनके भाई हैं। लेकिन कोई भी हरिहर काका के बारे में नहीं सोच रहा था।

उत्तर 6. हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो अब तक यह प्रकरण देश स्तर पर फैल गया होता क्योंकि मीडिया को तिल का ताड़ बनाने की महारत हासिल है। आज हरिहर काका, उनका परिवार और ठाकुरीबारी के महंत लाल सुर्खियों में होते। अनेक समाजसेवी संस्थाएँ हरिहर काका को सहानुभूति और संरक्षण देने पहुँच गई होती। उनके मन में भाई-भतीजों के प्रति जो भाव अवशेष भी रहते, मीडिया उनको जेल भेजवाकर उन्हें भी समाप्त करवा देती।

उत्तर 7. ठाकुरबारी के प्रति गाँव के लोगों के मन में अपार श्रद्धा है। गाँव के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के लोग थे और सीधे-सादे छल-प्रपंच से दूर रहने वाले लोग थे। उन्हें ठाकुरबारी से लगाव ठाकुर बाबा की वजह से थी न कि पुजारी महंत से। उन्हें विश्वास था कि ठाकुर जी ही उनके उन्नति-उत्थान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार वे अंधविश्वासी थे जैसा कि आमतौर पर देखने को मिलता है।

उत्तर 8. हरिहर काका का परिवार से अलग होकर एकाकी जीवन व्यतीत करने का कारण था–उनके परिवार वालों की हरिहर काका के प्रति घोर अनादर, उपेक्षा और दुर्व्यवहार। हरिहर काका की 15 बीघा ज़मीन की लालच में उनके भाई-भतीजे उनके साथ जो व्यवहार करते थे वह उनके बीच के सभी रिश्तों की धज्जी उड़ाने के लिए पर्याप्त थे। यही कारण है कि हरिहर काका को अपने परिवार से अलग होकर रहना पड़ रहा था।

उत्तर 9. ठाकुरबारी के साथ गाँववालों का संबंध मन और तन दोनों स्तर पर बहुत ही घनिष्ठ था। कृषि-कार्य से अपना बचा हुआ समय वे ठाकुरबारी में ही बिताते थे। ठाकुरबारी में साधु-संतों का प्रवचन सुन और ठाकुर जी का दर्शन कर वे अपना यह जीवन सार्थक मानने लगते हैं। वे ठाकुरबारी को एक पवित्र स्थल मानते हैं जहाँ सारे पापों से मुक्त हो सकते हैं।

उत्तर 10. हरिहर काका और उसका परिवार आरा शहर से 40 किमी. की दूरी पर हसन बाज़ार स्टैंड के निकट स्थित हैं। हरिहर काका चार भाई हैं। सबका विवाह हो गया है। हरिहर काका के अतिरिक्त सबके बाल-बच्चे हैं। इनके बड़े और छोटे भाई के बच्चे बहुत सयाने हो गए हैं। एक भाई का लड़का शहर में कहीं नौकरी करता है। हरिहर काका ने दो शादियाँ की परंतु कोई औलाद उनके नहीं हुए। पत्नियाँ भी स्वर्ग सिधार गईं। फिर उन्होंने शादी नहीं की। भाइयों के साथ ही रहते हैं।

उत्तर 11. परिवार वालों से असंतुष्ट होने की बात महंत को इस प्रकार मालूम हुई कि एक दिन हरिहर काका के घर कोई मेहमान आए थे जिनके स्वागत में घर में तरह-तरह के पकवान बने। परिवार के लोगों ने साथ मिलकर खाना खाया परंतु हरिहर काका को किसी ने नहीं पूछा। हरिहर काका के माँगने पर उन्हें वही रूखा-सूखा खाना मिला। उन्होंने खाना देखकर थाल फेंक दिया और परिवार पर बिगड़ रहे थे कि तभी महंत जी उनकी दालान पर पहुँचे थे, ठाकुरबारी से संबंधित किसी काम के लिए। हरिहर काका की परिवार में कितनी पूछ है, वे समझ गए। इसका लाभ उठाते हुए वे हरिहर काका को ठाकुरबारी ले गए, उन्हें अच्छा खिलाया, पिलाया और ठाकुरबारी को ज़मीन लिखने की सलाह दी।

उत्तर 12. महंत जी हरिहर काका की ज़मीन लिखवाने के लिए सभी प्रकार के कल-बल-छल से हार गए तो अंततः उन्होंने हरिहर काका के अपहरण की योजना बनाई और जबरदस्ती उनसे ज़मीन ठाकुरबारी के नाम करवाने की सोची। एक रात वे कुछ हथियारबंद गुंडों को बुलाए और हरिहर काका के घर से उनका अपहरण करवा लिया। उनके भाई-भतीजे उनकी रक्षा न कर सके।

उत्तर 13. हरिहर काका की ज़मीन के लिए शुरू हुआ यह विवाद पूरे गाँव में भय का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। हरिहर काका कोई अमर व्यक्ति तो हैं नहीं, मरेंगे नहीं। मरना तो उन्हें एक न एक दिन है ही, उसके बाद यह गाँव एक भयानक स्थिति का शिकार हो जाएगा। उस वक़्त क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। हरिहर काका के पुलिस संरक्षण में रहते हुए भी उनके भतीजे और महंत पश्चाताप करते हैं कि कागज़ पर अँगूठा लगवा लेने के बाद उनका गला क्यों न दबा दिया।

उत्तर 14. हरिहर काका ने समय से पूर्व अपनी ज़मीन लिख देने का परिणाम अच्छी तरह देखा था। कई लोगों ने बहकावे-फुसलावे में तथा अपनत्व का शिकार होकर अपनी ज़मीन भाई-भतीजों के नाम कर दी। बाद में वही परिवार ने उनके साथ कैसा व्यवहार किया, इससे वे पूर्ण परिचित थे। महंत की नीयत से वह भली-भाँति परिचित हो गए थे। वे जानते थे कि सबका मोह ज़मीन तक ही है।

उत्तर 15. हरिहर काका बचपन में लेखक से बहुत प्यार करते थे, यह बात लेखक ने अपनी माँ से जानी। वे लेखक को बचपन में अपने कंधे पर बैठाकर घुमाया करते थे वे उनसे उतना ही प्यार करते थे जितना एक पिता अपने बच्चे से, बल्कि उससे भी अधिक प्यार हरिहर काका लेखक से करते थे। बड़े होने पर लेखक की सबसे पहली दोस्ती हरिहर काका से ही हुई।

उत्तर 16. लेखक का गाँव आरा शहर से 40 किमी. दूर हसन बाज़ार बस स्टैंड के पास स्थित है। गाँव की कुल आबादी ढाई-तीन हज़ार के आस-पास होगी। गाँव में मुख्यतः प्रमुख तीन स्थान हैं। गाँव के पश्चिम किनारे पर एक बड़ा तालाब है। गाँव के बीचों-बीच एक विशाल बरगद का पेड़ है तथा गाँव के पूरब में एक ठाकुरबारी है जहाँ ठाकुर जी का एक विशाल मंदिर है। गाँव में इस ठाकुरबारी की स्थापना कब हुई, इसकी ठीक-ठीक जानकारी किसी को नहीं है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. हम इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि गहन धार्मिक आस्था का लाभ उठाने में मंदिरों के महंत और मठाधीश ने कभी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है और न ही आज छोड़ रहे हैं और न आगे छोड़ेंगे। वे ईश्वर की शरण में तो आते हैं परंतु धन, ऐश्वर्य और वासनाओं के दास बन जाते हैं। उन्हें लोगों की धार्मिक आस्थाओं से सरोकार पूर्णतया टूट जाता है और उनका शोषण आर्थिक, नैतिक रूप से करने से नहीं हिचकते। जबकि उनका काम लोगों के बीच भक्ति-भावना पैदा करना, लोगों में मानवता, दया, करुणा का भाव जागृत करना है।

उत्तर 2. हरिहर काका के गाँव के लोग भी ठाकुरबारी और ठाकुर जी के प्रति अगाध भक्ति भावना रखते हैं। लोगों को यह विश्वास है कि ठाकुर जी से जो भी मनौती माँगी जाती है, वे इसे पूरा कर देते हैं, चाहे वे मुकद्दमें में जीत हो, लड़की की अच्छी शादी हो और अच्छे घर में तय हो, लड़के को अच्छी नौकरी मिल जाए आदि, मनौती के पूर्ण होने पर लोग बहुत खुले मन से ठाकुर जी को ज़ेवर, ज़मीन, रुपए-पैसे का उपहार प्रदान करते हैं।

उत्तर 3. महंत जी ने हरिहर काका की ज़मीन हड़पने के लिए सर्वप्रथम धर्म, मोह-माया आदि मिथ्या हैं, का प्रवचन देकर उन्हें अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम लिखकर यश का भागी होना चाहिए, ऐसा कहकर बहुत फुसलाने का प्रयास किया। उन्हें स्वर्ग

प्राप्ति का भी प्रलोभन दिया। जबकि यह सब प्रलोभन भ्रमोत्पादक थे और सत्य से बहुत दूर थे, जो समाज में आडंबर और धार्मिक अंधविश्वास फैलाने में सहायक होते हैं। इस प्रकार महंत ने धर्म का आश्रय लेकर हरिहर काका को गुमराह करने का जो प्रयत्न किया, वह सर्वथा अनुचित था।

उत्तर 4. हरिहर काका और कथावाचक (लेखक) के बीच बहुत आत्मीय संबंध हैं। इसका प्रमुख कारण है—लेखक हरिहर काका का निकट पड़ोसी है। एक कारण और भी है, जो लेखक की माँ ने लेखक को बताया है, वह है—बचपन में हरिहर काका का लेखक को बहुत दुलार करना। वे उसे बचपन में अपने कंधे पर बैठाकर घुमाया करते थे। लेखक जब बड़े हुए तो उनकी पहली आत्मीयता हरिहर काका से ही हुई।

उत्तर 5. समझ के लिए पढ़ाई-लिखाई की ज़रूरत उतनी नहीं होती जितनी जीवन में किए गए अनुभवों की। हरिहर काका भले ही पढ़े-लिखे न हों, परंतु उनमें अनुभवों का भंडार भरा पड़ा है। उन्होंने ज़िंदगी को बहुत निकट से देखा है। उन्हें यदि धार्मिक संस्थानों, वहाँ की सत्यता, वहाँ की धर्मांधता का कटु अनुभव है तो पारिवारिक और पारस्परिक रिश्तों की वास्तविकता का भी अच्छा अनुभव हो गया है। उन्होंने समाज सुधार के लिए प्रवचन देते महंतों के वास्तविक चरित्र के अनुभव लिए हैं तो खून के रिश्तों की गहराई भी अनुभूत की है।

उत्तर 6. ठाकुरबारी के प्रति गाँववालों के मन में जो अपार श्रद्धा के भाव हैं, वह गाँववालों की धर्म के प्रति आस्था को व्यक्त करते हैं। गाँव वालों को ठाकुर जी की उदार शयता पर अटूट विश्वास है। उन्हें यह विश्वास है कि हम ठाकुर जी से जो कामना करेंगे, वे उसे अवश्य पूरा करेंगे। यही विश्वास लेकर लोग ठाकुर जी से अनेक मनौतियाँ माँगते हैं और पूरी होने पर ठाकुर जी की धन-मन से सेवा करते हैं।

उत्तर 7. जब तक काका रिश्तों की अहमियत और उसकी सच्चाई से अनजान थे, तब तक वे रिश्तों के बिगड़ने से डरते थे। अब उन्हें रिश्तों की वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान हो चुका था। अब उन्हें मृत्यु से भय न रह गया था। वे चाहते थे कि उनके भतीजे उन्हें एक बार में ही मार दें, सारी मुसीबतों से छुटकारा मिल जाएगा। उन्हें रोज-रोज मरने से परहेज था। वे रमेसर की विधवा के समान जीवन जीने के लिए तैयार नहीं थे। घुट-घुट कर मरने से अच्छा एक ही बार मरना अच्छा होता है। इसीलिए लेखक ने यह कहा।

उत्तर 8. यदि हमारे आस-पास कोई हरिहर काका जैसी हालत में होगा तो हम उसकी हरसंभव नैतिक, विधिक और मानवतापूर्ण सहायता कर समाज में एक उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। उनके भाई-भतीजों को रिश्ते की अहमियत समझाते हुए एक आदर्श स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे, जिससे कोई दूसरा हरिहर इन परिस्थितियों का शिकार न बने। महंत के विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई करने के लिए कानून की गुहार लगाएँगे।

उत्तर 9. हरिहर काका को महंत और उनके भाई एक ही श्रेणी के लगने लगे जो सर्वथा उचित था। दोनों ने हरिहर काका की 15 बीघे ज़मीन के लिए एक समान व्यवहार किया। महंत ने एक धर्म गुरु होकर संपत्ति के लिए अराजक तत्वों का आश्रय लिया, उनका अपहरण कराया, उन्हें मारा-पीटा और सादे कागज़ों पर अँगूठे का निशान लगवा लिया। भाई-भतीजों ने रिश्तों की मर्यादा को तार-तार करते हुए उसी संपत्ति के लिए मारा-पीटा और सादे कागज़ों पर हस्ताक्षर करवाया। इसीलिए हरिहर काका के नज़र में महंत और भाइयों में कोई भेद नहीं था।

उत्तर 10. नेता जी हरिहर काका के पास प्रस्ताव लेकर आए थे कि वे अपनी ज़मीन स्कूल के नाम में दान दे दें। वहाँ हरिहर उच्च विद्यालय खोला जाएगा और उनका नाम सदियों तक यादगार बन जाएगा। उनकी ज़मीन का सही उपयोग होगा और गाँव के विकास के लिए एक स्कूल मिल जाएगा।

उत्तर 11. हरिहर काका को अपने भाइयों के परिवार के प्रति मोहभंग के कई कारण थे। उनमें पहली शुरूआत तो उस दिन हुई जब उनके परिवार के लोगों ने उन्हें खाना नहीं दिया और जब दिया भी, तो रूखा-सूखा। मोहभंग का अंतिम कारण था, हरिहर काका को मारना-पीटना। उनके भाई-भतीजों ने हरिहर काका के साथ जैसा दुर्व्यवहार किया, वैसा दुर्व्यवहार तो महंत और उसके आदमियों ने भी नहीं किया था। उनका यह व्यवहार देख हरिहर काका का परिवार के प्रति मोहभंग हो गया था। वे समझ गए थे, इन्हें हमसे मतलब ज़मीन तक ही है।

उत्तर 12. हरिहर काका के भाइयों और ठाकुरबारी के साधु-संतों के व्यवहार में कोई अंतर नहीं था। यह बात इससे स्पष्ट हो जाती है कि काका के ज़मीन के लिए महंत और उनके आदमियों ने काका का रात को अपहरण करवा लिया, उनके साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती की और ज़बरन सादे और लिखे कागज़ों पर अंगूठे के निशान लगवा लिए। उनके भाई-भतीजों ने उसी ज़मीन के लिए काका के साथ उससे भी बुरा व्यवहार किया। अतः उनमें कोई अंतर नहीं है।

उत्तर 13. हरिहर काका की ज़मीन के लिए दोनों ने ज़बरन सादे और लिखे कागज़ों पर काका के अंगूठे के निशान लगवाकर रख लिए हैं। अब दोनों पक्षों को एक-दूसरे के प्रति आशंका है कि कोई भी अवसर मिलते ही उन्हें ले उड़े और उनकी ज़मीन लिखवा ले। इसीलिए परोक्ष रूप से दोनों पक्ष उनकी सुरक्षा के प्रति जागरूक है। पुलिस तो मात्र एक दिखावा है।

उत्तर 14. हरिहर काका की मृत्यु के बाद उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा करने के लिए उनके भाइयों ने बड़ी भयंकर योजना बनाई है। ऐसी खबर गाँव में प्रचलित है कि उनके भाई-भतीजे इलाके के मशहूर डाकू बूटन से बात पक्की कर ली है। वह पाँच बीघे ज़मीन लेगा और ज़मीन पर कब्ज़ा करा देगा, ऐसा वह पहले भी कर चुका है। पूरे इलाके में उसके नाम का आतंक है।

उत्तर 15. कभी-कभी गाँव में घटनाओं की जुबान इतनी पैनी और असरदार होती है कि वे स्वयं बहुत कुछ बयान कर देती हैं। बिना किसी से कुछ बताए गाँव के लोग असली तथ्य से स्वयं परिचित हो जाते हैं। हरिहर काका के साथ भी ऐसा हुआ। हरिहर काका के साथ उस दिन का पराया व्यवहार और महंत जी के साथ हरिहर काका का रातभर ठहरने की बात, यद्यपि कोई किसी से नहीं बताया परंतु पूरे गाँव में यह बात चर्चित थी। पूरा गाँव इस सच्चाई से परिचित हो गया था और गाँव में चर्चा का विषय बन गया था।

पाठ–2

सपनों के-से दिन

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. गरमी की छुट्टियों के पहले और आखिरी दिनों में अंतर लेखक ने इस प्रकार बताए हैं–उस समय वर्ष के प्रारंभ में एक-डेढ़ महीने पढ़ाई होती, फिर डेढ़-दो महीने की छुटियाँ। छुट्टी के पहले दो-तीन सप्ताह तो खूब खेलकूद में बीत जाते। उन्हीं दिनों ननिहाल चले जाते। खेलते-कूदते छुट्टियाँ बीतने लगती तो दिन गिनने लगते। घर पर करने के लिए स्कूल का दिया हुआ काम और मास्टरों का डर सताने लगता। ऐसे में दिन छोटा लगने लगता। स्कूल का भय बढ़ने लगता।

उत्तर 2. स्कूल के हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी को साहब इसलिए मुअत्तल कर दिया कि वे कक्षा चौथी के बच्चों को कठोर दंड दे रहे थे जो उनके लिए सर्वथा अनुचित था। उन्होंने विद्यार्थियों को 'मुर्गा' बनाया था जिसमें झुककर दोनों टाँगों के पीछे से बाँहें निकालकर कान पकड़ना होता है और पीठ ऊँची करनी पड़ती है। यह कठोर अभ्यास है जिसमें टाँगों में जलन होने लगती है। यह देख उन्होंने पीटी साहब को मुअत्तल कर दिया था।

उत्तर 3. लेखक के अनुसार उन्हें खुशी से स्कूल जाना कभी भी अच्छा नहीं लगा। इसका कारण था–स्कूल के अध्यापकों की मार का डर और आगे की कक्षा की कठिन पढ़ाई। किंतु लेखक को दो कारणों से स्कूल अच्छा भी लगने लगा था। जब पीटी प्रीतमचंद स्काउटों की परेड करवाते समय मुँह से लेफ्ट-राइट की आवाज़ करते थे। उनके निर्देशों पर जब सभी बूटों की एड़ियों पर ठक-ठक करते अकड़कर चलते तो ऐसा लगता हम विद्यार्थी बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं जैसे–फ़ौजी, जवान।

उत्तर 4. कोई भी भाषा व्यवहार में बाधा नहीं हो सकती, यह बात इससे सिद्ध होती है कि लेखक के अधिकतर साथी राजस्थान, हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार करने वालों के परिवार से या दुकानदारी करने वाले परिवारों में से थे जिनकी बोली कम समझ में आती थी। उनके कुछ शब्द सुनकर हमें हँसी आने लगती, परंतु खेलते समय सभी एक-दूसरे की बात समझ लेते।

उत्तर 5. छुट्टियों के शुरू के दो-तीन सप्ताह तो ऐसे बीत जाते कि पता ही नहीं चलता। इसके बाद अध्यापकों द्वारा दिए गए गृहकार्य की याद आती तब मन चिंतित हो उठता। ऐसा लगता कि एक दिन में तो 15 सवाल कर ही लेंगे। लेकिन खेलने में समय बीत जाते। जैसे-जैसे दिन छोटे होने लगते, स्कूल का भय बढ़ता जाता। लेकिन लेखक बताते हैं कि कुछ ऐसे भी सहपाठी थे जो छुट्टियों का काम करने की बजाय मास्टरों की पिटाई को अधिक सस्ता सौदा समझते थे।

उत्तर 6. यह सच है कि लेखक ने सातवीं तक की शिक्षा हेडमास्टर शर्मा जी के कारण प्राप्त की। लेखक आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार के थे और उससे भी बड़ी बात थी, उनके परिवार में शिक्षा के प्रति उपेक्षा। यद्यपि साल भर में किताब-कॉपी के एक-दो रुपए लेखक के घरवालों को खर्च करने पड़ते तो उनकी पढ़ाई तीसरी-चौथी कक्षा में छूट जाती। परंतु शर्मा जी ही थे जो उसे प्रतिवर्ष अगली श्रेणी की पुरानी किताबें लाकर देते।

उत्तर 7. पीटी साहब स्वभाव से अत्यंत ही कठोर और अनुशासन प्रिय थे। उनके मुँह से सदैव कठोर व कड़वी बातें ही निकलती। परंतु जब वे स्काउट और परेड का अभ्यास कराते तो उनका रुख नरम हो जाता था। उस समय वे विद्यार्थियों के अच्छा काम करने पर शाबाशी देते थे। यह शाबाशी उस समय विद्यार्थियों को फ़ौज के तमगे जैसा लगने लगता और वे खुश हो जाते।

उत्तर 8. स्काउट परेड करवाते समय पीटी प्रीतमचंद जब मुँह में ली ह्विसल से या मुँह से लेफ्ट-राइट की आवाज़ करते मार्च कराया करते और राइट टर्न या लेफ्ट टर्न या अबाउट टर्न कहने पर हम लोग छोटे-छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर बूटों पर ठक-ठक करके अकड़कर चलते तो ऐसा लगता जैसे हम विद्यार्थी न होकर महत्वपूर्ण व्यक्ति या फ़ौजी जवान हों।

उत्तर 9. लेखक बताते हैं कि नयी कक्षा में जाने तथा नयी कॉपियों और पुरानी पुस्तकों से आती विशेष गंध से उनका मन उदास हो उठता था। ऐसा होने का ठीक-ठीक कारण तो वे नहीं जान सके किंतु उन्हें मनोविज्ञान की जितनी जानकारी है, इस अरुचि का कारण नयी कक्षा की कठिन पढ़ाई और नये अध्यापकों से मार खाने का भय ही मन के अंदर बैठ गया था। इसीलिए मन उदास हो उठता था।

उत्तर 10. पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–मास्टर प्रीतमचंद (पीटी सर) स्वभाव से बेहद कठोर और अनुशासन प्रिय थे। अनुशासनहीनता और अनियमितता वे तनिक भी सहन नहीं करते थे और उसके लिए कठोर दंड देते थे– चमड़ी उधेड़ने तक। परेड के दौरान लड़कों द्वारा अच्छा और अनुशासन प्रिय प्रदर्शन करने पर उन्हें शाबाशी देते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. लेखक ने अपने विद्यालय के हरा-भरा होने का वर्णन किया है जिसमें अनेक प्रकार के सुंदर और सुगंधित फूल खिले रहते थे। उनमें गेंदा, गुलाब और मोतियों की दूध-सी सफ़ेद कलियाँ भी हुआ करती थीं। ये कलियाँ बहुत सुगंध बिखेरने वाली थीं। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम जहाँ भी रहें, हमें प्रकृति को हरा-भरा बनाए रखना चाहिए। इससे वातावरण सुगंधित होता है, सौंदर्य की वृद्धि भी होती है। अत: इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने परिवेश को प्रकृतिरम्य बनाना चाहिए। वृक्षों, पुष्पों की कटाई-छटाई नहीं करनी चाहिए और विद्यालय को हरा-भरा बनाने में अपना योगदान देना चाहिए।

उत्तर 2. लेखक के समय के और आज के सामाजिक परिवेश में बहुत विकट परिवर्तन हुआ है। तब भारत अंग्रेज़ों का गुलाम था। आज भारत स्वतंत्र है। आज जिस प्रकार संसाधन हैं, उस समय वैसे संसाधन उपलब्ध नहीं थे। उस समय ग्रीष्मावकाश में बच्चों को खेलने के लिए आज की भाँति न तो खेलने के नये-नये खेल थे और न ही आम आदमी की ऐसी आर्थिक स्थिति ही थी कि उस समय के प्रचलित खेलों के साधन एकत्र कर सकें। उन दिनों विशुद्ध मनोरंजन था, आडंबरहीन जिसमें दिखावेपन का कोई स्थान नहीं था। आपसी भेदभाव भी नहीं था–छोटे-बड़े का।

उत्तर 3. यद्यपि शारीरिक शिक्षा में अनुशासन और कठोर परिश्रम अत्यावश्यक है। इस दृष्टिकोण से पीटी प्रीतमचंद का निलंबन औचित्यपूर्ण नहीं कहा जा सकता। परंतु उनका क्रूर और निर्मम व्यवहार जिसमें बच्चों की गलती के लिए 'खाल उधेड़ने' तक पीटना उनकी बर्बर और अमानवीय प्रकृति का परिचय देता है। इस दृष्टिकोण से प्रीतमचंद का निलंबन उचित था, क्योंकि शारीरिक दंड देने से बच्चों को ज्ञान नहीं दिया जा सकता है। इससे उनमें भय समा जाता है और पढ़ाई में उनकी रुचि समाप्त हो जाती है।

उत्तर 4. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियाँ आज के संदर्भ में बिलकुल अनुचित हैं। अनुशासन का अर्थ है–मर्यादित आचरण। मर्यादित आचरण शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों को पालन करना अनिवार्य है। आज के समय में विद्यालयी शिक्षा में अनुशासन के स्तर को बरकरार रखने के लिए अनेक प्रयत्न किए जाने लगे हैं। आज स्कूलों द्वारा प्रत्येक माह में एक निर्धारित तिथि पर अभिभावकों को बुलाया जाता है और कक्षा अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षणिक और व्यावहारिक स्तर के विषय में अभिभावकों को जानकारी दी जाती है। इस प्रकार अनुशासन की ज़िम्मेदारी शिक्षक और अभिभावक दोनों में बाँट दी जाती है।

उत्तर 5. पाठ के आधार पर लेखक के स्कूल के हेडमास्टर शर्मा जी की धारणा स्कूल के विद्यार्थियों के प्रति शिष्यवत और मानवतापूर्ण थी। वे विद्यार्थियों को मारने-पीटने में विश्वास नहीं रखते थे। वे बच्चों के लिए मर्यादित अनुशासन के अनुयायी थे। उनका विश्वास था कि बच्चों को दुलार के साथ अनुशासित किया जाना चाहिए, क्रूर व्यवहार के द्वारा नहीं। यही कारण था, स्कूल में विद्यार्थी उनका आदर करते थे और उनकी अवज्ञा करने का साहस नहीं कर पाते थे।

उत्तर 6. 'सपनों के–से दिन' पाठ के आधार पर अभिभावकों द्वारा उनके बच्चों के खेलने में अरुचि होने का कारण मुख्य रूप से उनका अभावग्रस्त जीवन और बच्चों का चोटग्रस्त हो जाने का भय ही प्रतीत होता है। लेखक ने पाठ में जिन बच्चों और अभिभावकों का वर्णन किया है उनकी हालत इतनी खराब थी कि बच्चे नंगे पाँव, फटी मैली-सी कच्छी और टूटे बटनों वाले मैले-कुचैले कई जगहों से फटे कुर्ते पहने, जब खेलने निकलते तो खेलते समय वह कपड़े और तार-तार हो उठते। इससे वे शरीर पर अनेक जगहों पर लगी चोटों से रिसते खून देखकर और क्रुद्ध हो उठते और लड़कों को पीटते जिससे फिर न खेलने जाएँ, परंतु दूसरे दिन वे फिर खेलने निकल जाते। खेलकूद एक ओर शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक है तो दूसरी तरफ सहयोग की भावना, मेल-जोल रखने की भावना, हार-जीत को समान समझना, पारस्परिक स्नेह आदि जीवन मूल्य के लिए भी। इसलिए छात्रों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी विशेष महत्व होता है।

उत्तर 7. लेखक डेढ़-दो महीने की छुट्टियों के शुरू के 2-3 सप्ताह तो खूब खेल-कूद में बिता देता। अपने ननिहाल चला जाता। जब छुट्टियाँ बीतने लगतीं, तो प्रतिदिन डर भी बढ़ता चला जाता। इसका कारण था मास्टरों द्वारा छुट्टियों में दिया गया काम। अब लेखक काम का हिसाब लगाने लगता, जैसे–गणित के अध्यापन 200 सवाल से कम कभी न बताते। लेखक मन में

हिसाब लगाने लगता यदि वह दस सवाल रोज लगाए तो बीस दिन में पूरे हो जाएँगे। जब लेखक ऐसा सोचता तो छुट्टियों का एक महीना बाकी रहता। एक-एक दिन गिनते इस तरह दस दिन और बीत जाते। स्कूल में पिटाई का डर सताने लगता। परंतु लेखक के कुछ सहपाठी ऐसे भी थे जो स्कूल का काम पूरा करने की अपेक्षा अध्यापकों की मार खाना सस्ता सौदा समझते थे। लेखक भी उन्हीं बहादुरों की भाँति सोचने लगता।

उत्तर 8. पाठ के आधार पर लेखक के समय में बचपन में न पढ़ पाने के लिए अभिभावक अधिक ज़िम्मेदार होते थे। यद्यपि बच्चों की रुचि पढ़ाई की ओर बहुत कम होती थी, खेलने की ओर अधिक। लेकिन माँ-बाप भी उन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजना आवश्यक नहीं मानते थे। परचूनिए-आढ़तिए भी अपने लड़कों को स्कूल नहीं भेजना पसंद करते थे। पूछने पर कहते—हमने इससे कौन-सी तहसीलदारी करवानी है। इस प्रकार बच्चों की अशिक्षा में उस समय अभिभावक बहुत ज़िम्मेदार थे।

उत्तर 9. विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–3

टोपी शुक्ला

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. प्रेम मानवीय रिश्तों की बुनियाद है—यह बात टोपी शुक्ला और इफ़्फ़न के बीच स्थापित मित्रता पूर्णतया सत्यापित करती है। प्रेम, धर्म, संप्रदाय, जाति आदि से उठकर आत्मीयता का रिश्ता स्थापित करने में योगदान करता है, जो सभी प्रकार के स्वार्थ से परे है। 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ़्फ़न की मित्रता और इफ़्फ़न की दादी से स्थापित आत्मीयता जाति-समुदाय के बंधन से मुक्त हो आत्मीयता, प्रेम पर आधारित थी।

उत्तर 2. टोपी और इफ़्फ़न की दादी में आत्मीय संबंध था जो पूर्णतया प्रेम और श्रद्धा पर आधारित था। टोपी और इफ़्फ़न की दादी में उम्र का एक लंबा अंतर था फिर भी उनकी बनावट और औपचारिकता से पूर्णतया शून्य बोली टोपी के बालमन को छू गयी थी। इफ़्फ़न की दादी उसे अपने पक्ष की लगने लगी थी। वह जब भी इफ़्फ़न के घर जाता, इफ़्फ़न की दादी के पास ही बैठने का प्रयत्न करता। इफ़्फ़न की दादी के मरने के बाद इसीलिए टोपी ने कहा था— 'इफ़्फ़न, काश! तुम्हारी दादी की जगह मेरी दादी मर गई होती तो अच्छा होता।'

उत्तर 3. इफ़्फ़न के घर पर टोपी को इफ़्फ़न की दादी से ही एक आत्मीय रिश्ता था। जिसके कारण वह इफ़्फ़न के घर आता-जाता था। दादी भी टोपी से बहुत स्नेह करती थीं। यद्यपि दादी के लाख कहने पर भी टोपी ने कभी दादी के हाथ की कोई चीज़ नहीं खाई थी। परंतु प्रेम इन बातों का पाबंद नहीं होता। इफ़्फ़न की दादी और टोपी में एक ऐसा ही संबंध हो गया था। इसीलिए इफ़्फ़न का घर टोपी को सूना लगने लगा, दादी की अनुपस्थिति में।

उत्तर 4. यद्यपि इफ़्फ़न को अपने अब्बू, अपनी अम्मी, अपनी बाजी और छोटी बहन नुज़हत से बहुत प्यार था परंतु उसे जो प्यार अपनी दादी से था, उतना और किसी से नहीं था। अब्बू, अम्मी तो कभी-कभार डाँट भी दिया करते थे, बाजी भी कभी-कभी डाँट देती परंतु दादी ने उसे केवल प्यार किया था। उन्होंने कभी भी इफ़्फ़न का दिल नहीं दुखाया था। इसलिए इफ़्फ़न को पूरे घर में दादी से विशेष स्नेह था।

उत्तर 5. टोपी को इफ़्फ़न की दादी बहुत प्रिय थी, यह बात टोपी की निम्नलिखित बातों से पता चलता है—टोपी दुखी स्वर में इफ़्फ़न से कहता है—"अय्यसा ना हो सकता का कि हम लोग दादी बदल लें। तोहरी दादी हमारे घर आ जाएँ अउर हमरी तोहरे घर चली जाएँ।" अर्थात क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम्हारी दादी हमारे घर चली आएँ और हमारी दादी तुम्हारे घर। टोपी का इफ़्फ़न की दादी के प्रति प्यार इससे भी झलकता है जब वह इफ़्फ़न से कहता है—"तोहरी दादी की जगह हमरी दादी मर गई होती त ठीक भया होता।"

उत्तर 6. प्रेम, जाति और उम्र का बंधन नहीं मानता, यह कथन प्रस्तुत पाठ 'टोपी शुक्ला' से सर्वथा सत्य सिद्ध होता है। प्रस्तुत पाठ में टोपी शुक्ला अल्पवय का है और इफ़्फ़न की उम्र का है जबकि दादी की उम्र 70 वर्ष से अधिक है। टोपी हिंदू ब्राह्मण परिवार का है, इफ़्फ़न की दादी मुसलमान परिवार की। फिर भी प्यार और आत्मीयता सभी अवरोधों को तोड़ती हुई एकाकर हो उठती है। टोपी में दादी के लिए अटूट स्नेह झलकता है। दादी का स्नेह भी उसी भांति सारे बंधनों को काट एकात्म हो उठते हैं।

उत्तर 7. इफ़्फ़न 'टोपी शुक्ला' कहानी का महत्वपूर्ण पात्र है। जिसके बिना कहानी आगे नहीं बढ़ सकती। इफ़्फ़न का असली नाम है—सय्यद जरगाम मुरतुजा। इफ़्फ़न इस कहानी का एक ऐसा पात्र है जो टोपी शुक्ला के साथ एक ही जगह पढ़ते हैं और उसी के माध्यम से टोपी शुक्ला का प्रवेश इफ़्फ़न के घर में होता है और उसकी दादी से टोपी की अव्यक्त अटूट आत्मीयता जुड़ती है और दोनों एक हो जाती हैं।

उत्तर 8. इफ़्फ़न की दादी एक ज़मींदार की बेटी थीं, किसी मौलवी की बेटी नहीं थीं। उन्हें इस देश की मिट्टी से प्यार था, इस मिट्टी से उपजने वाली प्रत्येक वस्तु से प्यार था। जब मौत उनके सिर पर थी तो बेटे ने पूछा कि लाश करबला जाएगी या नज़फ़, तो वे बिगड़ गईं। वे बोलीं, यदि तुमसे मेरी लाश न सम्हाली जाय तो हमारी लाश को हमारे घर (पीहर) भेज देना। यद्यपि उन्हें उस समय यह खयाल नहीं था कि उनके पीहर के लोग भारत छोड़ कराची चले गए थे।

उत्तर 9. 'अम्मी' शब्द उर्दू या फ़ारसी से आगत शब्द है जिसका प्रयोग मुस्लिम वर्ग के लोग 'माता' के लिए करते हैं। टोपी का परिवार हिंदू–ब्राह्मण। हिंदू परिवार मुसलमान समुदाय को विधर्मी मानते हैं। टोपी के मुँह से 'अम्मी' शब्द के निकलने के बाद बहुत तीखी प्रतिक्रिया हुई। अम्मी शब्द निकलते ही टोपी के सामने प्रश्नों की बौछार होने लगी क्योंकि इस शब्द ने परंपराओं की दीवार को हिला दिया था। इस शब्द के बाद टोपी की परिवार में बड़ी दुर्दशा हुई।

उत्तर 10. इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर इसलिए कस्टोडियन में चला गया था कि भारत–पाकिस्तान बँटवारे के बाद उनका परिवार भारत छोड़ कराची में जाकर बस गया और वह पैतृक कच्ची हवेली कस्टोडियन की हो चुकी थी। यह बात मरते समय शायद इफ़्फ़न की दादी को याद नहीं रही होगी। अकसर मृत्यु के समय लोगों को प्यार, सद्व्यवहार की ही स्मृति आती है, ऐसी छोटी–छोटी बातों की नहीं।

उत्तर 11. दस अक्तूबर, सन पैंतालीस के दिन ही टोपी ने कसम खाई थी कि अब वह कभी भी किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा, जिसके पिता ऐसी नौकरी करते हों जिसमें स्थानांतरण होता हो अर्थात बदली होती हो। यह तारीख टोपी के लिए महत्वपूर्ण इसलिए बन गई क्योंकि इसी तारीख को इफ़्फ़न के पिता की बदली मुरादाबाद हो गई। उनका यह स्थानांतरण इफ़्फ़न की दादी के मरने के थोड़े दिन बाद ही हुआ था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. (क) टोपी एक मेधावी छात्र था परंतु उसका नवीं कक्षा में दो बार फेल होने का मुख्य कारण था—टोपी के प्रति परिवारवालों का रूखा और पराया व्यवहार। दूसरा कारण था—परीक्षा के समय टायफ़ाइड बुखार का होना। टोपी के परिवार के छोटे से बड़े सदस्य तक, कोई भी उन्हें पढ़ने का अवसर नहीं देता और हरदम काम में लगाए रहता।

(ख) एक ही कक्षा में दो साल बैठने पर उन्हें कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा किया गया अपमान और अध्यापकों की उपेक्षा का सामना करना पड़ा। कक्षा के विद्यार्थी उन्हें अनेक प्रकार से अपमानित करते जिन्हें देख टोपी का मन पीड़ित और आहत हो उठता।

उत्तर 2. हम इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि बच्चे प्यार के भूखे होते हैं। यह बात इफ़्फ़न और उसकी दादी के बीच स्थापित स्नेह सिद्ध करता है। यद्यपि इफ़्फ़न के प्रति उसके अब्बू, अम्मी, बाजी सबका स्नेह था परंतु जो आत्मीय स्नेह इफ़्फ़न की दादी से मिलता था वह और किसी से नहीं। इफ़्फ़न को कभी–कभार अब्बू या अम्मी से डाँट भी पड़ी हो, बाजी ने भी कभी डाँटा हो, परंतु दादी ने इफ़्फ़न को कभी नहीं डाँटा और उनका आत्मीय स्नेह ही इफ़्फ़न के लिए डाँट का काम कर जाता था। इसीलिए इफ़्फ़न दादी से बहुत स्नेह और आदर करता था।

उत्तर 3. यह सत्य है कि कुछ बच्चे अपने माता–पिता के पद और हैसियत के कारण ज़्यादा घमंडी और उद्दंड हो जाते हैं जिससे वह मानवता से दूर होते जाते हैं। यह बात प्रस्तुत पाठ 'टोपी शुक्ला' में इफ़्फ़न के पिता के तबादले के बाद आए नये कलेक्टर हरिनाम सिंह के लड़कों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इनके बच्चे इतने अहंकारी और उद्दंड हो गए हैं कि टोपी के बंगले में चले जाने के कारण पिता के पद के घमंड में चूर बच्चे बिना सोचे–समझे अपने पालतू कुत्ते को उस पर सुसकार देते हैं जिससे टोपी को पेट में सात सुईयाँ लगवानी पड़ी। हमारा सुझाव है कि अधिकारियों को अपने बच्चों को सुसंस्कार देना चाहिए और पद की गंभीरता से परिचित कराना चाहिए।

उत्तर 4. टोपी और इफ़्फ़न की दादी का धर्म अलग–अलग है। टोपी हिंदू परिवार का लड़का है और दादी एक कट्टर मुसलमान मौलवी की बेगम हैं। दोनों में धार्मिक अंतर होते हुए भी वे एक अव्यक्त और अनजान मानवीय भावनाओं से जुड़े हैं। दोनों ही अपने घरों में उपेक्षित सदस्य हैं। जब दोनों पहली बार मिलते हैं तो टोपी को दादी की भाषा अपनी भाषा के समान लगती है और वह इफ़्फ़न की दादी की ओर आकर्षित हो जाता है। टोपी की उपेक्षित आत्मा को जैसे वहीं अवलंब मिल गया हो। टोपी और इफ़्फ़न की दादी एक अटूट स्नेह के बंधन में बँध गए हों। टोपी को इफ़्फ़न की दादी और अपनी दादी से तुलना करने पर कहीं भी समानता नहीं दिखाई देती। वह अपने बाल मन में इफ़्फ़न की दादी से अपनी दादी को बदलने की बात भी सोचता है।

उत्तर 5. 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी उर्फ़ बलभद्र शुक्ल एक ऐसा पात्र है जिसे पूरे पाठ में किसी से आत्मीयता नहीं मिली है। उसे अपने माता–पिता, दादी एवं भाइयों से कभी वह प्यार नहीं मिल सका है जिसकी एक बाल मन को आवश्यकता होती है। अंततः उसे एक दिन अपने दोस्त इफ़्फ़न की दादी से मुलाकात होती है और वह उनकी आत्मीयता में बंध जाता है।
दूसरा अपनापन उसे घर की नौकरानी सीता से मिलता है। घर में उसकी भी स्थिति टोपी की भांति है। उसे कोई भी डाँट

लेता है, जैसे घर का प्रत्येक सदस्य टोपी को डाँटता है और उपेक्षित करता है। मानवीय मूल्यों के जीवित रहने पर इस प्रकार का अपनापन आज भी प्राप्त करना संभव है।

उत्तर 6. क्योंकि इफ़्फ़न की दादी एक ज़मींदार परिवार से ब्याह कर मौलवी परिवार में आई थीं वह भी लखनऊ में। वे लखनऊ की तहज़ीब में पूरी न तो घुल-मिल पाई और न ही अपनी आदतों में परिवर्तन कर पाईं। इसका कारण था—परिवार का कट्टर मुस्लिम होना। यही कारण था कि दादी बेटे की शादी में गाना-बजाना नहीं कर पाईं जैसा कि ज़मींदार पिता के घर देखा था। इसका कारण था मौलवी के घर शादी-ब्याह में गाना-बजाना न करने का नियम, और वह इस नियम का उल्लंघन कैसे कर सकती थीं। परंतु जब इफ़्फ़न का जन्म हुआ तो इन्होंने अपने मन की इच्छा पूरी कर ली, जी भर कर जश्न मनाया।

उत्तर 7. टोपी के कक्षा 9 में दो बार अनुत्तीर्ण होने के बाद उसके असफल होने के कारणों पर ध्यान दिए बिना उसे अपने घर के सदस्यों के साथ-साथ स्कूल में सहपाठियों और शिक्षकों की उपेक्षा, तिरस्कार का जो सामना करना पड़ा वह अनुचित और निंदनीय है। इस प्रकार की परिस्थिति से उत्पन्न होने पर ऐसे विद्यार्थियों को समुचित अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे वे अपनी प्रतिभा को पुनर्जागृत कर सकें। उन्हें हतोत्साहित और तिरस्कृत नहीं करना चाहिए। शिक्षा-प्रणाली में ऐसे सुधार लाए जाने चाहिए जिसमें शिक्षा परीक्षा पर आधारित न होकर दक्षता और योग्यता पर आधारित हो।

उत्तर 8. टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात इसलिए कही क्योंकि इफ़्फ़न की दादी टोपी से बहुत स्नेह रखती थीं। उसका उनसे आत्मीय नाता जुड़ गया था। जबकि टोपी की दादी उसे हमेशा उपेक्षित और तिरस्कृत करती रहती थीं। उनमें मानवता का अभाव था, वे प्रेम शून्य थीं। उनमें मानवता से अधिक कट्टरता की अधिकता थी। इफ़्फ़न की दादी इन कुरीतियों से ऊपर उठकर मानवता और प्रेम में विश्वास करती थीं। इसीलिए टोपी इफ़्फ़न की दादी से अपनी दादी को बदलना चाहता था।